लेखन

अनुच्छेद-लेखन

अनुच्छेद-लेखन

हिंदी में अनुच्छेद शब्द का प्रयोग अंग्रेज़ी के 'paragraph' शब्द के पर्याय के रूप में किया जाता है। इसके अंतर्गत केवल किसी एक भाव अथवा विचार की पूर्ण, किंतु संक्षिप्त अभिव्यक्ति की जाती है। इसमें निबंध की तरह संबंधित विषय के विभिन्न पहलुओं पर विचार न करके उसके किसी एक पहलू का ही संक्षिप्त वर्णन किया जाता है। यह वर्णन अत्यंत सारगर्भित होता है। एक सामान्य अनुच्छेद आकार में 10-12 पंक्ति अथवा 80-100 शब्दों का होता है।

अनुच्छेद की विशेषताएँ

एक अनुच्छेद की निम्नलिखित मुख्य विशेषताएँ होती है–

(क) अनुच्छेद के वाक्य पूर्ण, एक-दूसरे से जुड़े हुए और एक ही भाव अथवा विचार के वाहक होती हैं।

(ख) भाषा विषय के अनुरूप भावात्मक, ओजस्वी और प्रवाहपूर्ण होती है।

(ग) अनुच्छेद में कथनों एवं तथ्यों का अनावश्यक विस्तार नहीं होता और न ही उनकी पुनरावृत्ति होती है।

(घ) भाषा और विचारों की स्पष्टता अनुच्छेद का सर्वप्रमुख गुण होती है।

(ङ) रोचकता भी अनुच्छेद का अनिवार्य गुण है।

(च) अनुच्छेद कल्पनात्मक न होकर तथ्यात्मक अधिक होता है। मगर विषय के अनुरूप उसमें यथावश्यक कल्पना का समावेश भी किया जा सकता है।

अनुच्छेद के प्रकार

अनुच्छेद निबंध का महत्त्वपूर्ण अंग है। निबंध मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं; उसी के अनुसार अनुच्छेद के भी चार मुख्य भेद होते हैं–

(क) वर्णनात्मक–इसमें किसी स्थान, दृश्य, वस्तु या व्यक्ति का तथ्यों के आधार पर वर्णन किया जाता है; जैसे–कोई अविस्मरणीय घटना आदि।

(ख) विचारात्मक–इसमें किसी भी दिए गए विषय पर अपना मत अर्थात् विचार व्यक्त करने होते हैं; जैसे–परिश्रम का महत्त्व आदि।

(ग) भावात्मक–इसमें व्यक्ति दिए गए विषय पर संवेगात्मक रूप से अपने अनुभव, श्रद्धा अथवा मान्यता के अनुसार अपनी सोच को व्यक्त करता है; जैसे– जब मैंने किसी की सहायता की आदि।

(घ) कल्पनात्मक–इसमें व्यक्ति अपनी कल्पना के आधार पर दिए गए विषय पर अपने विचार व्यक्त करता है; जैसे–यदि मैं प्रधानाचार्य होता आदि।

अनुच्छेद-लेखन में ध्यान रखने योग्य मुख्य बातें

अनुच्छेद-लेखन में निम्नलिखित मुख्य बातों का ध्यान रखा जाना अपेक्षित है–

(क) अनुच्छेद लिखते समय भाषा का प्रवाह बना रहना चाहिए तथा भाषा सीधी, सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

(ख) मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों का उचित प्रयोग करना चाहिए।

(ग) शब्द-सीमा का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

(घ) अनुच्छेद लिखते समय भूमिका या उपसंहार नहीं लिखना चाहिए।

(ङ) अनुच्छेद में विषय से संबंधित सभी महत्त्वपूर्ण तथ्यों का समावेश होना चाहिए।

(च) सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि 'अनुच्छेद-लेखन' मात्र एक अनुच्छेद (paragraph) में लिखा जाए। उसे एक से अधिक अनुच्छेदों में कभी नहीं लिखना चाहिए। प्रायः छात्र प्रत्येक संकेत-बिंदु के लिए अलग अनुच्छेद बना देते हैं, जो सब प्रकार से गलत है।

(छ) अनुच्छेद लिखते समय उसकी प्रथम पंक्ति के आरंभ में कुछ स्थान छोड़कर ही लेखन आरंभ करना चाहिए।

(ज) अनुच्छेद-लेखन से पूर्व दिए गए विषय और उसके संकेत-बिंदुओं पर भली प्रकार से विचार कर लेना चाहिए कि किस संकेत-बिंदु के लिए क्या बात लिखनी है।

(झ) अनुच्छेद लिख लेने के बाद उसको दिए गए संकेत-बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए दो-तीन बार पढ़ना चाहिए और उसमें हुई विषय एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का सुधार करना चाहिए।

(ञ) अनुच्छेद में बहुत अधिक काट-छाँट नहीं होनी चाहिए। यदि उसमें काट-छाँट अधिक हो गई है तो साफ़ एवं सुंदर लेख में उसका पुनर्लेखन करना चाहिए।

निर्देश–निम्नलिखित विषयों पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद-लेखन कीजिए–

1. देशप्रेम

संकेत-बिंदु– • जन्मभूमि की महिमा • जन्मभूमि का परोपकारी रूप • देशप्रेम और त्याग की भावना • देश के प्रति कर्तव्य।

जननी और जन्मभूमि की महिमा स्वर्ग से भी बढ़कर है; इसीलिए 'जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कहा गया है। मातृभूमि के अन्न-जल से ही हमारा पोषण होता है। इसकी शीतल, मंद एवं सुगंधित वायु मनुष्य में जीवन का संचार करती है; अतः मातृभूमि के ऋण से उऋण होना असंभव है। देशप्रेम या देशभक्ति की भावना पवित्र सलिला भागीरथी के समान है, जिसमें स्नान करने से शरीर ही नहीं, अपितु मनुष्य की अंतरात्मा भी पवित्र हो जाती है। मातृभूमि की रक्षा तथा उन्नति के लिए अपना तन-मन-धन अर्पित कर देना ही देशप्रेम (देशभक्ति) है। देशहित के लिए सर्वस्व त्याग करने में स्वर्गिक आनंद प्राप्त होता है। देशप्रेम का भाव आने पर व्यक्ति 'स्व' की संकुचित परिधि से बाहर निकलकर सेवा, त्याग, कर्तव्यपरायणता और परोपकार की मूर्ति बन जाता है। उसकी गाथाएँ इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो जाती हैं। राष्ट्र पर आई विपत्ति में प्राणोत्सर्ग करना ही राष्ट्रभक्ति नहीं है, बल्कि हमारे दिन-प्रतिदिन के कार्य भी देशभक्ति की कसौटी होते हैं। भ्रष्टाचार, आतंकवाद, मिलावट, तस्करी, निर्धनों का शोषण, रिश्वतखोरी, सांप्रदायिकता, भाषायी वैमनस्य एवं प्रांतीयता की भावना, भाई-भतीजावाद, हड़ताल आदि देशद्रोह के कार्य हैं। हम अपने स्तर पर इनको समाप्त करने के प्रयत्न करके भी अपने देशप्रेम को प्रमाणित कर सकते हैं। अधिकांश लोग केवल अपने वचनों या भाषणों में स्वदेश-प्रेम दर्शाते हैं, कर्मों में नहीं। वास्तव में अपने देश की सुरक्षा को सुनिश्चित करना एवं उसमें व्याप्त सभी कुरीतियों को समाप्त करने का संकल्प लेना ही मनुष्य का सबसे महत्त्वपूर्ण तथा पुनीत कर्तव्य है। प्रत्येक मनुष्य को तन-मन-धन से इस कर्तव्य का निर्वाह करना चाहिए।

2. मेरा देश महान

संकेत-बिंदु– • विश्व में स्थान • अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य • अनेक धर्मों और संस्कृतियों का संगम • अनेकता में एकता।

आज भारत का विश्व में प्रमुख स्थान है। वह विश्व की महान शक्ति के रूप में उभर रहा है। आज विश्व के सभी विकसित और विकासशील देश आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सामरिक आदि सभी क्षेत्रों में भारत की ओर आशापूर्ण दृष्टि से देखते हैं। यह मेरे देश भारत की महानता है

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कि उसने किसी को कभी निराश नहीं किया है। विश्व में शांति की स्थापना, आतंकवाद एवं प्रदूषण की समस्या के निदान के लिए भारत ने सदैव अपनी सक्रिय भूमिका निभाई है। मेरे देश का प्राकृतिक सौंदर्य बड़ा अनुपम है। कश्मीर की घाटी इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए कश्मीर को पृथ्वी का स्वर्ग कहा जाता है। हमारे देश को गंगा, यमुना, कावेरी जैसी पवित्र नदियाँ पावन करती हैं। हमारे देश में अनेक धर्मों एवं संस्कृतियों का भी अद्भुत संगम है। यहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी आदि सभी धर्मों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। यहाँ सर्वत्र 'अनेकता में एकता' दिखाई देती है। सभी धर्मों को एकसमान दृष्टि से देखते हुए सर्वधर्म समभाव और 'विश्व-बंधुत्व' की ऐसी भावना विश्व की किसी अन्य संस्कृति में देखने को नहीं मिलती है। इसीलिए महान शायर इकबाल ने भी कहा है-

'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा,
हम बुलबुले हैं इसके, ये गुलिस्ताँ हमारा।'

निस्संदेह मेरा देश पूरे संसार में सबसे अच्छा और महान है। आज ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, साहित्य तथा कला के क्षेत्र में मेरा देश संपूर्ण विश्व में अग्रणी है।

3. समय का सदुपयोग

संकेत-बिंदु– • समय का महत्त्व • समय की सही पहचान होना • सही अवसर की उपयोगिता • समय-पालन : जीवन का मूलमंत्र।

विधाता की सृष्टि में समय सबसे मूल्यवान् और गतिशील वस्तु है। यह मनुष्य को ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है। समय का ही दूसरा नाम अवसर है। समय अथवा अवसर निरंतर गतिशील है, इसलिए यह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, वरन् अपनी प्रगति चाहने वाले हर व्यक्ति को उचित समय की प्रतीक्षा करनी होती है। मनुष्य उपयुक्त अवसर का लाभ उठाकर अनमोल खजाना पा सकता है। इसलिए कहा जाता है कि कमान से छूटा तीर, मुँह से निकले शब्द और हाथ से निकला हुआ समय कभी वापस नहीं आता। सही समय वही होता है, जब जिस समय किया गया कार्य सर्वाधिक उपयुक्त परिणाम देता है। मगर सही समय की पहचान सबके बस की बात नहीं। सही समय की पहचान के लिए व्यक्ति में विवेक का होना आवश्यक है। इसलिए अपने जीवन में आए उपयुक्त समय को यों ही व्यर्थ की बातों, मेल-मुलाकातों या सैर-सपाटों में गँवा देना विधाता के वरदान का अपमान करना ही नहीं, अपितु अपने अज्ञान और अविवेक को प्रकट करना है। जीवन का एक-एक पल अनमोल है, समय को पहचानने वाला व्यक्ति समय को अपना अनुचर बना लेता है। उसका सदुपयोग करने वाला व्यक्ति अपने जीवन को सब प्रकार से सफल, सार्थक और गरिमामय बना लेता है, जबकि समय को व्यर्थ गँवा देने वाले के हाथ पश्चात्ताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं लगता। समय के अनंत साम्राज्य में अमीर-गरीब, छोटे-बड़े, ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं है। जो समय को सम्मान देता है, उसके महत्त्व को समझता है; समय भी उसका सम्मान करता हुआ उसे सफलता का पुरस्कार देता है। इसलिए समयपालन को जीवन का मूलमंत्र कहा जाता है। कहा भी जाता है कि धन को महत्त्व देने वाला निंदा का पात्र हो सकता है, किंतु समय को महत्त्व देने वाला सदैव प्रशंसनीय होता है। इसीलिए महापुरुष कहते हैं कि धन को दोनों हाथों से लुटाइए, किंतु समय को दोनों हाथों में थामकर रखिए और जीवन में उसका सदुपयोग कीजिए।

4. नर हो, न निराश करो मन को

संकेत-बिंदु– • सूक्ति का अर्थ • निराशा : दुर्बलता का चिह्न • निराशा में डूबना शोभनीय नहीं • मन हारा तो सब हारे।

'नर हो, न निराश करो मन को' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध काव्य-पंक्ति है। गुप्त जी का मानना है कि मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है और उसी के सुख-साधनों के रूप में संसार की अन्य वस्तुओं की रचना की गई है; अतः मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिए। हमें विपत्ति की घड़ी में भी हिम्मत से काम लेना चाहिए। उनका कहना है कि प्रभु ने हमें दो हाथ दिए हैं। इनकी सहायता से हम कठिन परिश्रम करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। इस संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। मन में निराशा का भाव लाना दुर्बलता का चिह्न है। विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब नेपोलियन ने कहा 'आल्प्स नहीं है' तो उसकी सेना आल्प्स पर्वत को आनन-फानन में पार कर गई। महाराणा प्रताप भी अंतिम क्षण तक संघर्ष करते रहे, उन्होंने अंत तक पराजय स्वीकार नहीं की। निराशा की प्रवृत्ति पतनोन्मुखी है। यही कारण है कि मन जब निराश हो जाता है, तब व्यक्ति की दृष्टि नकारात्मक हो जाती है। इसलिए मनुष्य को कभी भी अपने मन में निराशा का भाव नहीं आने देना चाहिए। मनुष्य के लिए निराशा में डूबना शोभनीय नहीं है। उसे अपने मन में सदैव आशा की ज्योति जलाए रखनी चाहिए, उसी के सहारे मनुष्य असंभव से दिखने वाले कार्यों को करने में सफल हो जाता है, यदि मनुष्य का मन हार गया तो वह सबकुछ खो बैठता है। निराशा अकर्मण्यता को जन्म देती है। इस मनःस्थिति में व्यक्ति हताश होकर स्वयं को भाग्य के ऊपर छोड़कर निष्क्रिय होकर बैठ जाता है। इस प्रकार वह निरंतर असफल होता हुआ जीवन से ही निराश हो जाता है, जो सर्वथा अनुचित है; अतः मनुष्य को किसी भी परिस्थिति में निराश नहीं होना चाहिए।

5. जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन

संकेत-बिंदु– • संगति का महत्त्व • सत्संगति से निर्मल चरित्र का निर्माण • ऐतिहासिक उदाहरण • कुसंगति का प्रभाव।

यह शाश्वत सत्य है कि संगति अपना असर अवश्य दिखाती है। सत्संगति यानी श्रेष्ठ पुरुषों की संगति से मनुष्य में अपने आप अच्छे गुणों का उदय और विकास होता है। उसके दुर्गुण नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार पारस के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है, उसी प्रकार सत्संगति के प्रभाव से मनुष्य महानता के उच्च-आसन पर आसीन हो जाता है। उसका चरित्र निर्मल और पवित्र हो जाता है। सभी जानते हैं कि बुद्ध की संगति से अंगुलिमाल मानवता की राह पर आ गया। गुरु रामदास की संगति से ही शिवाजी के चरित्र का निर्माण हुआ। सत्संगति से मनुष्य में धैर्य, साहस, उदारता और सहिष्णुता का संचार होता है। सत्संगति कठिन परिस्थितियों में भी मनुष्य में आशा का संचार करती है। दूसरी ओर कुसंगति मनुष्य को पतन की ओर धकेलती है। कुसंगति ऐसा ज़हर है, जो श्रेष्ठ व्यक्ति को भी क्षुद्र बना देती है। काजल की कोठरी में जाने पर काला धब्बा तो लगेगा ही। कुसंगति से मनुष्य में दुराचार, स्वार्थ और दूसरी बुरी आदतें पैदा होती हैं। यह संगति का ही प्रभाव है कि स्वाति नक्षत्र की जो बूँद केले के पत्ते पर पड़ने से कपूर बनती है, वही साँप के मुख में पड़कर विष बन जाती है। इसीलिए कहा गया है-

कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।।

6. सच्चा मित्र/विपत्ति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत

संकेत-बिंदु– • सच्चे मित्र से आशय • सच्चा सहायक • सच्चे मित्रों के उदाहरण • सच्चा मित्र : सफल जीवन का आधार।

सच्चे मित्र से आशय उस व्यक्ति से है, जो जीवनभर हमारे आत्मोन्नयन में सहायक सिद्ध हो। जो हमारे दोषों को दूसरों से छिपाए और उन्हें दूर करने में औषधि की तरह काम करे। जो हमारे गुणों को सब जगह फैलाकर हमारी यश-वृद्धि करे। माता की तरह क्षमाशील और धैर्यवान् हो तथा गुरु की तरह कठोर और मार्गदर्शक हो। पंचतंत्र के लेखक विष्णु शर्मा ने सच्चे मित्र को परिभाषित करते हुए लिखा है-''जो व्यक्ति न्यायालय, श्मशान और विपत्ति के समय साथ दे, वही सच्चा मित्र है।'' रहीमदास ने भी सच्चे मित्र का लक्षण बताते हुए लिखा है- 'विपत्ति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।'

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

सच्चा मित्र जीवन के श्रेष्ठ आदर्शों से पूर्ण होता है। वह विचारों की स्वतंत्रता का सम्मान करता है, संघर्ष में साथ देकर सदा हमारा उत्साहवर्द्धन करता है। जीवन में यदि कुछ पाना कठिन है तो वह सच्चा मित्र ही है। जिसको जीवन में सच्चा मित्र मिल गया, मानो उसने दुनिया का सबसे बड़ा खजाना पा लिया। अपनी सूझ-बूझ, विवेक और गुण-दोषों की परख के आधार पर सच्चे मित्र को प्राप्तकर व्यक्ति का जीवन एक अनोखे आनंद से भर उठता है। अर्जुन ने श्रीकृष्ण को मित्र बनाकर महाभारत का युद्ध जीता तो सुग्रीव ने राम की मैत्री के सहारे बालि के अत्याचारों से मुक्ति पाई। सचमुच, सच्चा मित्र जीवन की सफलता की कुंजी होता है। किसी ने ठीक ही कहा है-"सच्चा प्रेम दुर्लभ है तो सच्ची मित्रता उससे भी कहीं अधिक दुर्लभ है।"

7. करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान

संकेत-बिंदु– • लोकोक्ति का अर्थ • अभ्यास ही मनुष्य की सफलता का मूलमंत्र • अभ्यास में निरंतरता आवश्यक • लगन और परिश्रम से सफलता-प्राप्ति।

निरंतर अभ्यास और परिश्रम से मंदबुद्धि भी विद्वान बन जाता है। रस्सी की रगड़ से यदि पत्थर पर भी निशान बन सकता है तो अभ्यास व परिश्रम करने से जड़मति (मूर्ख) सुजान (विद्वान) क्यों नहीं बन सकता। किसी भी रचनात्मक कार्य को करने के लिए प्रतिभा के साथ-साथ निरंतर अभ्यास की भी आवश्यकता होती है; क्योंकि अभ्यास ही मनुष्य की सफलता का मूलमंत्र है। इस संसार में अभ्यास करने वाला व्यक्ति ही सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता है। प्रसिद्ध संस्कृत वैयाकरण वरदराज के जीवन में यह सूक्ति पूरी तरह चरितार्थ हुई। बचपन में वरदराज मंदबुद्धि बालक थे और इसी कारण आचार्य ने उन्हें गुरुकुल से निकाल दिया था। एक दिन वरदराज ने कुएँ पर रस्सी की रगड़ से पत्थर पर पड़े निशान देखकर दृढ़निश्चय किया कि वह निरंतर अभ्यास से अपनी कठोर जड़ता का उसी प्रकार विनाश करेंगे, जिस प्रकार रस्सी ने कठोर पत्थर को घिसकर उस पर अपने निशान बना दिए हैं। इसी निश्चय के साथ वह गुरुकुल लौट गए। उनका निरंतर अभ्यास, लगन और परिश्रम रंग लाया और वरदराज ने ज्ञान अर्जितकर एक महान वैयाकरण के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। इसके विपरीत जो व्यक्ति परिश्रम से बचता है, निरंतर अभ्यास नहीं करता, वह जीवन में उन्नति के शिखर तक कभी नहीं पहुँच पाता। इसलिए अभ्यास में निरंतरता आवश्यक है। चाहे महान खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर हो या ऐतिहासिक पात्र एकलव्य, दोनों ने निरंतर अभ्यास के बल पर ही अपने लक्ष्य की बुलंदियों को छुआ है; अतः लगन और कठोर परिश्रम के साथ निरंतर अभ्यास से ही जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

8. ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय

संकेत-बिंदु– • वाणी श्रेष्ठतम वरदान • मधुर वाणी से लाभ • कटु वचनों का कुप्रभाव • निष्कर्ष।

वाणी मनुष्य को ईश्वर द्वारा दिया गया श्रेष्ठतम वरदान है। यह वाणी ही है, जो संसार में मनुष्यों को पशुओं से अलग करती है तथा इस दुनिया में मनुष्य के मित्र-शत्रु बनाती है, मान-अपमान कराती है। मधुर वाणी के अभाव में रूप, विद्या, धन आदि अन्य गुण भी प्रतिष्ठा नहीं पाते। कोयल और कौआ देखने में बिलकुल एकरूप होते हैं, किंतु कोयल मधुर वाणी के कारण सर्वत्र समादृत और कौआ अपनी वाणी की कर्कशता के कारण अनादृत होता है। व्यवहार में कटु शब्द लोगों के मनों में इतनी वैमनस्यता घोलते हैं, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। कटु शब्द व्यक्ति के मर्म को इतना आहत करते हैं कि उसका उपचार किया जाना संभव नहीं। अस्त्र के गहरे-से-गहरे घाव भर जाते हैं, परंतु वचनों से हुआ छोटा-सा घाव भी नहीं भरता; अतः प्रत्येक व्यक्ति को बोलने में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। व्यक्ति को अपना घमंड त्याग देना चाहिए; क्योंकि घमंड और मीठी वाणी उसी प्रकार एकसाथ नहीं रह सकते, जिस प्रकार एक म्यान में दो तलवारें रखना संभव नहीं है। सभी श्रेष्ठजनों का यही अनुभव है कि मन के अभिमान को त्यागकर मीठी वाणी का ही प्रयोग करना चाहिए। इसीलिए कबीरदास जी ने भी अभिमान को त्यागकर सबके मनों को शीतल करने वाली वाणी बोलने का उपदेश दिया है-

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय।।

9. समरथ को नहीं दोष गुसाईं

संकेत-बिंदु– • सूक्ति का अर्थ • सामर्थ्यवान् पर कोई अँगुली नहीं उठाता • सामर्थ्य के साधन • सामर्थ्य के समुचित प्रयोग।

'समरथ को नहीं दोष गुसाईं' सूक्ति का अर्थ है-समर्थ अर्थात् शक्तिशाली को कोई भी दोष नहीं देते। कहने का आशय यह है कि सामर्थ्यवान् अथवा शक्तिशाली व्यक्ति के अनुचित कार्यों पर भी कोई अँगुली उठाने का साहस नहीं करता है, उन्हें सताने की बात तो कोई सोच भी नहीं सकता। व्यावहारिक जीवन में भी हम देखते हैं कि हवा दीपक की दुर्बल ज्योति को बुझा देती है, जबकि सामर्थ्यवान् अग्नि की ज्वाला को भड़काकर उसके तेज़ में वृद्धि करती है। सामर्थ्य व्यक्ति को प्रभुता, सत्ता, धन-दौलत तथा व्यक्तियों के समर्थन से प्राप्त होता है; इसलिए हमें भी शिक्षा और मेहनत द्वारा अपने संस्कार और मर्यादा को ध्यान में रखते हुए स्वयं को सामर्थ्यवान् अथवा शक्तिशाली बनाने का हरसंभव प्रयास करना चाहिए। प्रभुता और शक्ति अर्जित करने के लिए हमारे अंदर निरंतर प्रयत्न, मेहनत, ईमानदारी, निष्ठा, लगन आदि के साथ-साथ ज्ञान और तेज़ का भी होना आवश्यक है। संसार में सामर्थ्यवान् और शक्तिशाली की सभी सहायता करते हैं, निर्बल की सहायता को कोई आगे नहीं आता। कहा भी गया है-

सबै सहायक सबल को कोउ न निबल सहाय।

व्यक्ति को सामर्थ्यवान् तो अवश्य होना चाहिए, किंतु कभी भी उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। सामर्थ्य के सदुपयोग से ही मानवता की रक्षा हो सकती है, दुरुपयोग से तो केवल विनाश संभव है; अतः हमें सामर्थ्यवान् होने पर उदारता का परिचय अवश्य देना चाहिए।

10. सफलता का मूलमंत्र : परिश्रम

संकेत-बिंदु– • मानव-जीवन में श्रम का महत्त्व • सारी सृष्टि कर्मरत •ईश्वर की सच्ची उपासना • कर्म बिना कुछ नहीं।

मानव-जीवन में परिश्रम की महती उपयोगिता है। परिश्रम से ही मनुष्य ने सभी उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। इसी कारण स्वामी विवेकानंद ने सोई हुई भारतीय जनता को जगाते हुए कहा था-"उठो, जागो और लक्ष्य-प्राप्ति तक मत रुको।" पृथ्वी के रूप को सुंदर बनाने में प्रकृति का कण-कण अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। न केवल बुद्धिजीवी मानव, अपितु एक साधारण चींटी भी निरंतर कर्मरत रहकर अंत में अपना लक्ष्य प्राप्त कर ही लेती है। परिश्रम के द्वारा ही सफलता प्राप्त होती है। संसार में जितने महापुरुष हुए हैं, उनकी महानता का कारण उनका अथक परिश्रम और अनवरत संघर्ष ही था। किसी भी महान राष्ट्र का निर्माण स्वप्नों के ताने-बाने से नहीं, अपितु लहू और लौह से होता है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा था -'मनुष्य का यह शरीर एक क्षेत्र (खेत) के समान है। बिना कर्म किए उससे कुछ भी फल प्राप्त नहीं हो सकता।' परिश्रम की महिमा का महापुरुषों ने भी अपने-अपने ढंग से गुणगान किया है और इसे ही ईश्वर की सच्ची उपासना कहा है। परिश्रम करने वाला व्यक्ति संघर्ष और अभावों से नहीं घबराता। उसका तन-मन एकदम सात्त्विक और पवित्र होता है। संसार के बड़े-से-बड़े आकर्षण या सुख-सुविधाएँ उसे अपनी ओर आकर्षित करने में असमर्थ होते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वप्नों की दुनिया में नहीं, अपितु जगत् की कटु सच्चाइयों पर विश्वास करते हैं और अपने पौरुष व धैर्य के बल पर सफलता प्राप्त करते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

11. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

संकेत-बिंदु– • मन को बाँधना ही मन को जीतना है • मन चंगा तो कठौती में गंगा • मन के सशक्त होने पर व्यक्ति का सशक्त होना • मन की दृढ़ता ही सफलता का साधन।

मानव का मन उसके जीवन का सूत्रधार और संचालक है। मनुष्य का मन अपने आप में एक ब्रह्मांड है। जो कुछ बाहरी विश्व में घटित होता है, वही उसके मन के भीतर भी होता है। मन की शक्ति अपार है। मन बड़ा चंचल होता है। मन को बाँधना ही मन को जीतना है। इसे जीत लेने में ही विश्वविजय निहित है। आप कितने भी असमर्थ हों, यदि मन में उमंग और उत्साह है तो सारी असमर्थता समर्थता में बदल जाएगी। राम, कृष्ण, ईसा, बुद्ध, नानक, कबीर सभी ने अपने मन को जीता और जग को जीत लिया। अर्थात् सारे संसार के प्रिय हो गए। मन की जीत के लिए मन का पवित्र होना आवश्यक है। यदि मन पवित्र है तो कोई भी जप-तप करने की आवश्यकता नहीं है, इसीलिए कहा गया है–मन चंगा तो कठौती में गंगा। दूसरी ओर जिनका मन हार जाता है, जिनके विचार दृढ़ नहीं रह पाते, जो अपने संकल्प पर स्थिर नहीं होते, जो तनिक से दुःख से दुःखी और सुख से सुखी हो जाया करते हैं, वे संसार-सागर की लहरों में तिनके के समान विलीन हो जाते हैं। मन के सशक्त होने पर ही सारा शरीर सशक्त हो सकता है। मन कमज़ोर तो शरीर भी कमज़ोर और निष्क्रिय। मन हमारा मित्र और शत्रु दोनों है। मन के धनी व्यक्ति ही सागर से मोती निकाल लाते हैं, हिमशिखरों पर चढ़कर अपनी बहादुरी का झंडा गाड़ते हैं। मन के हार जाने पर साहस टूट जाता है और मनुष्य को विफलता का मुँह देखना पड़ता है; अतः यह सत्य है कि 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'।

12. विद्यार्थी और अनुशासन

संकेत-बिंदु– • अनुशासन का आशय • विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व • आंतरिक तथा बाहरी अनुशासन में अंतर • विद्याग्रहण त्याग का मार्ग।

विद्यार्थी का अर्थ है विद्या को ग्रहण करने वाला तथा अनुशासन का अर्थ है नियमों के अनुसार स्वयं को नियंत्रण में रखना। विद्यार्थी वही है, जो विद्यालय के नियमों में बँधकर ज्ञान-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होता है। इसलिए विद्यार्थियों का अनुशासन में रहना परमावश्यक है। विद्यार्थी को संयमी जीवन जीते हुए अपना संपूर्ण ध्यान विद्याग्रहण करने पर केंद्रित करना चाहिए। विद्यार्थियों को अपना मार्ग स्वयं चुनना चाहिए। एक ओर सुख है, जो उसे स्वयं में उलझाकर पतन के गर्त में डालकर उसके जीवन में अज्ञान का अंधकार फैला देगा, दूसरी ओर ज्ञान मार्ग है, जो उसे सफलता दिलाकर उसके जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। उसके भावी जीवन को सुखमय बनाता है। जीवन में वही विद्यार्थी सफल होता है, जो ज्ञान-मार्ग को चुनता है। आंतरिक अनुशासन बाहरी अनुशासन से अधिक प्रभावशाली होता है। जो व्यक्ति आंतरिक अनुशासन में रहने का अभ्यस्त होता है, उसे बाहरी अनुशासन का पालन करने में कोई समस्या नहीं आती है। विद्यार्थियों के संदर्भ में तो यह बात और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है; क्योंकि किशोरावस्था में ही मन सर्वाधिक चंचल होता है। वास्तव में विद्याग्रहण का मार्ग त्याग और तपस्या का मार्ग है। इसलिए कहा भी गया है-

सुखार्थी वा त्यजेत् विद्या, विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या, विद्यार्थिनः कुतो सुखम्।।

13. नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

संकेत-बिंदु– • मानवीय मूल्यों का सम्मान आवश्यक • वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में नैतिकता का अभाव • चरित्र-निर्माण के लिए आवश्यक • नैतिक शिक्षा का परिणाम।

नैतिकता का अर्थ है–'मानवीय मूल्यों का सम्मान'/जब तक मानवीय मूल्यों की अवहेलना की जाती रहेगी, तब तक एक स्वस्थ समाज का गठन संभव नहीं है; अतः विद्यालयों में शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी छात्रों को दी जानी चाहिए। नैतिक शिक्षा के बिना व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। वास्तव में हमारी संपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था नैतिक मूल्यों पर ही आधारित होनी चाहिए, किंतु हमारी वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में सबसे बड़ी कमी यही है कि इसमें नैतिकता का अभाव है। व्यक्ति तथा राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण करने के लिए नैतिक शिक्षा प्राथमिक स्तर से ही अनिवार्य होनी चाहिए। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का उद्देश्य अन्य पाठ्यक्रमों के समान छात्रों को विषय का केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त कराने या उपदेश देने मात्र से पूर्ण नहीं हो सकता। यह शिक्षा तभी प्रभावशाली होगी, जब यह शिक्षा 'शिक्षक' के चरित्र में प्रत्यक्ष रूप से चरितार्थ होती दिखाई देगी। जब शिक्षक अपने जीवन में नैतिक गुणों को धारण करेंगे तो उसका छात्रों पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। आज के दौर में जब हमारे परंपरागत मानवीय जीवन-मूल्यों का ह्रास तथा उनके स्थान पर भौतिकवादी मूल्यों की स्थापना हो रही है, तब केवल नैतिक शिक्षा ही विद्यार्थियों को सन्मार्ग पर चलने तथा अच्छे-बुरे को पहचानने का विवेक दे सकती है। नैतिकता से विमुख होकर कोई सभ्यता स्थायी नहीं रह सकती। उसके स्थायित्व के लिए नैतिकता अनिवार्य शर्त है।

14. प्रदूषण

संकेत-बिंदु– • प्रदूषण का अर्थ • प्रदूषण के प्रकार • प्रदूषण के दुष्प्रभाव • प्रदूषण को दूर करने के उपाय।

हमारी आधुनिक जीवन-शैली ने हमारे जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न की हैं। इनमें सबसे बड़ी (भयावह) समस्या 'प्रदूषण' की है। प्रदूषण का अर्थ है- 'दूषित होना'। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि (आग) और आकाश इन पाँचों तत्त्वों से बना संसार दूषित हो रहा है और इसे दूषित करने वाला है–मनुष्य। प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है। इस घनी आबादी के लिए वन काटकर नगर बसाए जा रहे हैं। इन नगरों का प्रदूषित जल बहाने के लिए बड़ी-बड़ी नालियाँ और नाले बनाए जा रहे हैं, जिनकी गंदगी पवित्र नदियों में गिराई जा रही है। इस प्रकार नदियों का जल भी प्रदूषित हो गया है। खुली भूमि में कूड़ा-कचरा डालने, खेती में कीटनाशक दवाइयों और रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के कारण भूमि दूषित हो रही है। कारखानों, मोटर-गाड़ियों का शोर व धुआँ वायु को दूषित कर रहा है। इस प्रकार भूमि-प्रदूषण, जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण ये सभी मिलकर मनुष्य को हानि पहुँचा रहे हैं। इन प्रदूषणों से मलेरिया, हैजा, कैंसर, पेट-संबंधी रोग, बहरापन, अंधापन, थकावट, दस्त, तपेदिक और चिड़चिड़ापन आदि रोग फैल रहे हैं। इस प्रदूषण को हर हाल में रोकना आवश्यक है। इस बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए कल-कारखानों की चिमनियों को ऊँचा किया जाए तथा उनकी सफ़ाई की नियमित व्यवस्था की जाए। कल-कारखाने नगरों से दूर बंजर भूमि पर लगाए जाएँ, जिससे कारखानों से निकलने वाले कचरे के प्रदूषण के प्रभाव से जनता को दूर रखा जा सके। जल-प्रदूषण रोकने के लिए कारखानों से निकले रसायन मिश्रित जल तथा शहरों के गंदे पानी को साफ़ करके नदियों में डाला जाए। ठोस कचरे को नदियों, सागरों में न डालकर उसे नष्ट करने के वैज्ञानिक उपाय खोजे जाएँ। हम प्रकृति से तालमेल बनाए रखें और प्रयास करें कि धरती स्वच्छ तथा हरी-भरी बनी रहे।

15. आतंकवाद

संकेत-बिंदु– • आतंकवाद का स्वरूप • आतंकवाद के प्रमुख कारण • भारत में भयावह स्थिति • विभिन्न क्षेत्र आतंकवाद से प्रभावित।

आतंकवाद कुछ व्यक्तियों द्वारा अपनी स्वार्थपूर्ण आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए बलपूर्वक लोगों को भयभीत करके गैर-कानूनी ढंग से चलाया जाने

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वाला एक हिंसक आंदोलन है। इसके लिए अराजक तत्त्व बम-विस्फोट, विमान-अपहरण, सार्वजनिक स्थलों एवं सशस्त्र बलों पर क्रूर आक्रमण जैसी हिंसात्मक आपराधिक गतिविधियों का सहारा लेते हैं। पिछले कुछ दशकों से जिस समस्या ने विश्व को सर्वाधिक भयभीत किया है, वह आतंकवाद ही है। विश्व के प्रमुख देश–अमेरिका, रूस, भारत, अफगानिस्तान, फ्रांस आदि सभी आतंकवाद की चपेट में हैं। आतंकवाद आज भारत की ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व की समस्या बन चुका है। आतंक का अर्थ होता है–भय। जनता में किसी भी तरह से भय फैलाने वालों को आतंकवादी कहा जाता है। आतंकवाद वास्तव में अतिवाद का दुष्परिणाम है। बेरोज़गारी, अशिक्षा, सामाजिक-आर्थिक विषमताएँ, राजनैतिक स्वार्थ, शक्तिशाली देशों द्वारा निर्बल देशों के प्रति उपेक्षा का व्यवहार, क्षेत्रवाद, धर्मांधता, भाषायी मतभेद, सांस्कृतिक टकराव, प्रशासन की निष्क्रियता, स्वार्थी मनोवृत्ति आदि आतंकवाद के प्रमुख कारण हैं। भारत को जिस प्रकार के आतंकवाद से जूझना पड़ रहा है, वह भयावह और चिंतनीय है। आज कश्मीर में आतंकवाद अपनी चरमसीमा पर है। कश्मीर के साथ-साथ पूर्वोत्तर राज्यों और छत्तीसगढ़ में भी आतंकवादियों ने अपना आतंक फैला रखा है। जहाँ कहीं भी आतंकवादी सक्रिय होते हैं, वहाँ का सामान्य जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। आतंकवाद को समाप्त करने के लिए आज विश्व के सभी देशों को बड़ी मात्रा में धन व्यय करना पड़ रहा है, जिससे वहाँ के विकास कार्यों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

16. बाढ़ : एक प्राकृतिक आपदा

संकेत-बिंदु– • बाढ़ से आशय • बाढ़ आने के कारण • हानि • रोकने के उपाय।

बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है। जब नदियाँ अपने तटों से आगे बढ़कर आस-पास के क्षेत्र में फैल जाती हैं और अपने जल से सबकुछ तहस-नहस कर देती हैं तो इस प्राकृतिक घटना को बाढ़ कहते हैं। बाढ़ का प्राकृतिक कारण है–अतिवृष्टि। लेकिन कुछ मानवकृत कारण भी हैं। इनमें एक कारण है वृक्षों की अंधाधुंध कटाई। वृक्षों के न रहने से वर्षा में आस-पास की मिट्टी कटकर नदियों में चली जाती है, जिससे नदियों का तल उथला (ऊँचा) हो जाता है और वर्षा में उनका पानी किनारों को तोड़कर चारों ओर फैल जाता है। दूसरा कारण नदियों पर बाँध बनाया जाना है। बाँध के जलाशय में जब पानी अधिक हो जाता है तो बाँध की रक्षा के लिए उस पानी को एकसाथ छोड़ दिया जाता है, जिससे बाढ़ आ जाती है। बाढ़ से जन-धन की बहुत हानि होती है। हज़ारों एकड़ फसल नष्ट हो जाती है। मकान नष्ट होने से लोग बेघर हो जाते हैं। बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में भयानक बीमारियाँ फैल जाती हैं, जिससे हज़ारों लोग काल का ग्रास बन जाते हैं। बाढ़ को रोकने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि वृक्षों की कटाई को रोका जाए और अधिक-से-अधिक पेड़ लगाए जाएँ। इसके अलावा नदियों पर अनावश्यक बाँध न बनाए जाएँ।

17. मेरी प्रिय पुस्तक

संकेत-बिंदु– • प्रिय पुस्तक का नाम एवं परिचय • विशेषताएँ • हृदय-ग्राह्यता • श्रेष्ठ ग्रंथ।

मेरी प्रिय पुस्तक है-श्रीरामचरितमानस। महाकवि तुलसीदास की अवधी भाषा में रचित इस महान कृति से प्रत्येक भारतीय परिचित है। इस ग्रंथ में लोकनायक, पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का वर्णन महाकवि तुलसीदास ने बहुत ही बारीकी से किया है। इसमें तत्कालीन समाज की वास्तविक स्थिति का निरूपण किया गया है। यह कृति अपनी समन्वय की भावना के लिए जानी जाती है, इसमें अमीर-गरीब, मित्र-शत्रु, शूद्र-ब्राह्मण, जाति-धर्म इत्यादि सभी में समन्वय की स्थापना की गई है। इस महान कृति की जिन विशिष्टताओं से मैं प्रभावित हुआ, उनमें से एक यह है कि तुलसी का पांडित्य व काव्यशास्त्र का ज्ञान कहीं भी उनकी भक्ति अथवा उनके कवित्व पर भार नहीं बन पाया है। फलतः जहाँ साधारण पाठक को उसका भक्तिमय भावपक्ष प्रभावित करता है, वहीं सुशिक्षित पाठक के लिए उनके गूढ़ आलंकारिक अर्थों का विवेचन करते हुए श्रीराम का चामत्कारिक स्वरूप भी अविश्वास का कारण नहीं बन पाता। इसमें हमारे जीवन के सभी पहलुओं का आदर्श स्वरूप दर्शाया गया है। इसके सभी पात्रों के चरित्र हमारे हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं। वे हमें प्रत्येक परिस्थिति में कर्तव्य-पथ पर अग्रसर होना सिखाते हैं। इसमें की गई राम-राज्य की सुंदर कल्पना तो अनायास ही हमारी हृदय-तंत्री के तारों को झनझना देती है। इसकी भाषा-शैली भी अत्यंत सरल है। मेरे इस प्रिय ग्रंथ की हृदय-ग्राह्यता का प्रमाण यही है कि आज भी इसके रचयिता महाकवि तुलसीदास का विद्वानों में बड़ा आदर-सम्मान है। उनकी गणना आज भी विश्व के महान कवियों में की जाती है। आज विश्व की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। मुझमें इस महान कृति को समझने की यथोचित क्षमता तो नहीं है, परंतु इसके अध्ययन-मनन से जो कुछ समझ पाया हूँ, उससे इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि यह अन्य सभी ग्रंथों में श्रेष्ठ है। अपनी इसी श्रेष्ठता के कारण ही यह भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

18. ट्रैफ़िक जाम में फँसा 'मैं'

संकेत-बिंदु– • ट्रैफ़िक की समस्या का आधार • लोगों की जल्दबाज़ी और व्यवस्था की कमी • सुधार के उपाय • हमारा दायित्व।

मुझे पुस्तक-मेला देखने के लिए बस द्वारा मेरठ से दिल्ली जाना था। सड़क के दोनों ओर लोगों द्वारा किए गए अतिक्रमण और ट्रैफ़िक नियमों का पालन न करने के कारण मोदीनगर से निकलते ही हमारी बस ट्रैफ़िक जाम में फँस गई। हमारे आगे-पीछे एक-एक किलोमीटर तक वाहनों की कतारें लग गईं। पता नहीं, लोग क्यों सड़कों का अतिक्रमण करके और ट्रैफ़िक नियमों की अनदेखी करके ट्रैफ़िक जाम की समस्या पैदा करते हैं, जिससे सभी को परेशानी का सामना करना पड़ता है। यह ट्रैफ़िक जाम महानगरीय जीवन का तो अंग ही बन गया है। आज इस समस्या का सबसे बड़ा कारण यह है कि पिछले एक दशक में वाहनों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है, जबकि सड़कों का विस्तार उस अनुपात में नहीं हुआ है। दूसरा कारण यह है कि लोग जल्दबाज़ी के कारण ट्रैफ़िक नियमों का पालन नहीं करते और कहीं भी वाहन को अड़ा देते हैं। इन सबका कारण है–व्यवस्था की कमी। हमारे देश में ट्रैफ़िक नियम सख्त नहीं हैं; इसलिए लोग उन नियमों को तोड़ते हुए डरते नहीं। इस व्यवस्था का संचालन करने वाले लोगों की अपने कर्तव्य के प्रति उदासीनता भी इसका बड़ा कारण है। ट्रैफ़िक व्यवस्था में सुधार लाने के लिए कठोर नियम बनाने चाहिए और उनका पालन न करने वालों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए। इस समस्या का समाधान करने में हम सबका योगदान आवश्यक है; अतः हम सभी को यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए। नियमों का पालन करना एक शिष्ट एवं सभ्य समाज की पहचान है।

19. पुस्तकालय का महत्त्व

संकेत-बिंदु– • पुस्तकालय का अर्थ • दुर्लभ पुस्तकों की उपलब्धता • ज्ञान और मनोरंजन का साधन • पुस्तकालय के प्रति हमारा कर्तव्य।

पुस्तकालय शब्द 'पुस्तक + आलय' इन दो शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ होता है–पुस्तकों का घर, परंतु पुस्तकालय से अभिप्राय पुस्तकों के गोदाम से नहीं, बल्कि उस ज्ञान-केंद्र से है, जहाँ ज्ञानपिपासु अपने ज्ञान की प्यास बुझाने के लिए आते हैं। आज संसार में विभिन्न विषयों की लाखों पुस्तकें हैं। बड़े-से-बड़े धनी व्यक्ति के लिए भी यह संभव नहीं है कि वह एक विषय की बहुत-सी पुस्तकें खरीदकर उन्हें अपने पास सहेजकर रख सके। पुस्तकालय इसी कमी को दूर करता है। यहाँ विभिन्न विषयों से संबंधित अनेक पुस्तकों का संग्रह होता है। पुस्तकालयों में दुर्लभ प्राचीन पुस्तकें भी सुलभ हो जाती हैं। पुस्तकालय ज्ञानवृद्धि के साथ-साथ मनोरंजन का भी उत्तम साधन हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पुस्तकालय में जाकर मनुष्य को तनावों से छुटकारा मिलता है। यह समय के सदुपयोग का भी अच्छा साधन है। ज्ञान तथा मनोरंजन के विचित्र समन्वय का जैसा आनंद पुस्तकालय से प्राप्त किया जा सकता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। पुस्तकालय से हमें सत्संगति का लाभ भी मिलता है। पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। उनकी संगति सदा लाभकारी होती है। पुस्तकें हमें जीने की सही राह दिखाती हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह कथन पूरी तरह सही है कि पुस्तकों द्वारा हम किसी महापुरुष को जितना जान सकते हैं, उतना उनके मित्र तथा सगे-संबंधी भी नहीं जान सकते। पुस्तकालय को ज्ञान-कोष कहा जा सकता है। हमें पुस्तकालयों का उपयोग भली प्रकार से करना चाहिए। हमें पुस्तकों को गंदा नहीं करना चाहिए और न ही उनके पृष्ठों को फाड़कर, चित्रों को काटकर, उन पर लिखकर या उनके अंशों को रेखांकित करके उन्हें हानि पहुँचानी चाहिए। पुस्तकालयों को स्वच्छ रखना, पुस्तकों को पढ़ने के बाद यथास्थान पर रखना तथा शांति बनाए रखना प्रत्येक पाठक का पहला कर्तव्य है। पुस्तकालय विश्व-चिंतन का स्थायी केंद्र हैं। इनकी सहायता से हम अपने ज्ञान का विस्तारकर प्रगति के शिखर पर पहुँच सकते हैं।

20. समाचार-पत्र : ज्ञान का सशक्त साधन

संकेत-बिंदु– • समाचार-पत्र का महत्त्व • समाचार-पत्र : जानकारी का स्रोत • संसार के दर्पण • लोकमत-निर्माण में सहायक।

मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु है। वह जिस समाज में रहता है, उसकी पूरी जानकारी प्राप्त करना चाहता है। इसी जिज्ञासा के कारण वह पूरी दुनिया से जुड़ा हुआ है। इसी प्रवृत्ति के कारण ही समाचार-पत्र का उदय हुआ। समाचार-पत्र वह कड़ी है, जो हमें पूरी दुनिया से जोड़ने का कार्य करती है। समाचार-पत्रों से हमारे ज्ञान का विस्तार होता है। समाचार-पत्रों में नौकरी के लिए विज्ञापन, वैवाहिक विज्ञापन, फ़िल्म जगत् की सूचना, परिवार वालों से बिछुड़ने वाले व्यक्तियों की सूचना, खेल-संसार की सूचना, रोगों की जानकारी, उनके इलाज के उपाय, व्यापारिक वस्तुओं के भाव, साहित्यकारों की साहित्य संबंधी सामग्री, नित्य नए आविष्कार, नए संसाधन और अद्‌भुत संसार की अद्‌भुत जानकारियाँ प्रकाशित होती हैं, समाचार-पत्र जनता के भूखे मस्तिष्क का भोजन हैं। समाज के लिए समाचार-पत्र बहुत कल्याणकारी सिद्‌ध हुए हैं; अतः जेम्स एलिस ने ठीक कहा था-''समाचार-पत्र संसार के दर्पण हैं।'' समाचार-पत्र न केवल ज्ञान का भंडार होते हैं, वरन् जनता को उसके अधिकार और कर्तव्यों के प्रति जागरूक भी करते हैं। ज्वलंत सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक विषयों पर स्वस्थ लोकमत के निर्माण में भी समाचार-पत्र महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

21. गणतंत्र दिवस

संकेत-बिंदु– • गणतंत्र से आशय • गणतंत्र दिवस मनाने का कारण •गणतंत्र दिवस कब मनाया जाता है • गणतंत्र दिवस की सार्थकता।

जिस देश का शासन वहाँ की जनता द्‌वारा प्रत्यक्ष रूप से मत देकर चुने गए प्रतिनिधि चलाते हैं, शासन की वह प्रणाली गणतंत्र कहलाती है। भारत विश्व का सबसे बड़ा गणतंत्र है। हमारा देश 15 अगस्त, 1947 को आज़ाद हो गया था, परंतु उस समय हमारे देश का कोई संविधान नहीं था। इसलिए हमारी स्वतंत्रता अधूरी थी। जिस दिन से हमारा शासन हमारे अपने बनाए संविधान से चलाया जाने लगा, उस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। दिसंबर, 1949 में हमारा संविधान बनकर तैयार हुआ तथा उसे 26 जनवरी, 1950 को देश में लागू किया गया। इस दिन ही भारतवर्ष को संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न गणराज्य घोषित किया गया। इसलिए इस दिन को सभी भारतवासी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। यह एक राष्ट्रीय पर्व है, जिसे भारत देश का प्रत्येक नागरिक बड़ी धूमधाम से मनाता है। इस दिन भारत की राजधानी दिल्ली की शोभा अनुपम होती है। छब्बीस जनवरी की सुबह प्रधानमंत्री तीनों सेनाओं के सेनापतियों के साथ मिलकर पहले इंडिया गेट पर जल रही अमर जवान ज्योति पर फूलमाला अर्पित कर शहीदों को श्रद्‌धांजलि देते हैं, फिर राष्ट्रपति का स्वागत करने के लिए राष्ट्रपति भवन के सामने विजय-चौक पर आते हैं। ध्वजारोहण के बाद 21 तोपों से राष्ट्रपति को सलामी दी जाती है, उसके बाद जल, थल और वायु सेना के अध्यक्ष राष्ट्रपति को सलामी देते हैं। पैदल सैनिक, घुड़सवार, ऊँटसवार आदि अपने सुंदर स्वरूप में सलामी देते हुए आगे बढ़ते हैं। गणतंत्र दिवस समारोह से देश की जनता को देश की वैज्ञानिक, आर्थिक, सांस्कृतिक प्रगति का परिचय मिलता है। यह राष्ट्रीय त्योहार हमें संविधान के प्रति कृतज्ञ और निष्ठावान् रहने की प्रेरणा देता है। हम अपने देश के लिए सब प्रकार से समर्पित रहें, तभी हमारा गणतंत्र दिवस मनाना सार्थक हो सकता है।

22. रंगों का त्योहार–होली

संकेत-बिंदु– • उल्लास एवं उमंग का त्योहार • पौराणिक महत्त्व • होली-पूजन • होली खेलना।

होली उल्लास एवं उमंग का पर्व है। यह लगभग एक माह तक मनाया जाने वाला त्योहार है। वसंतपंचमी से लोगों पर इस त्योहार का नशा-सा छाने लगता है। कहते हैं प्राचीनकाल में दैत्यराज हिरण्यकश्यप स्वयं को भगवान मानता था तथा प्रजा से ईश्वर के रूप में अपनी ही पूजा कराता था। उसका पुत्र प्रह्लाद विष्णु भगवान का सच्चा भक्त था। उसने अपने पिता को ईश्वर मानने से इंकार कर दिया। हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को वरदान था कि वह आग में नहीं जल सकती। राजा की आज्ञानुसार वह प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर आग में बैठ गई, परंतु ईश्वर की कृपा से प्रह्लाद तो बच गया और होलिका जलकर भस्म हो गई। भक्त प्रह्लाद की रक्षा तथा दैत्य-शक्तियों से मुक्ति प्राप्त करने की खुशी में उस दिन से आज तक होलिका-दहन करके होली का त्योहार मनाया जाता है। इस त्योहार की तैयारी के लिए वसंतपंचमी के दिन से ही लकड़ियों का ढेर एकत्रित करना प्रारंभ कर दिया जाता है। होली के दिन लोग जलती होलिका की अग्नि की परिक्रमा करते हैं, नाचते-गाते हैं, आपस में गले मिलते हैं तथा नए अनाज की बालों को भूनकर एक-दूसरे को सद्‌भाव एवं मित्रता के प्रतीक के रूप में वितरित करते हैं। होलिका-दहन से अगले दिन दुल्हैंडी के दिन चारों ओर रंग तथा गुलाल उड़ता दिखाई पड़ता है। कहीं बच्चे खुशी से रंग की पिचकारी मार रहे होते हैं तो कहीं रंग भरे गुब्बारे; कहीं युवक एक-दूसरे के गालों पर गुलाल लगाकर मस्ती में नाच रहे होते हैं तो कहीं पूरे उत्साह से फाग के गीत गाए जाते हैं। इस दिन यह त्योहार अपनी पराकाष्ठा पर होता है। कुछ लोग इस दिन की पवित्रता को शराब, भाँग, अफ़ीम आदि पीकर अपवित्र कर देते हैं। हमारा कर्तव्य है कि हमें इस प्रकार की बुराइयों से दूर रहना चाहिए तथा हर्षोल्लास, एकता एवं मिलन के इस पावन पर्व को प्रेमपूर्वक मनाना चाहिए।

23. क्रिकेट का नया रोमांच : टी-20 मैच

संकेत-बिंदु– • क्रिकेट : संक्षिप्त विवरण • क्रिकेट के विभिन्न रूप • टी-20 मैच का चलन और नियम • रोमांच का चरमोत्कर्ष • भारत का श्रेष्ठ प्रदर्शन।

भारत में क्रिकेट का खेल अंग्रेज़ों की देन है। राजाओं और नवाबों को व्यस्त रखने के लिए वे इस खेल का आयोजन करते थे। क्रिकेट के विभिन्न रूप हैं। इसका पहला रूप टैस्ट मैच है। यह पाँच दिवसीय खेल है। दूसरा रूप एक दिवसीय मैच है। इसमें प्रत्येक टीम को 50-50 ओवर खेलने के लिए मिलते हैं। क्रिकेट का तीसरा और वर्तमान में सबसे अधिक लोकप्रिय रूप टी-20 मैच है। इसमें प्रत्येक टीम को 20 ओवर खेलने के लिए दिए जाते हैं। इन निर्धारित ओवरों में जो टीम अधिक रन बनाती है, वही विजयी होती है। यह खेल बहुत रोमांचक होता है। जहाँ एक ओर बल्लेबाज़ को हर गेंद पर रन बनाने का जुनून होता है, वहीं दूसरी ओर गेंदबाज़ में हर गेंद पर रन बचाने और बल्लेबाज़ को आउट

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

करने का जुनून होता है। इसमें एक गेंदबाज़ अधिकतम 4 ओवर फेंक सकता है। इस खेल के रोमांच का चरमोत्कर्ष टी-20 वर्ल्डकप में देखने को मिला था। इसमें फाइनल में भारत और पाकिस्तान का मुकाबला था। यह पहला वर्ल्डकप था, जिसमें भारत ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए टी-20 का पहला वर्ल्डकप जीता था।

24. राष्ट्र-निर्माण में युवाओं का योगदान

संकेत-बिंदु– • युवा : राष्ट्र का भविष्य • राष्ट्र-निर्माण से आशय • राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की भूमिका • पथभ्रष्ट युवा : राष्ट्र की चिंता।

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके युवाओं को माना जाता है; क्योंकि उनके मन में राष्ट्र के लिए कुछ कर गुज़रने का अदम्य जोश होता है। उनके मन में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिवर्तन करने की लालसा प्रबल होती है। राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा कानून-व्यवस्था के निर्माण में योगदान देना ही राष्ट्र-निर्माण है। इसके साथ ही भाईचारे की भावना एवं शांति-व्यवस्था को बनाए रखना भी राष्ट्र-निर्माण का ही कार्य है। देश का युवा-वर्ग राष्ट्र के उत्थान में विभिन्न प्रकार से अपना योगदान दे सकता है। यदि सभी युवा अपनी शक्ति को पहचानकर और संगठित होकर इतिहास से प्रेरणा लेकर सकारात्मक कार्य करें तो निश्चय ही देश का उत्थान होगा। देश के उत्थान में अपना योगदान देने के लिए युवाओं को चिंतन-मनन का सहारा लेना चाहिए, परंतु हमारे देश का युवा अपने मार्ग से भटककर व्यर्थ समय नष्ट कर रहा है, यह राष्ट्र के लिए चिंता का विषय है। युवाओं का पथभ्रष्ट होना किसी राष्ट्र के लिए शुभ-संकेत नहीं माना जा सकता है, परंतु यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि युवा-शक्ति ही देश के उत्थान में रचनात्मक सहयोग कर सकती है।

25. सर्वशिक्षा अभियान

संकेत-बिंदु– • साक्षरता की आवश्यकता • प्रजातंत्र की सफलता के लिए आवश्यक • सरकारी प्रयास • इसकी प्रभावशीलता।

मनुष्य के लिए शिक्षा सर्वाधिक आवश्यक है। उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास शिक्षा से ही संभव है। निरक्षर व्यक्ति अपना विकास नहीं कर सकता और न ही अपने देश और समाज के विषय में सोच सकता है। शिक्षा ही व्यक्ति को शिष्ट एवं सभ्य बनाती है। किसी भी प्रजातंत्र की सफलता के लिए उसके नागरिकों का साक्षर होना आवश्यक है। साक्षरता प्रत्येक देश एवं समाज के विकास का प्रतीक है। हमारे देश में साक्षरता का प्रतिशत काफ़ी कम है। इसलिए सरकार ने सर्वशिक्षा अभियान चलाया, जिसके अंतर्गत सभी को पढ़ने-लिखने का ज्ञान कराने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए केंद्र सरकार ने करोड़ों रुपयों की धनराशि राज्यों को आवंटित की है। राज्य सरकारें अपने-अपने स्तर पर अपने-अपने ढंग से इस अभियान को चला रही हैं। इस अभियान में स्कूल में नियमित पढ़ाई न करने वाले बालकों के साथ-साथ प्रौढ़ों को भी साक्षर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। यदि हम इस अभियान की सफलता और विफलता पर निष्पक्ष दृष्टि से विचार करें तो हमें पता चलता है कि यह अभियान जन-जागृति लाने में तो सफल रहा है, परंतु साक्षरों की संख्या बढ़ा-चढ़ाकर दिखाई जा रही है। इस अभियान की सफलता सदैव संदेह के घेरे में रही है। सरकार की धनराशि को इस उद्देश्य की पूर्ति में पूर्णरूप से नहीं लगाया जा रहा है। इस अभियान से जुड़े लोगों को इसे गंभीरतापूर्वक चलाना चाहिए।

26. लड़का-लड़की एक समान

संकेत-बिंदु– • लड़का-लड़की में भेदभाव • नारी की उन्नति से देश की उन्नति • नए दृष्टिकोण की आवश्यकता • सभी क्षेत्रों में सफलता।

प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज में लड़का-लड़की में भेदभाव किया जाता रहा है। लड़के को कुल का दीपक अथवा वंश चलाने वाला बताकर उसे जीवन की सारी सुविधाएँ एवं अधिकार दिए जाते रहे हैं और लड़कियों को जीवन की मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित किया जाता रहा है। अधिकारों की तो बात ही छोड़िए। मगर अब शिक्षा के प्रचार-प्रसार से समाज के दृष्टिकोण में कुछ परिवर्तन आया है और समाज के एक बड़े वर्ग द्वारा लड़का-लड़की को एक समान माना जाने लगा है। लोगों को यह बात समझ आ रही है कि समाज और परिवार में लड़की का स्थान भी लड़के के बराबर ही है, किसी भी प्रकार से लड़की का महत्त्व कम नहीं है। सभी जानते हैं कि आज की बच्चियाँ ही कल प्रौढ़ होकर वयस्क नारी के रूप में परिवार, समाज और देश की उन्नति में अपना योगदान देंगी। लड़की ही नारी का प्रारंभिक रूप है। नारी की उन्नति में ही देश की उन्नति है; क्योंकि नारी के बिना समाज अधूरा है। परिवार की गाड़ी के दो पहिये हैं–नर और नारी; अतः परिवार में लड़के के साथ-साथ लड़की को भी पूरा सम्मान, समान अवसर और अधिकार मिलने चाहिए, तभी समाज का संतुलित विकास हो सकता है। आज इसी नए दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है। लड़की का परिवार, समाज और देश के विकास में बराबर का योगदान है, इसलिए वह बराबरी का हक रखती है। दोनों को समान समझे जाने पर ही आज समाज और परिवार का विकास होगा। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। किसी की भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। आज लड़कियाँ सभी क्षेत्रों में सफलतापूर्वक कार्य करके स्वयं को स्थापित कर रही हैं। देश के विकास में नारी-शक्ति का भरपूर सहयोग प्राप्त करने के लिए आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें समान अवसर प्रदान करके उचित दिशा प्रदान की जाए।

27. स्वच्छ भारत अभियान

संकेत-बिंदु– • अभियान की अवधारणा • अभियान की शुरूआत • अभियान के कार्य • अभियान की प्रक्रिया और उद्देश्य।

'स्वच्छ-भारत' का स्वप्न सर्वप्रथम महात्मा गांधी जी ने देखा था। वे मानते थे कि स्वच्छता में ही भगवान बसते हैं। महात्मा गांधी जी के इस स्वप्न को साकार करने के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा चलाया गया मुख्य अभियान है। इस अभियान को औपचारिक व आधिकारिक रूप से 02 अक्टूबर, 2014 को गांधी जी की 145वीं जयंती के अवसर पर राजघाट, नई दिल्ली से प्रारंभ किया गया। इसका उद्देश्य 02 अक्टूबर, 2019 अर्थात् गांधी जी की 150वीं जयंती तक भारत को संपूर्ण रूप से स्वच्छ बनाने का है। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, नदी-नालों, गली-सड़कों की सफ़ाई तथा देश के बुनियादी ढाँचे को प्रदूषण मुक्त करना शामिल है। इस अभियान को कारगर तथा असरदार बनाने के लिए 'नेटवर्किंग' प्रणाली का प्रयोग किया गया है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति 9 लोगों को इससे जुड़ने के लिए आमंत्रित करेगा और फिर वे आमंत्रित व्यक्ति अगले 9 लोगों को इस अभियान में जुड़ने के लिए आमंत्रित करेंगे। यह श्रृंखला तब तक चलती रहेगी, जब तक की भारत का प्रत्येक नागरिक इससे जुड़ न जाए। प्रत्येक भारतीय को इस अभियान को एक चुनौती के रूप में लेना चाहिए और इसे सफल बनाने का अथक प्रयास करना चाहिए। प्रकारांतर से इस अभियान का एक उद्देश्य पर्यटन को बढ़ावा देना भी है।

28. मेक इन इंडिया

संकेत-बिंदु– • योजना का उद्देश्य • योजना का शुभारंभ • योजना की परिकल्पना • योजना का परिणाम।

एक समय था, जब भारत 'सोने की चिड़िया' कहलाता था, परंतु विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत को लूटकर उसके आर्थिक विकास को अवरुद्ध कर दिया। भारत को आर्थिक रूप से सुदृढ़कर उसे वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाना ही इस योजना का परमोद्देश्य है। इसकी पहल 25 सितंबर, 2014 को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने की। भारत में राष्ट्रीय और

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निवेश को बढ़ावा देने तथा अपने देश में उद्योगों की स्थापना करके रोज़गार के अवसरों में वृद्धि करने की दिशा में यह एक स्वर्णिम पहल है। इस योजना की संकल्पना का उद्देश्य भारत को एक विश्वस्तरीय व्यापारिक केंद्र के रूप में स्थापित करने का है। इस योजना के सफलतापूर्वक लागू होने से भारत में 100 स्मार्ट शहर बनाने और सभी लोगों के लिए घर बनाने में भी मदद मिलेगी। देशी-विदेशी निवेशकों को भारत में पूँजी निवेश करने के समुचित अवसर प्रदानकर देश की आर्थिक-वृद्धि को तेज़ गति प्रदान कर रोज़गार के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध कराना इस योजना का मुख्य लक्ष्य है। आज मेक इन इंडिया अभियान अनेक व्यापारिक प्रतिष्ठानों और उद्योगों की स्थापना हेतु विश्व के सभी प्रमुख ब्रांडों तथा उद्योगपतियों का ध्यान भारत की ओर खींचने में सफल रहा है। आने वाले समय में यह 1 करोड़ से ज़्यादा रोज़गार के अवसर प्रदान करेगा। इससे वैश्विक परिदृश्य में भारत की छवि एक बाज़ार के स्थान पर एक उत्पादक राष्ट्र के रूप में उभरेगी। हम एक उपभोक्ता-राष्ट्र न कहलाकर एक 'उत्पादक-राष्ट्र' कहलाएँगे। इस योजना की सफलता के लिए आज आवश्यकता है देश के साहसिक व्यापारिक युवाओं के आगे आने की।

29. पृथ्वी दिवस (अर्थ डे)

संकेत-बिंदु– • ब्रह्मांड में पृथ्वी ही जीवन के लिए उपयुक्त • पृथ्वी पर प्राकृतिक असंतुलन • पृथ्वी दिवस की संकल्पना • पृथ्वी दिवस मनाने का उद्देश्य।

इस संपूर्ण ब्रह्मांड में शायद पृथ्वी ही वह ग्रह है, जहाँ जीवन है। किसी भी स्थान पर जीवन होने के लिए यह आवश्यक है कि वहाँ पर जीवन के अनिवार्य तत्त्व–स्वच्छ प्राणवायु, जल और भरण-पोषण के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री उपलब्ध हो। पृथ्वी पर ये तीनों ही चीज़ें सर्वत्र सरलता से उपलब्ध हैं। इसलिए इसके प्रत्येक भाग में जीवन किसी-न-किसी रूप में उपस्थित है। मगर मनुष्य ने अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण इन संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करने के साथ-साथ इनका दुरुपयोग करके पृथ्वी पर न केवल इनके संतुलन को बिगाड़ दिया है, बल्कि इन्हें दूषित करके अपने अस्तित्व के लिए भी अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। पृथ्वी पर जीवन सुचारु रूप से चलता रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि सभी लोग मिलकर जल, वायु, वनस्पति आदि प्राकृतिक-संसाधनों का सीमित मात्रा में उपयोग करें। इनको दूषित होने से बचाएँ और सदैव के लिए पृथ्वी पर इनकी उपलब्धता को सुनिश्चित करने के प्रयास करते रहें। लोगों को इसी बात के लिए प्रेरित करने हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पृथ्वी दिवस (अर्थ डे) की संकल्पना प्रस्तुत की गई है। यह सबसे पहले 22 अप्रैल, 1970 को अमेरिका में मनाया गया। फिर पूरे विश्व में 22 अप्रैल को 'अर्थ डे' के रूप में मनाया जाने लगा। पहले संपूर्ण विश्व में दो दिन 21 मार्च तथा 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया जाता था, परंतु 1970 के बाद 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाने की औपचारिक घोषणा की गई। अब इसे 192 से अधिक देशों में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। कहा जाता है कि पृथ्वी दिवस की धारणा को अमेरिकी सीनेटर जेराल्ड नेल्सन ने प्रतिपादित किया था। कई देश पृथ्वी दिवस को पृथ्वी सप्ताह के रूप में पूरे सप्ताह के लिए मनाते हैं। ऐसे देशों में पृथ्वी सप्ताह प्रायः 16 अप्रैल से प्रारंभ होकर 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस पर संपन्न होता है। पृथ्वी दिवस की संकल्पना में एक ऐसी पृथ्वी की कल्पना निहित है, जो प्रदूषण, रोग, युद्ध, भुखमरी और गरीबी-मुक्त हो, जहाँ चारों ओर हरियाली और खुशहाली हो।

30. आज का युग सूचना-प्रौद्योगिकी (IT) का युग

संकेत-बिंदु– • सूचना-प्रौद्योगिकी का युग • प्रौद्योगिकी के साधन • प्रौद्योगिकी का क्षेत्र • जीवन में महत्त्व।

आज सूचना-प्रौद्योगिकी अर्थात् 'Information Technology' का युग है; क्योंकि आधुनिक विकास सूचनाओं के आदान-प्रदान पर निर्भर है। आज संपूर्ण विश्व में सूचना और प्रौद्योगिकी की क्रांति चल रही है। पिछले दो दशकों में तो खासतौर पर इस क्षेत्र में युगांतकारी परिवर्तन हुए हैं। सूचना-प्रौद्योगिकी के कारण दूरसंचार उपग्रह और कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई है। 'इंटरनेट' दूरसंचार और उपग्रह-प्रौद्योगिकी की मदद से संचालित लाखों कंप्यूटरों का ऐसा सूचना-तंत्र है, जिसमें पुस्तकालयों, रेडियो, टेलीविज़न, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं के अलावा लगभग हर विषय से संबंधित विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। सूचना-प्रौद्योगिकी के कारण ही अब हम पलभर में दुनिया के किसी भी कोने की खबर प्राप्त कर सकते हैं। निःसंदेह सूचना-क्रांति मानव सभ्यता की सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण क्रांति है। इस सूचना के युग में सूचना ही शक्तिशाली है। यही कारण है कि यह क्रांति अपने मूलस्वभाव में सबसे अधिक चर्चित यांत्रिक क्रांति है; क्योंकि इसने विश्व के किसी भी तंत्र को नष्ट करने के बजाय सबको मज़बूती ही प्रदान की है। आज यह सूचना-प्रौद्योगिकी का ही कमाल है कि हम अपने सभी कार्य-व्यापार अपने स्थान पर बैठे ही संपादित कर लेते हैं। हमें चाहे खरीदारी करनी हो या अपना माल बेचना हो, पैसों का लेन-देन करना हो या वर-वधू की तलाश करनी हो, अपना भविष्य जानना हो या डॉक्टर की सलाह लेनी हो; कंप्यूटर का एक बटन दबाते ही हमारे ये सब काम घर बैठे हो जाते हैं। इसलिए आगे आने वाला युग केवल इसी पर टिका होगा।

31. ऊर्जा-संरक्षण

संकेत-बिंदु– • ऊर्जा-संरक्षण की आवश्यकता • आत्मनिर्भरता का उपाय • हमारी भूमिका • संरक्षण का उपाय।

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए यह परमावश्यक है कि उसके यहाँ ऊर्जा का अधिकाधिक उत्पादन किया जाए; क्योंकि ऊर्जा ही देश के विकास को गति प्रदान करती है। ऊर्जा उत्पादन से भी अधिक आवश्यक है–उपलब्ध ऊर्जा का समुचित संरक्षण। उद्योगों को चलाने के लिए ऊर्जा दो प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होती है–नवीकरणीय तथा परंपरागत। दोनों ही संसाधनों से ऊर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया अत्यंत लंबी तथा खर्चीली होती है। इसलिए ऊर्जा का हमें आवश्यकतानुसार ही प्रयोग करना चाहिए। आज जो देश आर्थिक विकास के शिखर पर हैं, उनका सर्वप्रमुख कारण ऊर्जा के क्षेत्र में उनकी आत्मनिर्भरता है। ऊर्जा की बचत करके ही हम लंबे समय तक अधिकाधिक कल-कारखाने चला सकते हैं, जिससे उत्पादन में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकेगी। औद्योगिक-उत्पादन की मात्रा पर ही किसी देश की प्रगति निर्भर करती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ऊर्जा की बचत का दायित्व हम सभी का है। यदि हम छोटी-छोटी सावधानियाँ बरतें तो ऊर्जा-संरक्षण का महान उद्देश्य पूरा किया जा सकता है। ऊर्जा-संरक्षण अथवा ऊर्जा की बचत के लिए अपनाए जाने वाले कुछ उपाय इस प्रकार हैं–बिजली का आवश्यकतानुसार प्रयोग, ऐसी तकनीक वाले उपकरणों का प्रयोग, जो कम ऊर्जा खपत करते हों, निजी वाहनों के स्थान पर सार्वजनिक वाहनों का अधिक-से-अधिक प्रयोग आदि। वस्तुतः ऊर्जा की बचत एवं संरक्षण में ही हमारा भविष्य उज्ज्वल, सुरक्षित एवं संरक्षित है।

32. परोपकार

संकेत-बिंदु– • परोपकार का अर्थ • परोपकार : सर्वश्रेष्ठ गुण • कुछ ऐतिहासिक उदाहरण • सबसे बड़ा धर्म।

परोपकार शब्द दो शब्दों–पर+उपकार से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है–दूसरों के हित के लिए किया गया कार्य। जब कोई व्यक्ति समर्पण भाव से किसी अन्य के हित को ध्यान में रखकर कार्य करता है, उसका वह कार्य 'परोपकार' के अंतर्गत आता है। परोपकार मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है। इसीलिए सभी महापुरुष परोपकारी रहे हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि आज जिन महापुरुषों का नाम बड़े गर्व के साथ लिया जाता है, उन्होंने अपना संपूर्ण

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जीवन जन-कल्याण में निःस्वार्थ भाव से लगाया है। महर्षि दधीचि ने परोपकार हेतु जहाँ सहर्ष अपनी हड्डियों का दान किया था, वहीं राजा शिवि ने कबूतर की रक्षा के लिए अपने सभी अंगों को काटकर तराजू में चढ़ा दिया था। महात्मा गांधी, मदर टेरेसा, नेल्सन मंडेला, बाबा आम्टे आदि ने तो 'परोपकार' को अपने जीवन का अभिन्न अंग ही बना लिया। ऐसे न जाने कितने उदाहरण भारतीय इतिहास में भरे पड़े हैं। सत्य ही है कि परोपकार करने वाले व्यक्ति को इससे आत्मिक संतुष्टि प्राप्त होती है तथा उनके कार्यों से मानवता का संरक्षण होता है। निश्चय ही परोपकार इस संसार में मानवमात्र को सुख पहुँचाने वाला सबसे बड़ा धर्म है, तभी तो महाकवि तुलसीदास ने कहा है– 'परहित सरिस धरम नहिं भाई' दूसरों के साथ भलाई करना ही सबसे बड़ा धर्म होता है। कबीरदास ने भी कहा है–'परमारथ के कारने, साधुन धर्यौ सरीर।' अर्थात् साधु व्यक्ति तो दूसरों का हित करने के लिए ही शरीर धारण करते हैं; अतः हमें भी परोपकार के पथ पर चलकर मानवता के उत्थान में अपना जीवन समर्पित कर देने का संकल्प लेना चाहिए।

33. विद्याधन : सर्वश्रेष्ठ धन

संकेत-बिंदु– • विद्या का महत्त्व • ज्ञान ही सच्चा सहायक • उदाहरण • विद्यादान सर्वश्रेष्ठ।

विद्या का मानव-जीवन में बहुत महत्त्व है। ज्ञान को चक्षु कहा गया है। विद्या से हीन मनुष्य पशु के समान है। विद्या सर्वश्रेष्ठ धन है। यह ऐसा धन है, जिसे न चोर चुरा सकता है, न भाई बाँट सकता है, न राजा छीन सकता है और न इस धन में वज़न होता है। यह खर्च करने पर बढ़ता है। विद्या मनुष्य की सच्ची सहायक है। जब सभी मित्र-संबंधी मनुष्य का साथ छोड़ देते हैं, तब विद्या ही उसकी सहायता करती है। विदेश में तो विद्या ही सबसे बड़ी सहायक होती है। स्वामी विवेकानंद जब शिकागो सम्मेलन में अमेरिका गए, तब उनके पास कुछ भी नहीं था, लेकिन अपने ज्ञान से उन्होंने अमेरिकावासियों को अपना बना लिया था। चाणक्य ने ज्ञान के बल पर ही अखंड भारत की स्थापना की थी। विद्या का दान सर्वश्रेष्ठ दान है। अन्य वस्तुएँ तो उपभोग के पश्चात् समाप्त हो जाती हैं, लेकिन विद्या कभी नष्ट नहीं होती। यह ऐसा धन है, जो दान करने से और अधिक बढ़ता है। विद्या का दान करने वाले का संसार में सबसे अधिक सम्मान होता है। यही कारण है कि विद्या देने वाले गुरु को भगवान से भी बड़ा माना गया है।

34. युवाओं के लिए मतदान का अधिकार

संकेत-बिंदु– • मतदान का अधिकार क्या और क्यों? • जागरूकता आवश्यक • सुझाव।

भारत में लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था है। लोकतंत्र में जनता का शासन होता है। जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है और वे चुने हुए प्रतिनिधि सरकार बनाकर शासन करते हैं। इस प्रकार लोकतंत्र में जनता पर जनता की ही सरकार होती है। भारतीय संविधान में 18 वर्ष की उम्र के युवाओं को मतदान का अधिकार दिया गया है। भारत का प्रत्येक वयस्क नागरिक, जो 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो और वह विक्षिप्त या दिवालिया न हो, जन प्रतिनिधि चुनने के लिए होने वाले चुनाव में मत देने का अधिकार रखता है, इसी को मतदान का अधिकार कहते हैं। यह अधिकार इसलिए दिया गया है, ताकि प्रत्येक नागरिक अपनी पसंद की सरकार बना सके। मतदाता को बहुत जागरूक होना चाहिए। उसे अपने विवेक से बिना डर या लालच के अपने प्रतिनिधि का चुनाव करना चाहिए। उसे शिक्षित, समाजसेवी और योग्य व्यक्ति को ही चुनना चाहिए। उसके द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथों में ही देश की बागडोर होती है। यदि अयोग्य व्यक्ति का चुनाव हो जाता है तो वह देश को पतन के गर्त में ले जाता है। सामान्यतः एक बार चुने हुए जन प्रतिनिधियों को पाँच वर्ष तक शासन का अधिकार होता है; अतः मतदाता को बहुत सोच-समझकर अपने मत का प्रयोग करना चाहिए। युवाओं के लिए यही सुझाव है कि वे धर्म, जाति, संप्रदाय आदि से ऊपर उठकर निष्पक्ष रूप से योग्य उम्मीदवार को चुनने में अपने मतदान के अधिकार का उपयोग करें।

35. इंटरनेट की दुनिया

संकेत-बिंदु– • इंटरनेट का तात्पर्य • सूचना का मुख्य साधन • लाभ तथा हानि।

इंटरनेट कंप्यूटरों के विश्वव्यापी जाल को कहते हैं। सभी कंप्यूटरों की सारी जानकारी को जोड़ने पर इंटरनेट बनता है। अतः इंटरनेट का आशय है–विश्व-भर की सारी जानकारी का एक जगह इकट्ठा होना। यह सचमुच बहुत बड़ी उपलब्धि है। आप घर बैठे पूरे विश्व का हाल जान सकते हैं, सभी अखबार पढ़ सकते हैं, सभी फिल्में देख सकते हैं। चाहें तो यातायात के लिए टिकटें, होटल की बुकिंग, अपने बिजली-फोन के बिल तथा ज़रूरी सामान बाज़ार से खरीद सकते हैं। इसकी सुविधाएँ अनंत हैं। इंटरनेट संपर्क का साधन तो है ही, मनोरंजन का भी साधन है। संसार-भर के गीत, सीरियल, चलचित्र इस पर उपलब्ध हैं। जहाँ आप विश्व-भर की चीज़ें देख सकते हैं, वहीं अपनी प्रतिभा और माल दूसरों को दिखा भी सकते हैं। इस प्रकार आप घर बैठे-बैठे संसार भर में प्रसिद्ध हो सकते हैं। आपका संदेश पलक झपकते ही ट्विटर या फेसबुक जैसी सोशल-साइट्स के जरिए दूर-दूर तक फैल सकता है। हर वैज्ञानिक उपकरण के समान इंटरनेट की हानियाँ भी हैं। इसके प्रयोग ने सामाजिक मनुष्य को बिलकुल अपने कमरे में कैद कर दिया है। उसका बाहरी संपर्क भी वैचारिक और काल्पनिक रह गया है। इंटरनेट के माध्यम से ढेर सारी अश्लील और आपत्तिजनक सामग्री आपके घर तक आ जाती है। यह एक प्रकार से सांस्कृतिक आक्रमण है, जिससे बचना बहुत कठिन हो गया है। हमारा कर्तव्य है कि हम इंटरनेट का प्रयोग विवेक से करें।

36. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020

संकेत-बिंद– • नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति जारी • नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति के प्रमुख प्रावधान • देश के विकास में योगदान।

देश में जुलाई 2020 से नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति लागू कर दी गई है। यह स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा-नीति है। नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण तथा सार्वभौमिक शिक्षा के साथ ही व्यावसायिक शिक्षा पर बल देना है। इसमें भारतीय संस्कृति की विविधता का उचित समावेश किया गया है। इस शिक्षा-नीति में रटकर याद करने की पद्धति के स्थान पर छात्रों का कौशल विकसित करने और उनकी क्षमताओं का आकलन करने पर जोर दिया गया है। इसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर एक बार पुनः शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। इसमें 3 से 18 वर्ष के बालकों के लिए निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान किया गया है। बारह वर्ष की (10 + 2) स्कूली शिक्षा-प्रणाली के स्थान पर (5 + 3 + 3 + 4) की शिक्षा-प्रणाली लागू की गई है। पहले पाँच वर्ष में तीन वर्ष की प्री-प्राइमरी और पहली-दूसरी कक्षा की शिक्षा सम्मिलित है। इसके बाद तीसरी, चौथी और पाँचवीं कक्षा को प्राथमिक शिक्षा में सम्मिलित किया गया है। यह शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने का प्रावधान है। इसमें छठी, सातवीं और आठवीं के तीन वर्षों में गणित और विज्ञान पर बल देते हुए व्यावसायिक शिक्षा का आरंभ किया जाएगा। स्कूली शिक्षा के अंतिम चार वर्षों में नवीं से बारहवीं तक की शिक्षा सम्मिलित है। इसमें विद्यार्थियों को वैकल्पिक विषयों के चुनाव की छूट दी गई है। विज्ञान, कला और वाणिज्य वर्गों में निर्धारित विषयों का प्रतिबंध नहीं रहेगा। इसी प्रकार उच्च शिक्षा में भी आमूल-चूल परिवर्तन किया गया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति में प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के लिए बस्ते का बोझ कम करने, नवीं से बारहवीं तक की मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन करने तथा मातृभाषा के साथ शिक्षणेतर गतिविधियों–खेल व योग आदि पर बल देने का प्रावधान है। आशा है कि भारत को विश्व की महाशक्ति और जगद्गुरु बनाने में नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति का क्रियान्वयन मील का पत्थर सिद्ध होगा।

37. परीक्षा से पहले मेरी मनोदशा

संकेत-बिंदु– • परीक्षा नाम से भय • पर्याप्त तैयारी • प्रश्न-पत्र देखकर भय दूर हुआ।

परीक्षा एक ऐसा शब्द है, जो बड़े-से-बड़े सबल व्यक्ति को भयभीत कर देता है। परीक्षा के नाम से सबसे अधिक भयभीत होते हैं—विद्यार्थी। कल मेरी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वार्षिक परीक्षा समाप्त हुई। ऐसा लगा, जैसे सिर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो। परीक्षा से पहले मेरी मनोदशा बहुत खराब थी। मन में एक भय और तनाव व्याप्त था। यही चिंता रहती थी कि पता नहीं प्रश्न-पत्र कैसे होंगे। मैं कर पाऊँगा या नहीं। खाना-पीना भी अच्छा नहीं लगता था। पिताजी मेरी मनोदशा को भाँप गए थे। उन्होंने मुझे बहुत समझाया, लेकिन परीक्षा के भय का भूत मुझे छोड़ नहीं रहा था। मैंने परीक्षा की पर्याप्त तैयारी कर रखी थी। अंततः परीक्षा को दिन आ गया। पहला प्रश्न-पत्र गणित का था। मैं डरते-डरते परीक्षा भवन में गया। मेरी धड़कनें बढ़ी हुई थीं। प्रश्न-पत्र मिला। मैंने उसे पढ़ना प्रारंभ किया। जैसे-जैसे मैं प्रश्न-पत्र पढ़ता गया, वैसे-वैसे मेरा भय भी समाप्त हो गया। प्रश्न-पत्र में एक भी प्रश्न ऐसा नहीं था, जिसे मैं न कर सकूँ। मेरा मन प्रसन्नता और उत्साह से भर गया। सारा भय और तनाव दूर हो गया। मैंने उत्साहपूर्वक पूरी परीक्षा दी। मुझे आशा और पूर्ण विश्वास है कि मेरे बहुत अच्छे अंक आएँगे।

38. लोकतंत्र और आम आदमी

संकेत-बिंदु– • लोकतंत्र शासन व्यवस्था • आम आदमी के अधिकार • लोकतांत्रिक व्यवस्था का व्यावहारिक रूप • लोकतंत्र के अधिकार • जनमत का महत्त्व • भारत का लोकतंत्र।

'लोकतंत्र' शासन-व्यवस्था का एक रूप है। लोकतंत्र लोक-इच्छा से चलता है। लोकतंत्र में आम लोगों के अधिकार समान होते हैं। इस व्यवस्था में शिक्षा, जाति, धर्म, लिंग आदि का कोई भेदभाव नहीं होता। सभी नागरिक समान होते हैं। व्यावहारिक रूप से देखें तो इस व्यवस्था में भी आम आदमी स्वयं को लुटा-पिटा और वंचित अनुभव करता है। इसका कारण यह है कि आम आदमी को अपने अधिकारों का ज्ञान नहीं होता। लोकतंत्र आम आदमी को व्यापक अधिकार देता है। उसे अपनी बात कहने का पूरा अधिकार है। वह अपनी माँग के लिए प्रदर्शन और आंदोलन भी कर सकता है। इसके लिए उसे जनमत और जन-समर्थन की आवश्यकता होती है। लोकतंत्र में सरकारें लोकमत से ही चलती हैं। वास्तव में लोकतंत्र में परिवर्तन का दायित्व लोक का ही होता है। जिस देश में जितना जाग्रत और प्रबल लोक होता है, वहाँ लोकतंत्र उतना ही सफल होता है। भारत का लोकतंत्र इतना सशक्त है कि प्रायः हर बार यहाँ के लोग अपने शासकों को बदल देते हैं। आज वर्षों बाद यहाँ यदि कोई स्थायी और सशक्त सरकार आई है तो यह लोक-इच्छा का ही परिणाम है।

39. जागो ग्राहक जागो

संकेत-बिंदु– • 'जागो ग्राहक जागो' का आशय • उद्देश्य • लाभ।

'जागो ग्राहक जागो' खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सन् 2005 में शुरू किया गया एक उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों और कर्तव्यों से अवगत कराना है। भारत सरकार ने ग्राहकों के अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायालय की व्यवस्था की है। इसमें ग्राहक अपनी किसी भी प्रकार की शिकायत दर्ज कराकर उचित न्याय प्राप्त कर सकता है। 'जागो ग्राहक जागो' कार्यक्रम से उपभोक्ताओं को बहुत लाभ हैं। वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होते हैं। कोई भी उत्पादक उन्हें गुणवत्ताहीन वस्तु देकर ठग नहीं सकता तथा निश्चित मूल्य से अधिक मूल्य नहीं ले सकता। यदि किसी ग्राहक के साथ कोई धोखा होता है तो वह उपभोक्ता न्यायालय (कंज़्यूमर फोर्म) में शिकायत कर सकता है और तुरंत न्याय प्राप्त कर सकता है।

40. जंक फूड : स्वास्थ्य का सर्वनाश

संकेत-बिंदु– • जंक फूड से आशय • युवा पीढ़ी का लगाव • जंक फूड की हानियाँ • विकल्प।

जंक फूड से आशय तले-भुने अल्पाहार से है: जैसे–पिज़्ज़ा, बर्गर, चिप्स, कैंडी आदि। कुछ लोग ज़ाइरो, तको, फिश और चिप्स जैसे शास्त्रीय भोजन को जंक फूड मानते हैं। जंक फूड की श्रेणी में क्या-क्या आता है, यह सामाजिक स्तर पर निर्भर करता है। उच्च वर्ग के लिए जंक फूड की सूची बहुत लंबी है, जबकि मध्यम वर्ग केवल कुछ ही वस्तुओं को जंक फूड में सम्मिलित करता है। युवा पीढ़ी को जंक फूड से अत्यधिक लगाव है। यह युवाओं के दैनिक जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। उन्हें दूध, दही, मक्खन, खीर जैसे भारतीय खाद्यों से अरुचि हो गई है। जंक फूड देखने में आकर्षक और खाने में चटपटे और स्वादिष्ट लगते हैं; अतः ये युवाओं को ही नहीं, अपितु सभी को पसंद आते हैं। जंक फूड खाने में जितने स्वादिष्ट होते हैं, स्वास्थ्य के लिए उतने ही हानिकारक होते हैं। इनमें नमक, चीनी तथा वसा की मात्रा अधिक होती है। जंक फूड के सेवन से हृदय से संबंधित रोग, कैंसर, मोटापा, उच्च रक्तचाप, हड्डियों की समस्या, मधुमेह, मानसिक रोग, पाचन तंत्र, यकृत और गुर्दे संबंधी अनेक रोग हो जाते हैं। इस प्रकार जंक फूड स्वास्थ्य का सर्वनाश कर देता है। इसका विकल्प यही है कि युवकों को नित्य शुद्ध, सात्विक और पौष्टिक आहार करना चाहिए, जो तन और मन दोनों को स्वस्थ रख सकता है।

41. मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

संकेत-बिंदु– • 'सभी मज़हब एक • धर्म के सच्चे स्वरूप को न पहचानने से हानि • सच्चे धर्म का अर्थ • मित्रता व सहयोग का मार्ग।

सभी धर्म अर्थात् मज़हब एक परम सत्य को जानने, पहचानने और उस तक पहुँचने के विभिन्न मार्ग हैं, जिनमें कहीं कोई टकराव नहीं, कोई विरोध नहीं। संसार का कोई भी धर्म, मत या मज़हब मनुष्य को ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, शत्रुता, हिंसा का पाठ नहीं पढ़ाता। संपूण मानव-जाति का कल्याण, सत्याचरण, प्रेम और मैत्री, सेवा, दया, परोपकार, करुणा, व सहयोग सभी धर्मों के आधारभूत तत्त्व हैं। इस मूलतत्त्व को भूलकर फिर क्यों लोग मज़हबी टकराव पैदाकर देश, समाज और विश्व की शांति को भंग करते हैं? क्यों एक-दूसरे के बैरी हो जाते हैं? ऐसा वे ही लोग करते हैं, जो या तो धर्म के सच्चे स्वरूप को पहचानते नहीं हैं या अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए लोगों में धार्मिक उन्माद पैदाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। मज़हबी कट्टरपन के उन्माद में लोग एक-दूसरे का गला काटने को तैयार हो जाते हैं। ऐसे में लोग धर्म या मज़हब का सच्चा अर्थ भूल जाते हैं। धर्म तो मनुष्य को उदार या विनम्र बनाता है, उसे सभ्य और सुसंस्कृत करता है। धर्म तोड़ने को नहीं जोड़ने का काम करता है। यह आपसी मनमुटाव, बैर का मार्ग नहीं, बल्कि मित्रता और सहयोग का मार्ग दिखाता है। कोई धर्म ऊँचा या नीचा कैसे हो सकता है, जब सबका मूलतत्त्व और उद्देश्य एक ही है। सच तो यही है–'मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।'

42. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु : भारतीय लोकतंत्र का गौरव

संकेत-बिंदु– • परिचय • राष्ट्रपति पद • भारतीय लोकतंत्र का गौरव • विश्व के लिए प्रेरणा।

भारत की नव-निर्वाचित राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का जन्म 22 जून, 1958 ई० को ओडिशा के मयूरभंज जिले के ऊपरबेड़ा गाँव में हुआ। इनके पिता श्री बिरंची नारायण टुडू गाँव के प्रधान थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में तथा उच्च शिक्षा भुवनेश्वर में हुई। स्नातक शिक्षा पूर्ण करके इन्होंने सन् 1979 में ओडिशा सचिवालय में नौकरी कर ली। इसके पश्चात् सन् 1994 से 1997 तक रायरंगपुर के एक विद्यालय में शिक्षण कार्य किया। इनका विवाह पहाड़पुर गाँव के श्यामचरण मुर्मु के साथ हुआ। श्यामचरण मुर्मु बैंक में फील्ड ऑफिसर थे। द्रौपदी मुर्मु ने सन् 1997 में रायरंगपुर नगर पंचायत के पार्षद का चुनाव जीतकर अपना राजनैतिक जीवन प्रारंभ किया। ये रायरंगपुर विधानसभा से दो बार विधायक चुनी गईं। नवीन पटनायक सरकार में सन् 2000 से 2004 तक मंत्री रहीं तथा सन् 2015 से 2021 तक झारखंड की राज्यपाल भी रहीं। 25 जुलाई, 2022 ई० को द्रौपदी मुर्मु ने भारत गणराज्य के 15वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। देश के शीर्ष संवैधानिक पद पर आसीन होने वाली वे प्रथम आदिवासी महिला हैं। यह भारतीय लोकतंत्र का सौंदर्य है कि ओडिशा के रायरंगपुर जैसे आदिवासी क्षेत्र की बेटी अब देश की प्रथम नागरिक और पाँच वर्ष के लिए उस राष्ट्रपति भवन की निवासी होंगी, जो भारतीय इतिहास तथा संस्कृति की स्मृतियों का श्रेष्ठतम संग्रहालय है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

द्रौपदी मुर्मु का व्यक्तित्व व्यसन रहित और प्रेरणादायी है। सनातन धर्म में इनकी गहरी आस्था है। वे शुद्ध शाकाहारी हैं और 'सादा जीवन, उच्च विचार' इनके जीवन का आदर्श है। इनका राष्ट्रपति बनना इस बात को सिद्ध करता है कि भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र ही नहीं, बल्कि श्रेष्ठतम लोकतंत्र भी है। जाति, धर्म, भाषा और रंगभेद की आग में जलते विश्व के लिए यह एक प्रेरणादायी उदाहरण है।

43. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए०आई०)

संकेत-बिंदु– • कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है? • कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार • अनुप्रयोग • लाभ-हानि • सकारात्मक उपयोग।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है–बनावटी तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता। मशीनें हमारे कार्य को सरल बनाती हैं, लेकिन जब मशीनों में समस्याओं को सुलझाने और परिणाम देने की मनुष्य जैसी क्षमता विकसित कर दी जाती है तो यह कार्य 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' कहलाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जनक जॉन मैकार्थी के अनुसार यह बुद्धिमान मशीनों को बनाने का विज्ञान और अभियांत्रिकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर विज्ञान की उन्नत शाखाओं में से एक है। एयर कंडीशनर, कंप्यूटर, मोबाइल, बायोसेंसर, वीडियो गेम, रोबोट आदि उपकरण इसके उदाहरण हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विभाजन दो श्रेणियों में किया जाता है। प्रथम श्रेणी के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तीन प्रकार हैं–संकुचित कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सामान्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उत्तम कृत्रिम बुद्धिमत्ता। द्वितीय श्रेणी के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता के चार प्रकार हैं–पूर्णतः प्रतिक्रियात्मक, सीमित स्मृति, मस्तिष्क सिद्धांत और आत्म-चेतन। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मुख्यतः पाँच अनुप्रयोग हैं–'ज्ञान' अर्थात् दुनिया के बारे में जानकारी प्रस्तुत करना, 'विचार' अर्थात् तार्किक कसौटी के माध्यम से समस्याओं को हल करना, 'संचार' अर्थात् मौखिक और लिखित भाषा को समझना, 'योजना' अर्थात् लक्ष्य निर्धारित करना और उसे प्राप्त करना, 'अनुभूति' अर्थात् ध्वनियों, चित्रों और अन्य संवेदी माध्यमों से अनुमान लगाना। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनेक लाभ हैं; जैसे–कार्य को सरल बनाना, सीखने की प्रक्रिया को तीव्र करना, चिकित्सा, दैनिक गतिविधियों, अनुसंधान और विकास कार्यों में सहायक होना आदि। लाभ के साथ-साथ इसकी कुछ हानियाँ भी हैं; जैसे–मशीनों पर अत्यधिक निर्भरता, आलस्य में वृद्धि, कार्यक्षमता में कमी, अधिक खर्च, संवेदनहीनता, बेरोजगारी आदि। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जाति के विकास में अत्यंत सहायक है, लेकिन यह तभी कल्याणकारी है, जब इसका उचित और सकारात्मक उपयोग किया जाए।

44. एक भारत, श्रेष्ठ भारत

संकेत-बिंदु– • योजना का प्रारंभ • ऐसी योजनाओं की आवश्यकता क्यों? • विद्यालयों में इसे कार्यरूप में कैसे लाया गया? • प्रभाव।

'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' एक नई और प्रभावशाली योजना है। इस योजना की घोषणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 31 अक्टूबर, 2015 ई० को सरदार वल्लभभाई पटेल की 140वीं वर्षगाँठ के अवसर पर की। सरदार पटेल का जन्मदिन देश में 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। भारत विश्व में अपनी एकता, अखंडता, शांति और सद्भाव के लिए जाना जाता है। देश की एकता को मज़बूत करने के लिए ऐसी योजनाओं की आवश्यकता है। इस योजना का उद्देश्य वर्तमान सांस्कृतिक संबंधों के माध्यम से देश के विभिन्न भागों में एकता को बढ़ावा देना है। इस योजना के अनुसार प्रतिवर्ष एक राज्य दूसरे राज्य से जुड़ेगा। दोनों राज्य संगीत कार्यक्रम, फूड फेस्टिवल, साहित्यिक कार्यक्रम, बुक फेस्टिवल और यात्राओं द्वारा अपनी-अपनी समृद्ध विरासत को एक-दूसरे के सामने रखेंगे और परस्पर अपनी लोकप्रियता बढ़ाएँगे। अगले वर्ष वे दोनों राज्य अन्य दो राज्यों से जुड़ेंगे। इस प्रकार पूरे देश के लोग विभिन्न राज्यों की संस्कृति, परंपराओं और तौर-तरीकों को जानेंगे। इस योजना को प्रभावशाली बनाने के लिए 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' प्रतियोगिता का आरंभ किया गया है। इसमें प्रधानमंत्री ने सामान्य जनता से सरकारी पोर्टल 'My Gov.in' के माध्यम से अपने दृष्टिकोण, विचारों और सुझावों को देने का निवेदन किया है। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' योजना को विद्यालयों में कार्यरूप में लाने के लिए योजना में भाग लेने वाले दोनों राज्यों के छात्र एक-दूसरे राज्य की संस्कृति, परंपरा और भाषा के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक-दूसरे राज्य में जाएँगे। इस प्रकार यह एक प्रभावशाली योजना सिद्ध होगी।

45. योग : विश्व को भारत की अनुपम देन

संकेत-बिंदु– • योग भारत की देन • योग का अर्थ • योग के प्रकार • योग का महत्त्व • विश्व योग दिवस।

योग विश्व को भारत की अनुपम देन है। 'योग' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। योग भारत के षड्दर्शनों में से एक है। महर्षि पतंजलि को 'योग दर्शन' का प्रणेता माना जाता है। योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है। महर्षि पतंजलि के अनुसार–"योगश्चित्तवृत्ति निरोधः" अर्थात् चित्त की वृत्तियों पर नियंत्रण करना योग है। योग के आठ अंग हैं–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इन आठ अंगों के द्वारा ही चित्त पर नियंत्रण किया जा सकता है। 'शिव संहिता' में योग के चार प्रकार बताए गए हैं–मंत्रयोग, हठयोग, लययोग और राजयोग। इसके अलावा भगवद्गीता में कर्मयोग और ज्ञानयोग का भी उल्लेख है। योग में सफलता अभ्यास के द्वारा ही संभव है; अतः प्रतिदिन योग का अभ्यास करना चाहिए। वर्तमान समय में लोग अपनी व्यस्त जीवन-शैली के कारण तनावग्रस्त रहने लगे हैं। ऐसे में योग अत्यंत लाभकारी है। यह तन-मन को स्वस्थ करता है। नित्य योगाभ्यास करने से तनाव पूर्णतः नष्ट हो जाता है और मन-मस्तिष्क को शांति प्राप्त होती है। योगाभ्यास किसी योग्य प्रशिक्षक की देख-रेख में ही करना चाहिए। योग के महत्त्व को देखते हुए 11 दिसंबर, 2014 ई० को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्रत्येक वर्ष 21 जून को 'विश्व योग दिवस' की मान्यता प्रदान की। 21 जून, 2015 ई० को पहला विश्व योग दिवस मनाया गया। इसका आयोजन विश्व के 192 देशों में हुआ, जिनमें बहुत-से मुस्लिम देश भी हैं। योग का उद्देश्य "सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।" है, जिससे एक स्वस्थ और सुखी विश्व का निर्माण हो।

46. कोरोना और उसके बाद की दुनिया

संकेत-बिंदु– • कोरोना एक भयंकर महामारी • जन-धन की अपार क्षति • नियंत्रण • जन-जीवन में बदलाव।

कोविड-19 (कोरोना) एक भयंकर महामारी है। सन् 2019 और 2020 में इसने जो विनाश-लीला दिखाई उसे दुनिया सदियों तक नहीं भूल सकेगी। इसके कारण लाखों लोग अकाल ही काल के गाल में समा गए। संसार में जन-धन की अपार क्षति हुई। सब जगह त्राहि-त्राहि मच गई। संसार के अनेक देशों के वैज्ञानिकों ने इस महामारी से बचाव के लिए वैक्सीन तैयार की, इनमें भारत भी शामिल है। भारत में कोरोना से बचाव के लिए दो वैक्सीनें तैयार की गईं। वैक्सीनेशन (टीकाकरण) की सहायता से सन् 2021 के अंत तक इस महामारी पर नियंत्रण पा लिया गया। कोरोना पर केवल नियंत्रण किया गया है, यह समाप्त नहीं हुआ है। इसे समाप्त करने के लिए किसी प्रभावशाली औषधि के निर्माण की आवश्यकता है। हर बड़ी आपदा से जन-जीवन में कुछ-न-कुछ बदलाव अवश्य आता है। कोरोना के बाद भी दुनिया में अनेक बदलाव आए। लोगों की जीवन-शैली बदल गई। अब लोग स्वास्थ्य और स्वच्छता के विषय में पहले से अधिक सचेत हो गए हैं। शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले खाद्य-पदार्थों का अधिक सेवन किया जाने लगा है। कोरोना काल में लोग परिवार के साथ मिलकर रहे; अतः उन्हें संयुक्त परिवार के महत्त्व का ज्ञान हुआ। उद्योगों और कार्यालयों में 'वर्क फ्रॉम होम' की नई कार्य-शैली का प्रचलन हुआ। कोरोना में लाखों लोगों ने अपनी नौकरियाँ खो दीं। आजीविका

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

के लिए उन्हें छोटे-छोटे स्वरोजगार करने पड़े; अतः अब लोगों की स्वरोजगार में रुचि बढ़ रही है। शिक्षा के क्षेत्र में 'ऑनलाइन शिक्षा' की पद्धति का चलन हो गया। शारीरिक दूरी के नियम का पालन करने के लिए सभी सरकारी विभागों और औद्योगिक संस्थानों में इलेक्ट्रॉनिक पद्धति अपनाई जा रही है। दुनिया के सभी देश अपने चिकित्सा संसाधनों की वृद्धि करने में जुटे हुए हैं। विदेश-यात्रा के नियमों में परिवर्तन हो गए हैं। दुनिया को स्वार्थी और परोपकारी देशों की परख हो गई है। इस प्रकार कोरोना के बाद दुनिया बहुत बदल गई है। यह बदलाव समाज, शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय, राजनीति, अंतरराष्ट्रीय संबंधों आदि में स्पष्ट रूप से नज़र आ रहा है।

47. नीरज चोपड़ा : भारत का गौरव

संकेत-बिंदु– • देश और नागरिक • नीरज चोपड़ा का सामान्य परिचय • उपलब्धियाँ • टोक्यो ओलंपिक में प्रदर्शन।

देश और नागरिक का गहरा संबंध होता है। एक अच्छा नागरिक अपनी प्रतिभा और कर्तव्यनिष्ठा से अपने देश का सिर गर्व से ऊँचा कर देता है। नीरज चोपड़ा भारत के ऐसे ही सपूत हैं, जिन्होंने अपनी खेल प्रतिभा से देश को गौरवान्वित किया है। नीरज चोपड़ा एक भारतीय एथलीट हैं, जो ट्रैक एंड फील्ड के जैवलिन थ्रो (भाला फेंक) नामक खेल से जुड़े हैं। इनका जन्म 24 दिसंबर, 1997 ई० को हरियाणा के एक गाँव में हुआ था। इनके पिता श्री सतीश कुमार एक किसान और माता श्रीमती सरोज देवी एक गृहिणी हैं। इनकी प्रारंभिक शिक्षा पानीपत में और उच्च शिक्षा चंडीगढ़ में हुई। वर्तमान में ये भारतीय सेना में सूबेदार के पद पर तैनात हैं। नीरज चोपड़ा की खेल-उपलब्धियाँ स्वर्णिम हैं। इन्होंने एशियाई जूनियर चैंपियनशिप-2016 में रजत पदक, दक्षिण एशियाई खेल-2016 में स्वर्ण पदक, एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप-2017 में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इनके श्रेष्ठ प्रदर्शन को देखकर भारत सरकार ने इन्हें 'अर्जुन अवार्ड' से सम्मानित किया। 7 अगस्त, 2021 ई० को टोक्यो ओलंपिक के जैवलिन थ्रो फाइनल में नीरज चोपड़ा ने 87.58 मीटर की दूरी पर भाला फेंककर स्वर्ण पदक प्राप्त किया और आसमान में तिरंगा लहरा दिया। उनकी इस उपलब्धि पर सारा देश गर्व और खुशी से झूम उठा। धन्य है भारत का यह सपूत!

48. डिजिटल इंडिया

संकेत-बिंदु– • परिचय • अभियान का प्रारंभ • डिजिटल इंडिया के प्रमुख स्तंभ • लाभ • कमियाँ।

'डिजिटल इंडिया' भारत को समृद्ध करने के लिए भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक अभियान है। इसका उद्देश्य सभी छोटे-बड़े सरकारी विभागों को इंटरनेट के माध्यम से जनता के साथ जोड़ना और यह सुनिश्चित करना है कि कागज़ का प्रयोग किए बिना सरकारी सेवाएँ इलेक्ट्रॉनिक रूप से जनता तक पहुँच सकें। इस अभियान का प्रारंभ देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 1 जुलाई, 2015 ई० को देश के प्रमुख उद्योगपतियों की उपस्थिति में किया। इस अभियान के तीन मुख्य घटक हैं–डिजिटल आधारभूत ढाँचे का निर्माण करना, इलेक्ट्रॉनिक रूप से सरकारी सेवाओं को जनता तक पहुँचाना और डिजिटल साक्षरता। इसके लिए एक द्विपक्षीय आधार का निर्माण किया जाएगा, जहाँ सेवा प्रदाता और उपभोक्ता दोनों को लाभ होगा। 'डिजिटल इंडिया अभियान' के नौ प्रमुख स्तंभ हैं–ब्रॉडबैंड हाइवे, घर-घर मोबाइल फोन की पहुँच, पब्लिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम, ई-गवर्नेंस–प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकार में सुधार, ई-क्रांति सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी, सभी के लिए सूचना, इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण, आई०टी० नौकरियाँ, अगेती फसल कार्यक्रम अर्थात् भविष्य की तैयारी। 'डिजिटल इंडिया अभियान' से भ्रष्टाचार में कमी, सरकारी कार्यालयों में लंबी लाइनों से छुटकारा, देश का तेजी से विकास, रोजगार के नए अवसर, घर बैठे बैंकिंग लेन-देन और खरीदारी आदि अनेक लाभ हैं। लाभ के साथ-साथ इस अभियान की कुछ कमियाँ भी हैं। गरीब और अनपढ़ लोग इसका लाभ नहीं उठा सकते। इसके अलावा गोपनीयता का अभाव, डाटा सुरक्षा नियमों का अभाव, नागरिक स्वायत्तता का हनन, साइबर असुरक्षा आदि भी इसकी कुछ कमियाँ हैं। 'डिजिटल इंडिया' देश के विकास में एक क्रांतिकारी कदम है, लेकिन इसकी सफलता और उत्तम परिणामों के लिए इसकी कमियों को दूर करना अत्यंत आवश्यक है।

49. डिजिटल भुगतान : समय की माँग

संकेत-बिंदु– • डिजिटल भुगतान क्या है? • डिजिटल भुगतान के तरीके • लाभ • महत्त्व।

'डिजिटल भुगतान' एक ऐसा लेन-देन है, जो डिजिटल या ऑनलाइन रीति के माध्यम से होता है। इसमें पैसे का कोई भौतिक आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि भुगतानकर्ता और प्राप्तकर्ता दोनों पक्ष पैसे का आदान-प्रदान करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का उपयोग करते हैं। भारत में डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के लिए अनेक तरीके उपलब्ध हैं, जिनमें मुख्य हैं–बैंकिंग कार्ड, प्वाइंट ऑफ सेल (पी०ओ०एस०), इंटरनेट बैंकिंग, यू०एस०एस०डी०, यू०पी०आई०, मोबाइल बैंकिंग, आई०पी०एस०, मोबाइल वॉलेट, बैंक प्रीपेड कार्ड, माइक्रो ए०टी०एम०, भीम एप आदि। डिजिटल भुगतान के अनेक लाभ हैं। यह भुगतान पारंपरिक लेन-देन की तुलना में अधिक त्वरित, सरल, सुविधाजनक और कम खर्चीला है। यह अत्यंत सुरक्षित है, क्योंकि इसमें पैसे के खो जाने, लूटे जाने या डकैती आदि का कोई जोखिम नहीं है। इसमें भुगतानकर्ता को विशेष छूट और उपहार का लाभ मिलता है। भुगतान का स्पष्ट बिल प्राप्त होता है, जिससे भुगतानों पर नज़र रखना आसान है। इससे अपने बजट को नियंत्रित रखा जा सकता है। इसके कारण यात्रा और खरीदारी करते समय नकद पैसा ले जाने की आवश्यकता नहीं है। इस लेन-देन के द्वारा लाइनों में लगने से बचा जा सकता है और शारीरिक दूरी के नियम का पालन किया जा सकता है। डिजिटल भुगतान करते समय साइबर अपराधियों से सावधान रहना अत्यंत आवश्यक है। डिजिटल भुगतान प्रणाली 'डिजिटल इंडिया' का एक प्रमुख अंग है। इसके महत्त्व और लाभों को देखते हुए कहा जा सकता है कि डिजिटल भुगतान आज के समय की माँग है।

50. जी०एस०टी० : एक बड़ा आर्थिक सुधार

संकेत-बिंदु– • जी०एस०टी० का तात्पर्य • प्रारंभ • कर की दरें • लाभ।

जी०एस०टी० का अर्थ है–गुड्स एंड सर्विसेज़ टैक्स अर्थात् 'वस्तु एवं सेवा कर'। यह एक अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था है, जिसका संचालन 'वस्तु एवं सेवा कर परिषद्' द्वारा होता है। भारत के वित्त मंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं। जी०एस०टी० को 1 जुलाई, 2017 ई० को लागू किया गया। इससे केंद्र सरकार और राज्य सरकारों द्वारा भिन्न-भिन्न दरों पर लगाए जा रहे विभिन्न करों को हटाकर, पूरे देश में एक ही अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था लागू हो गई है। अर्थशास्त्री इसे स्वतंत्रता के पश्चात् का सबसे बड़ा आर्थिक सुधार बता रहे हैं। 'वस्तु एवं सेवा कर परिषद्' (जी०एस०टी० काउंसिल) ने पाँच तरह की कर दरें निर्धारित की हैं–0, 5, 12, 18 एवं 28 प्रतिशत। कुछ आवश्यक वस्तुओं को जी०एस०टी० से मुक्त रखा गया है। इस कर व्यवस्था से राज्य सरकारों और केंद्र सरकार के राजस्व में कोई विशेष कमी नहीं आएगी। 'वस्तु एवं सेवा कर' व्यवस्था के अनेक लाभ हैं; जैसे–सरल अनुपालन, पारदर्शिता, कर दरों में एकरूपता, करों पर कराधान की समाप्ति, प्रतिस्पर्धा में सुधार, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण, अधिक राजस्व निपुणता आदि। आम भारतवासी को जी०एस०टी० से सबसे बड़ा लाभ यह है कि पूरे देश में किसी भी वस्तु की खरीद पर एक ही टैक्स चुकाना पड़ेगा। अतः देश में समान कर व्यवस्था लागू करना एक बहुत बड़ा आर्थिक सुधार है और सरकार का राष्ट्रहित में एक बड़ा कदम है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

51. स्टार्ट अप इंडिया : एक महत्त्वाकांक्षी योजना

संकेत-बिंदु– • योजना की घोषणा • शुभारंभ • उद्देश्य • लाभ।

केंद्र सरकार द्वारा देश के नागरिकों के बीच उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देने और युवकों को उसके लिए प्रोत्साहित करने हेतु 'स्टार्ट अप इंडिया' योजना प्रारंभ की गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त, सन् 2015 ई० को इस योजना की घोषणा की। इसके पश्चात् तत्कालीन वित्त मंत्री अरुण जेटली ने 16 जनवरी, 2016 ई० को इस योजना का उद्घाटन किया। इस योजना का उद्देश्य देश में नवाचार और स्टार्ट अप के पोषण के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) का निर्माण करना है, जो स्थायी आर्थिक विकास को बढ़ावा देगा। यह तंत्र हितधारकों के लिए एक ऐसा मंच तैयार करेगा, जहाँ उन्हें एक-दूसरे से बातचीत करने, ज्ञान का आदान-प्रदान करने और अत्यधिक गतिशील वातावरण में एक-दूसरे के साथ भागीदार बनने का अवसर प्राप्त होगा। इस योजना के द्वारा सरकार युवकों को वित्तीय सहायता, मार्गदर्शन और उद्योग-भागीदारी के अवसर प्रदान करके भारत में स्टार्ट अप को बढ़ावा देना चाहती है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि देश के युवक रोजगार के लिए नहीं भटकेंगे, बल्कि वे दूसरों को भी रोजगार, दे सकेंगे।

52. रैपिड रेल : एक अनोखी सौगात

संकेत-बिंदु– • परियोजना का स्वरूप • दिल्ली-मेरठ रैपिड रेल • विशेषताएँ • मेरठवासियों के लिए सौगात।

राजधानी दिल्ली और उससे जुड़े शहरों के बीच आवागमन को बेहतर बनाने के लिए 'नेशनल कैपिटल रीजन ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन' (एन०सी०आर०टी०सी०) ने एक परियोजना प्रारंभ की है। यह परियोजना रैपिड रेल पर आधारित है, जिसका नाम है–'रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम' (आर०आर०टी०एस०)। इसके अंतर्गत तीन रैपिड रेल-गलियारे (कॉरिडोर) बनाए जाएँगे। ये तीन कॉरिडोर हैं– दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ, दिल्ली-गुड़गाँव-अलवर और दिल्ली-पानीपत। इनमें दिल्ली-मेरठ रैपिड रेल कॉरिडोर के निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 8 मार्च, 2019 ई० को इस कॉरिडोर की आधारशिला रखी थी। यह कॉरिडोर दिल्ली के सराय काले खाँ से मेरठ के मोदीपुरम तक होगा। इस परियोजना का अनुमानित खर्च 30,274 करोड़ रुपये है। यह रैपिड रेल परियोजना सन् 2025 तक पूर्ण हो जाएगी। दिल्ली-मेरठ रैपिड रेलमार्ग की लंबाई 82.15 किलोमीटर है, जिसमें 63.03 किलोमीटर हिस्सा एलिवेटेड और 14.12 किलोमीटर हिस्सा भूमिगत (अंडरग्राउंड) है। रैपिड रेल की गति 180 किलोमीटर प्रतिघंटा है, जिससे दिल्ली से मेरठ का सफर एक घंटे में तय हो जाएगा। इस रेलमार्ग पर दिल्ली से मेरठ तक दो डिपो स्टेशनों सहित 24 स्टेशन होंगे। रैपिड रेल सभी आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त होगी। इसका सफर मेट्रो रेल से भी अधिक सुखद और सुहावना होगा। दिल्ली-मेरठ रैपिड रेल भारत का पहला आर०आर०टी०एस० होगा। इसके तैयार होते ही मेरठ का नक्शा ही बदल जाएगा। यह परियोजना पश्चिमी उत्तर प्रदेश और विशेषकर मेरठवासियों के लिए एक अनोखी सौगात है।

53. संयुक्त परिवार अथवा संयुक्त परिवार : आज की आवश्यकता

संकेत-बिंदु– • संयुक्त परिवार का अर्थ • संबंधों में पड़ती दरार • जोड़ने से लाभ • युवा पीढ़ी को रिश्तों का ज्ञान • मिल-जुलकर रहने की भावना • अच्छे संस्कारों का ग्रहण • बुजुर्गों की उपस्थिति व महत्ता • अकेलेपन से मुक्ति।

परिवार समाज की सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई है। समाज में दो प्रकार के परिवार होते हैं–एकल परिवार और संयुक्त परिवार। पहले समाज में संयुक्त परिवार अधिक होते थे, लेकिन आज एकल परिवारों का चलन हो गया है। संयुक्त परिवार प्रायः समाप्त ही हो गए हैं। संयुक्त परिवार उन परिवारों को कहते हैं, जिनमें माता-पिता, भाई-भतीजे और उनकी संतानें सब मिलकर रहते हैं, सबका भोजन एक ही चूल्हे पर बनता है और आय-व्यय का हिसाब परिवार के मुखिया के हाथों में होता है। ऐसे परिवारों में परिवार का मुखिया सभी सदस्यों में कार्यों का बँटवारा कर देता है। सब अपने-अपने कार्यों के लिए मुखिया के प्रति उत्तरदायी होते हैं। आज पारिवारिक संबंधों में दरार पड़ गई है। इसका कारण यह है कि परिवार के बच्चे पढ़-लिखकर बाहर नौकरी करने लगे हैं। उनका अपना अलग घर हो गया है। वे अपनी आय-व्यय का हिसाब स्वयं रखते हैं। इस प्रकार संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवारों में बदल गए हैं। संयुक्त परिवार के अनेक लाभ हैं। इन परिवारों में व्यक्ति अधिक सुरक्षित और सुखी होता है। लोग कठिन-से-कठिन काम को मिलकर कर लेते हैं और बड़ी-से-बड़ी विपत्ति को भी सहन कर लेते हैं। युवा पीढ़ी को रिश्तों का ज्ञान और उनके महत्त्व का पता संयुक्त परिवार में रहकर ही चलता है। लोगों में मिल-जुलकर रहने की भावना का विकास होता है, जिससे आपसी प्रेम और भाईचारे की भावना सुदृढ़ होती है। परिवार के बच्चों को दादा-दादी के रूप में अनुभवी मार्गदर्शक मिल जाते हैं। वे परिवार के बच्चों में अच्छे संस्कारों के बीज बोकर उन्हें देश का सभ्य और सुसंस्कृत नागरिक बनाते हैं। संयुक्त परिवार में किसी भी स्थिति में किसी भी सदस्य को अकेलेपन की समस्या से नहीं जूझना पड़ता, जिससे परिवार का कोई भी सदस्य अवसाद का शिकार नहीं होता। कम आय में भी अधिक-से-अधिक लोगों का पालन-पोषण हो जाता है। संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक बहुत सुंदर और कल्याणकारी परंपरा है, हमें इसे अवश्य बचाए रखना चाहिए।

54. हमारे देश पर पड़ता विदेशी प्रभाव

संकेत-बिंदु– • हमारा देश • इसका प्राचीन रूप एवं संस्कृति • विदेशी प्रभाव परिणाम।

हमारा देश संसार का प्राचीनतम देश है। आर्यावर्त, ब्रह्मावर्त, जंबूद्वीप, भारतवर्ष, हिंदुस्तान, इंडिया आदि इसके अनेक नाम हैं। प्राचीनकाल में वर्तमान पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, नेपाल, भूटान, बाँग्लादेश सब इसी के अंग थे। अपने ज्ञान-विज्ञान और समृद्धि के कारण यह संसार में 'जगद्गुरु' और 'सोने की चिड़िया' के नाम से प्रसिद्ध था। 'अनेकता में एकता' की विशेषता वाली इसकी संस्कृति नैतिक मूल्यों का आगार है। यहाँ श्रीराम और श्रवण कुमार जैसे मातृ-पितृभक्त, भरत जैसे भ्रातृभक्त, सीता-सावित्री जैसी पतिव्रता, हरिश्चंद्र जैसे सत्यवादी, कर्ण-शिवि जैसे दानी, महावीर-गौतम जैसे परोपकारी हुए हैं। 'अतिथि देवो भव' और 'वसुधैव कुटुंबकम्' हमारी संस्कृति का आदर्श हैं। यहाँ नदियों और वृक्षों को भी पूजा जाता है। लेकिन आज विदेशी प्रभाव के कारण हम अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। उपभोक्तावादी विदेशी संस्कृति को हमने अपना लिया है और नैतिक मूल्यों को तिलांजलि दे दी है। हम अपनी सभी परंपराओं को भूल गए हैं। मर्यादाओं को तोड़ दिया है और पैसा कमाने की अंधी दौड़ में शामिल हो गए हैं। हमने स्वदेशी खान-पान, वेशभूषा, शिष्टाचार आदि को छोड़कर विदेशी खान-पान, वेशभूषा और आचार-व्यवहार अपना लिया है। अपनी संस्कृति से दूर होने के कारण हमारे जीवन की सुख-शांति समाप्त हो गई है और हम तनावग्रस्त जीवन जी रहे हैं। ईर्ष्या-द्वेष, स्वार्थ और भ्रष्टाचार के कारण हमारे समाज की दुर्गति हो रही है। हमें विदेशी प्रभाव से मुक्त होना होगा और मैथिलीशरण गुप्त जी की इन पंक्तियों पर ध्यान देना होगा–

हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पत्र-लेखन

पत्र-लेखन

यद्यपि आज दूरसंचार के साधनों के क्षेत्र में ज़बरदस्त क्रांति आई है और दूरभाष, फ़ैक्स, मोबाइल, इंटरनेट आदि साधनों का उपयोग हो रहा है, तथापि सर्वसाधारण के लिए पत्रों की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। आज भी समाज के विभिन्न वर्ग अपने प्रियजनों, माता-पिता तथा सगे-संबंधियों से संपर्क करने के लिए पत्रों का ही सहारा लेते हैं। इसी के साथ विभिन्न कार्यालयों, संस्थाओं आदि में कार्यालयीय कार्यवाही पत्रों के माध्यम से ही संचालित होती है। इस प्रकार पत्र-लेखन की उपयोगिता और आवश्यकता सर्वमान्य है।

श्रेष्ठ पत्र की विशेषताएँ

सरल और स्पष्ट–पत्र की भाषा सरल, सुबोध और सुग्राह्य होनी चाहिए। भाषा में सहजता और स्पष्टता होना आवश्यक है। अस्पष्ट और जटिल भाषा पत्र को नीरस और प्रभावहीन बना देती है।

संक्षिप्त और उद्देश्यपूर्ण–पत्र संक्षिप्त और उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। लंबे पत्र उबाऊ और प्रभावहीन होते हैं। पत्र-लेखक को गागर में सागर भरने का प्रयास करना चाहिए। यदि कई बातें लिखनी हों तो छोटे-छोटे अनुच्छेद बनाकर उन्हें संक्षेप में ही लिखना चाहिए।

आकर्षक और प्रभावशील–पत्र सुंदर तथा आकर्षक होना चाहिए। उसमें अनावश्यक काट-छाँट नहीं होनी चाहिए। भद्दा और अस्पष्ट लेख पत्र को प्रभावहीन बना देता है। पत्र लिखते समय विराम-चिह्नों और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

पूर्ण और मौलिक–पत्र सदैव पूर्ण होना चाहिए। उसमें कोई बात अधूरी नहीं होनी चाहिए। पत्र की भाषा और शैली मौलिक होनी चाहिए। उसे पढ़कर ऐसा नहीं लगना चाहिए कि जैसे उसे कहीं से देखकर लिखा गया है।

शिष्ट–पत्र-लेखन में शिष्टाचार का पालन करते हुए बड़ों को संबोधन और अभिवादन आदरपूर्वक, मित्रों को सौहार्दपूर्वक और छोटों को स्नेहपूर्वक लिखना चाहिए। किसी विषय पर असहमति होने पर भी लेखक को शिष्ट भाषा में ही अपना विरोध प्रकट करने की कला आनी चाहिए।

अनौपचारिक पत्र की विशेषताएँ

- इन पत्रों के संबोधन में आत्मीयता का परिचय देते हुए संबंध के अनुसार, प्रिय, आदरणीय, आदरणीया, पूज्नीय, पूजनीया आदि अवश्य लगाया जाता है।
- अभिवादन में संबंध के अनुसार सादर प्रणाम, चरण स्पर्श, नमस्कार, आशीष आदि लिखा जाता है।
- भाषा सरल एवं स्पष्ट होती है।
- विषयवस्तु को छोटे-छोटे अनुच्छेद में लिखा जाता है।
- समापन में बड़ों को अभिवादन एवं छोटों को स्नेह, आशीष आदि प्रेषित किया जाता है।

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

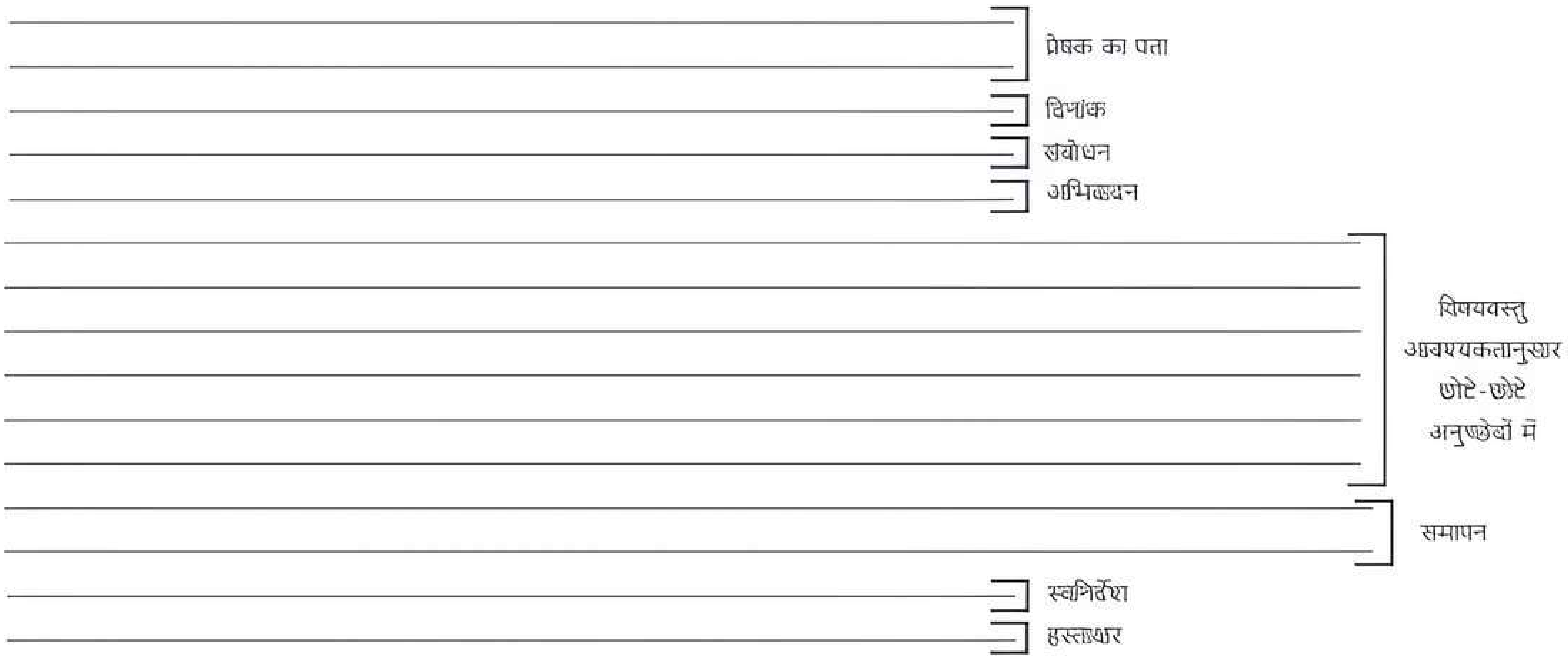

निर्देश–निम्नलिखित प्रत्येक विषय पर लगभग 100 शब्दों में पत्र-लेखन कीजिए।

1. **छात्रावास में रहकर पढ़ाई करने वाली अपनी छोटी बहन को फ़ैशन और बनाव-श्रृंगार में व्यर्थ समय न गँवाने की सलाह देते हुए एक पत्र लिखिए। (आप 25/2, गुलाबीबाग, जयपुर की रहने वाली नीरजा हैं।)**

   25/2, गुलाबीबाग,

   जयपुर।

   दिनांक : 1 अक्टूबर, 20XX

   प्रिय मानसी,

   शुभाशीष।

   हम सब यहाँ आनंदपूर्वक हैं। आशा है तुम भी स्वस्थ और सानंद होंगी। इस समय तो तुम परीक्षा की तैयारी में लगी होंगी। द्विवितीय आवधिक परीक्षा में अब अधिक समय शेष नहीं है।

   प्रथम आवधिक परीक्षा में तुम्हारा प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा है। अभी छुट्टियों में जब तुम घर आई थीं तो मैंने ध्यान दिया था कि तुम्हारे परिधानों और बनाव-श्रृंगार में काफ़ी बदलाव आ गया है। तुम्हारी रुचि फ़ैशन की ओर बढ़ती जा रही है। देखो मानसी, अच्छे कपड़े पहनना और सुंदर दिखना बुरी बात नहीं है, किंतु अति हर चीज़ की बुरी होती है। तुम्हारे जीवन का यह समय विद्या-अर्जन करने का है, इसलिए तुम्हें पूरी लगन व निष्ठा से केवल अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। यह समय यदि हाथ से निकल गया और तुमने फ़ैशन और दिखावे में इसे व्यर्थ गँवा दिया तो बाद में हाथ मलते रह जाना पड़ेगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

फ़ैशन और दिखावे की होड़ में व्यक्ति अंधा हो जाता है, अपव्यय करने लगता है और फिर अपनी इच्छाएँ पूरी करने के लिए गलत कार्य करने से भी पीछे नहीं हटता। मानसी, तुम तो एक समझदार लड़की हो। अपने लक्ष्य पर ध्यान दो। ऐसी सहेलियों से दूर रहो, जो केवल फैशन और बनाव-शृंगार को ही लड़कियों की पहचान समझती हैं। आधुनिकता का अर्थ फ़ैशन नहीं है, बल्कि विचारों से स्वतंत्र और चरित्र से सुदृढ़ होना है।

मेरी लिखी बातों पर गंभीरतापूर्वक विचार करना। मुझे आशा ही नहीं, विश्वास है कि तुम मुझे निराश नहीं करोगी।

तुम्हारी बड़ी बहन

नीरजा

2. **आप 45 सी, गंगोत्री अपार्टमेंट्स, अलकनंदा, दिल्ली में रहने वाली मालविका हैं। अपने पिता जी को अपनी माता जी के अस्वस्थ होने की सूचना देते हुए एक पत्र लिखिए।**

45 सी, गंगोत्री अपार्टमेंट्स

अलकनंदा,

नई दिल्ली- 110002

दिनांक : 5 दिसंबर, 20XX

परमपूज्य पिता जी,

सादर प्रणाम।

आपका पत्र मिला, जानकर प्रसन्नता हुई कि कंपनी की ओर से आपको फ़्लैट मिल गया है और खाने-पीने की भी अच्छी व्यवस्था हो गई है। माता जी को आपकी बहुत चिंता हो रही थी। पिछले तीन-चार दिनों से माता जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। उन्हें खाँसी और बुखार चल रहा है। सीने में दर्द की भी शिकायत है। मैंने डॉक्टर अरोड़ा को दिखाया था तो उन्होंने सीने का एक्स-रे और खून का टेस्ट कराया है। माता जी को हल्का-सा निमोनिया है। इलाज शुरू हो गया है। आप चिंता न करें। वे शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएँगी। मैं और मोहित माता जी का पूरा ध्यान रख रहे हैं। घबराने वाली कोई बात नहीं है। बस, आप अपना ख्याल रखिएगा।

मैं समय-समय पर आपको सूचित करती रहूँगी। मोहित का आपको सादर प्रणाम।

आपकी पुत्री

मालविका

3. **आप 234 ए, शांतिनगर, अलीगढ़ के निवासी सौरभ मिश्रा हैं। दिल्ली में रह रहे अपने बड़े भाई को अपनी पढ़ाई और भावी योजना के संबंध में बताते हुए एक पत्र लिखिए।**

234 ए, शांतिनगर,

अलीगढ़।

दिनांक : 20 जनवरी, 20XX

आदरणीय भाई साहब,

सादर प्रणाम।

मुझे परसों ही आपका पत्र मिला। आप सबकी कुशलता जानकर प्रसन्नता हुई। यहाँ भी सब स्वस्थ और प्रसन्न हैं।

भाई साहब, मेरी पढ़ाई अच्छी तरह चल रही है और मुझे आशा है कि मैं परीक्षा में अच्छे अंक लाकर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होऊँगा। आप तो जानते ही हैं कि गणित में मेरी विशेष रुचि है। इस वर्ष गणित ओलंपियाड में भी मैंने मैरिट कार्ड प्राप्त किया है। मैं चार्टर्ड एकाउंटेंट बनना चाहता हूँ; अतः मेरा दसवीं कक्षा में गणित के साथ वाणिज्य विषय लेने का विचार है।

मैं जानता हूँ कि सी० ए० बनने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ेगा, लेकिन मैं परिश्रम करने से नहीं घबराता। आप मेरे आदर्श रहे हैं। मैं आपके बताए मार्ग पर चलकर जीवन में अवश्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करूँगा। मैंने पिता जी से बात की है, वह मेरी कोचिंग के लिए मान गए हैं। समय-समय पर आपका भी मार्गदर्शन मिलता रहेगा। आशा है आप मेरे विचार से सहमत होंगे और शीघ्र ही पत्र लिखेंगे।

भाभी जी को मेरा सादर प्रणाम और मुनिया को प्यार।

आपका अनुज

सौरभ मिश्रा

4. **रेयान इंटरनेशनल स्कूल, गाजियाबाद के कन्या छात्रावास में रहने वाली अणिमा की ओर से दीदी और जीजा जी के विवाह की वर्षगाँठ पर शुभकामनाएँ भेजते हुए एक पत्र लिखिए।**

कमरा नं० 18

कन्या छात्रावास

रेयान इंटरनेशनल स्कूल,

गाजियाबाद।

दिनांक : 3 अगस्त, 20XX

आदरणीय दीदी व जीजा जी,

सादर नमस्ते।

आपको आपके विवाह की पाँचवीं वर्षगाँठ बहुत-बहुत मुबारक हो। इस अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए। ईश्वर करे कि आप दोनों जीवनभर इसी प्रकार एक साथ विवाह की वर्षगाँठ मनाते रहें और सदैव प्रसन्न रहें।

मैंने आप दोनों के लिए एक सुंदर-सा उपहार खरीदा है, जो मैं शीघ्र ही मिलकर आपको दूँगी। हाँ, मेरी पार्टी पक्की है।

मौसा जी और मौसी जी को सादर नमस्कार और नन्ही ईशानी को ढेर सारा प्यार।

आपकी छोटी बहन

अणिमा

5. **आप 348, पटेलनगर, नागपुर की शिवानी हैं। आपकी सखी वंदना आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका जा रही है। उसकी मंगलयात्रा के लिए शुभकामना-पत्र लिखिए।**

348, पटेलनगर,

नागपुर।

दिनांक : 20 मार्च, 20XX

प्रिय वंदना,

मधुर स्मृति।

कल ही तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई कि चाचा जी तुम्हें आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका भेज रहे हैं। तुम हमेशा ही विदेश जाने की बात किया करती थीं, अब तुम्हारी यह चिरसंचित अभिलाषा पूरी हो रही है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यहाँ की तरह अमेरिका में भी तुम अपनी पढ़ाई में पूरा ध्यान लगाओगी और अवश्य ही सफलता प्राप्त करोगी। वहाँ रहकर अपनी पुरानी सखी को भूल मत जाना और पत्र लिखकर अपने नए माहौल और मित्रों के बारे में अवश्य बताना। हमें भी यहाँ तुम्हारे बिना अच्छा नहीं लगेगा। मैं अब किससे रूठूँगी और कौन मुझे मनाएगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अमेरिका में तुम्हारे मौसा और मौसी जी भी तो रहते हैं, तुम वहाँ अकेली नहीं होंगी। तुम्हारे साथ चाची जी भी जा रही हैं। फिर तो तुम इस यात्रा का पूरा आनंद उठा सकोगी।
मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। ईश्वर तुम्हारी यात्रा मंगलमय बनाए। अमेरिका प्रवास तुम्हारे लिए शुभ हो। तुम कुछ बनकर अपने देश लौटो। वहाँ रहकर अपने देश का नाम ऊँचा करना। एक बार पुनः शुभ और सुरक्षित यात्रा के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारी अभिन्न सखी
शिवानी

6. आप 9/41, शास्त्रीनगर, मेरठ की रहने वाली अंजुमन हैं। अपनी सखी को उसके जन्मदिन पर बधाई देते हुए एक पत्र लिखिए।

9/41, शास्त्रीनगर,
मेरठ।

दिनांक : 10 अक्टूबर, 20XX

प्रिय कुलसुम,
मधुर स्मृति।
कल ही तुम्हारे जन्मदिन की पार्टी का निमंत्रण-पत्र मिला। कुलसुम, तुम सबसे पहले मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। यह जन्मदिन तुम्हारे लिए ढेर सारी खुशियाँ लाए। इस जन्मदिन पर मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकूँगी, इसके लिए क्षमा चाहती हूँ। मैं तुम्हें और तुम्हारी पार्टी को बहुत मिस करूँगी; पर क्या करूँ, उसी दिन आर्ट्स कॉलेज में मेरी प्रवेश-परीक्षा है। पता है, तुम्हारा पत्र पढ़कर पिछले वर्ष की यादें ताज़ा हो गईं। हमने कितनी मस्ती की थी। शारदा की सुनाई गई वह हास्य कविता तो मुझे अभी भी याद है और तुम्हें याद है, नरगिस तो नाचते-नाचते गिर ही पड़ी थी।
तुम आनंद से अपना जन्मदिन मनाना, समय मिलते ही मैं तुमसे मिलने अवश्य आऊँगी। एक बार फिर मेरी ओर से जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई। मम्मी और पापा तुम्हें आशीर्वाद भेज रहे हैं। मैं तुम्हारे लिए एक छोटा-सा उपहार भेज रही हूँ। उम्मीद है तुम्हें पसंद आएगा।
चाचा जी और चाची जी को मेरी ओर से सादर नमस्ते कहना।
तुम्हारी सखी
अंजुमन

7. आप 13/2 'घसियारी मंडी' लखनऊ के रहने वाले सुभाष सक्सेना हैं। आपके मित्र आर्यन को 'श्यामक नृत्य अकादमी' द्वारा ₹5000/- की छात्रवृत्ति प्रदान की गई है। उसे बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

13/2, घसियारी मंडी,
लखनऊ।

दिनांक : 24 अगस्त, 20XX

प्रिय आर्यन,
सस्नेह नमस्ते।

आज ही आकाश से पता चला कि तुम्हें इस वर्ष 'श्यामक नृत्य अकादमी' ने नृत्य प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ नर्तक चुना है और तुम्हें पाँच हज़ार रुपये वार्षिक की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई है। यह सुनकर मेरी प्रसन्नता का तो कोई ठिकाना ही नहीं रहा। मित्र, तुम्हें बहुत-बहुत बधाई। आखिर तुम्हारा नृत्य का जुनून रंग ले ही आया। मैं जानता था कि तुम मेहनत और अभ्यास से कुछ अवश्य कर दिखाओगे। यह छात्रवृत्ति प्राप्तकर तुमने दिखा दिया है कि यदि मन में दृढ़-इच्छा और लगन हो तो पढ़ाई के साथ-साथ अपनी रुचि के अनुकूल किसी अन्य क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त की जा सकती है। अब तो चाचा जी और चाची जी भी तुम्हारी इस उपलब्धि से प्रसन्न होंगे और वे भविष्य में तुम्हें नृत्य सीखने के लिए मना नहीं करेंगे। तुमने यह सच कर दिखाया है कि आज तो नृत्य के क्षेत्र में भी अनेक संभावनाएँ हैं।
तुम अकादमी की शान यूँ ही बनाए रखना और अगले वर्ष की नृत्य प्रतियोगिता जीतकर अकादमी का नाम और ऊँचा करना। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। एक बार पुनः मेरी बधाई स्वीकार करो और यूँ ही आगे बढ़ते जाओ।

तुम्हारा अपना
सुभाष सक्सेना

8. आप 206, प्रकाश निकेतन, गांधी मार्ग, भावनगर, गुजरात के शेखर हैं। आप हाल ही में ऊटी घूमकर आए हैं। अपनी ऊटी यात्रा के बारे में बताते हुए अपने मित्र मनोज को एक पत्र लिखिए।

206, प्रकाश निकेतन,
गांधी मार्ग,
भावनगर, गुजरात।

दिनांक : 9 अक्टूबर, 20XX

प्रिय मनोज,
सस्नेह नमस्ते।

तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैं दीदी, जीजा जी, दीपू और मणि के साथ ऊटी घूमने गया हुआ था। कल ही लौटा तो तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर बहुत खुशी हुई कि क्षेत्रीय स्तर पर चित्रकला प्रतियोगिता में तुमने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएँ।
मेरा पिछला सप्ताह कैसे बीत गया, पता ही नहीं चला। मेरी ऊटी यात्रा बहुत ही मज़ेदार रही। मैं इस यात्रा के अनुभव तुमसे साझा कर रहा हूँ; क्योंकि उन दिनों मुझे तुम्हारी बहुत याद आई थी।
हमने मैसूर से ऊटी तक की यात्रा बस से की। रास्ते में बाँदीपुर अभयारण्य में हमें चीतल, साँभर और हाथियों के झुंड दिखाई दिए। तुम्हें पता है ऊटी, यानि ऊटकमंड नीलगिरि पर्वत-शृंखला के सर्वोच्च शिखर पर बसा तमिलनाडु का सबसे रमणीय पर्वत-स्थल है। नीलगिरि पर्वतमाला में चक्करदार सर्पीली सड़कों पर चढ़ती हमारी बस से दिखने वाला प्रकृति का अद्भुत सौंदर्य देखकर मेरा मन अभिभूत हो गया। हरे-भरे वनों ने मेरा मन मोह लिया।
जब हम पहाड़ों के बीच समतल में बसी ऊटी नगरी पहुँचे तो यहाँ के अनुपम सौंदर्य ने हमें विमुग्ध कर दिया। मैंने अपने कैमरे में वह सौंदर्य कैद कर लिया है, मिलने पर तुम्हें दिखाऊँगा। इस नगर के बीचोबीच एक झील है, जिसमें नौका-विहार करते हुए ऐसा लग रहा था, मानो स्वर्गलोक में आ गए हों।
ऊटी में स्थित अनेक ऐतिहासिक इमारतों की वास्तुकला व नक्काशी देखकर हम हतप्रभ रह गए। कुछ को तो अब होटलों में परिवर्तित कर दिया गया है। ऊटी में एक अतिरमणीय वनस्पति उद्यान है, यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे फूल, सजावटी और विभिन्न औषधियों के पौधे हैं। हमने यहाँ जड़ी-बूटियों व औषधियों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की।
ऊटी में और भी दर्शनीय स्थल हैं; जैसे–टाइगर हिल, ऊटी झील, कालहट्टी प्रपात, आदिवासी तोड़ा लोगों की बस्ती। इन सबके बारे में मिलने पर विस्तार से तुम्हें बताऊँगा।
दोस्त, मैंने खूब फोटोग्राफ़ी की है। मैं तुम्हें वीडियो भेज रहा हूँ। एक बार तुम भी ऊटी अवश्य चलो। मैं दुबारा तुम्हारे साथ चलूँगा। दोस्तों के साथ घूमने का और ही आनंद है।
शेष मिलने पर। चाचा जी, चाची जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
शेखर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

9. आप बी-22, कुंज निवास, अंबाला, हरियाणा के रहने वाले अक्षय सिंह हैं। अपने मित्र को बड़े भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिए एक निमंत्रण-पत्र लिखिए।

बी-22, कुंज निवास

अंबाला, हरियाणा।

दिनांक : 11 अप्रैल, 20XX

प्रिय मित्र विवेक,

सप्रेम नमस्कार।

तुम्हें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भाई डॉ० अनिरुद्ध का विवाह 28 अप्रैल, 20XX को होना निश्चित हुआ है। मैं तुम्हें इस शुभ अवसर पर परिवारसहित आमंत्रित करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि तुम अवश्य ही अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ाओगे। हमारी होने वाली भाभी अंबाला की ही हैं और डॉक्टर हैं। अब घर में दो-दो डॉक्टर हो जाएँगे। मैंने भाभी को तुम्हारे बारे में बताया भी है। विस्तृत कार्यक्रम के लिए पिता जी ने अलग से निमंत्रण-पत्र भेज दिया है। अपने आगमन की तिथि और समय के विषय में सूचित करना, ताकि तुम्हें लेने के लिए स्टेशन पर गाड़ी भिजवा सकूँ।

तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा अभिन्न मित्र

अक्षय सिंह

10. आप 21, आदित्य सदन, अकबर रोड, जबलपुर के रहने वाले प्रशांत हैं। अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव के बारे में बताते हुए अपनी दादी जी को एक पत्र लिखिए।

21, आदित्य सदन,
अकबर रोड,
जबलपुर।

दिनांक : 20 नवंबर, 20XX

परम आदरणीया दादी जी,
सादर चरणस्पर्श।

बहुत दिनों से मैं आपको पत्र नहीं लिख सका। आप कैसी हैं? आशा है आप पूर्णरूप से स्वस्थ होंगी। दादी जी, मैं अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव की तैयारियों में लगा था।

इस वर्ष 17 नवंबर को हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया था। यह वार्षिकोत्सव मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था; क्योंकि विभिन्न कक्षाओं में प्रथम स्थान पाने वाले पुरस्कृत छात्रों में मैं भी सम्मिलित था। दादी, आपको पता है, मुझे वर्ष के सर्वश्रेष्ठ वक्ता का भी पुरस्कार मिला है। काश! आप भी वहाँ उपस्थित होतीं।

दादी, इस अवसर पर पूरे विद्यालय को फूलों से दुल्हन की तरह सजाया गया था। विद्यालय के प्रवेश द्वार पर बहुत सुंदर रँगोली बनाई गई थी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में हमारे क्षेत्र के सांसद तथा शिक्षा निदेशक व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती वंदना के साथ हुआ। प्रधानाचार्य जी ने पुष्पगुच्छ भेंट करके मुख्य अतिथि व अन्य गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। तत्पश्चात् विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी और गत वर्ष की उपलब्धियों का उल्लेख किया।

इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। संगीत व नृत्य की प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। 'नवप्रभात' नामक संगीत रूपक इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था। मुख्य अतिथि ने छात्रों के अभिनय की भूरि-भूरि सराहना की।

तत्पश्चात् पुरस्कार वितरण प्रारंभ हुआ। दादी, आप नहीं जानतीं कि मुख्य अतिथि के हाथों पुरस्कार पाकर मैं कितना खुश था। मैं आपको कार्यक्रम की एक फ़ोटो भेज रहा हूँ, आप देखना। पुरस्कार पाने वाले सभी छात्रों के चेहरे खुशी से चमक रहे थे। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में कार्यक्रम की सराहना की और विद्यालय की गतिविधियों तथा उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए उसे अपने क्षेत्र का सबसे अच्छा स्कूल बताया। प्रधानाचार्य और सभी शिक्षक बहुत प्रसन्न थे। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

दादी जी, आप कुछ दिनों के लिए यहाँ आ जाइए। मुझे आपकी बहुत याद आती है। मुझे आपसे ढेर सारी बातें करनी हैं और आपके हाथ का बना हलुवा भी खाना है। चाचा जी और चाची जी को मेरा प्रणाम तथा यश को प्यार।

आपका प्रिय पोता

प्रशांत

11. आप एल-46, सोमविहार, जालंधर के निवासी विक्रांत सोनी हैं। खोए हुए पर्स को किसी अपरिचित द्वारा लौटाने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए धन्यवाद-पत्र लिखिए।

एल-46, सोमविहार,

जालंधर।

दिनांक : 25 अगस्त, 20XX

माननीय भूषण जी,

सादर अभिवादन।

मैं आपसे परिचित तो नहीं हूँ, किंतु आपने मेरा खोया पर्स लौटाकर मुझ पर जो उपकार किया है, उसके लिए मैं हृदय से आपका आभार व्यक्त करता हूँ। मैं किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ! आपने मुझे एक बड़े संकट से उबार लिया है। इस पर्स में मेरे कॉलेज़ की छह महीने की फ़ीस-रसीद और आवश्यक प्रमाण-पत्र व कागज़ात थे। इनके बिना मैं स्वयं को अत्यधिक असहाय अनुभव कर रहा था और परेशानी में इधर-उधर भटक रहा था। आपने स्वयं कष्ट उठाकर यह पर्स मुझ तक पहुँचाया, आपके इस व्यवहार और सहृदयता से मैं अभिभूत हूँ। विश्वास नहीं होता कि आज के युग में भी ऐसे सज्जन और ईमानदार व्यक्ति हैं।

आपने सिद्ध कर दिया कि अच्छाई सदैव जीवित रहती है। आप जैसे महान और ईमानदार लोगों के कारण ही यह दुनिया कायम है। यदि मैं आपके किसी काम आ सकूँ तो मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी।

इस उपकार के लिए एक बार फिर आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

भवदीय

विक्रांत सोनी

12. आप 53ए, गांधीनगर, कानपुर के मयंक हैं। अपने जन्मदिन पर मामा जी द्वारा भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद प्रकट करते हुए एक पत्र लिखिए।

53ए, गांधीनगर,

कानपुर।

दिनांक : 15 फरवरी, 20XX

पूज्य मामा जी,

सादर प्रणाम।

कल ही आपका भेजा हुआ पार्सल कोरियर द्वारा मिला। खोला तो मोबाइल फ़ोन था। आपका यह उपहार देखकर मैं प्रसन्नता से उछल ही पड़ा। मैं कितने समय से पिता जी से मोबाइल फ़ोन दिलवाने की बात कहना चाहता था, परंतु कह नहीं पाता था। आपने मेरे मन की

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

इच्छा कैसे जान ली? सच, मेरे जन्मदिन पर मिले उपहारों में यह सबसे अच्छा उपहार है। मोबाइल का रंग-रूप बहुत ही सुंदर है और इसमें सभी नई सुविधाएँ उपलब्ध हैं। मम्मी और पापा को भी मोबाइल बहुत अच्छा लगा। मैं इसे अपने मित्रों को दिखाऊँगा।

लेकिन आप मेरे जन्मदिन पर क्यों नहीं आए? मैं बेसब्री से आपके आने की प्रतीक्षा कर रहा था। मम्मी ने कहा भी था कि अवश्य ही आपकी कोई विवशता रही होगी। आपका लिखा पत्र पढ़कर अब यह बात मैं समझ सकता हूँ।

आपका भेजा यह उपहार मेरे लिए बहुत कीमती है। मैं इसे हमेशा सँभालकर रखूँगा और जैसा कि आपने अपने पत्र में समझाया है, मैं इसका दुरुपयोग नहीं करूँगा। एक बार अपने मित्रों को दिखा दूँ, फिर स्कूल लेकर भी नहीं जाऊँगा और न अपनी पढ़ाई पर इसका कोई असर पड़ने दूँगा। अब मैं आपसे कभी भी बात कर सकूँगा। मामा जी, इस उपहार के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

मैं शीघ्र ही आपसे मिलने आऊँगा। मामी जी को मेरा प्रणाम कहिएगा और मीनाक्षी को प्यार।

आपका भानजा

मयंक

13. **आप 24/46, संजय एंक्लेव, अजमेर के विनीत राणा हैं। आपका मित्र दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण बोर्ड की परीक्षा नहीं दे सका। उसका एक वर्ष व्यर्थ हो गया। अपने मित्र को एक सांत्वना-पत्र लिखिए।**

24/46, संजय एंक्लेव,

अजमेर।

दिनांक : 5 मार्च, 20XX

प्रिय सर्वेश,

सस्नेह नमस्ते।

आज सुबह पंकज घर आया था। उससे पता चला कि तुम्हारे साथ कोई दुर्घटना हो गई है, तुम अस्पताल में भरती हो और इस कारण इस वर्ष बोर्ड की परीक्षा भी नहीं दे पाओगे। सुनकर बहुत दुःख हुआ। एक बार को तो यकीन ही नहीं हुआ कि हमेशा यातायात नियमों का पालन करने वाले तथा सदैव सावधान होकर चलने वाले सर्वेश को सड़क-दुर्घटना में चोट लग गई है। पंकज ने बताया कि तुम पुस्तकालय से लौट रहे थे और किसी कार ने पीछे से तुम्हें टक्कर मार दी। ईश्वर की कृपा है कि तुम्हारी जान बच गई। पंकज ने बताया कि तुम्हारे एक हाथ और एक पैर में फ्रैक्चर हो गया है, पर तुम चिंता न करो। इन चोटों का तो उपचार हो जाएगा और तुम शीघ्र ही स्वस्थ हो जाओगे।

मुझे इस बात का दुःख है कि तुम इस वर्ष परीक्षा नहीं दे पाओगे। तुम तो अपनी कक्षा के सबसे प्रतिभाशाली छात्र थे और अध्यापकों को भी तुमसे बहुत आशाएँ थीं। तुम्हारा एक वर्ष बेकार हो गया, पर मित्र जान है तो जहान है। तुम निराश मत होओ। अगले वर्ष तुम परीक्षा में सम्मिलित होकर अवश्य ही प्रथम स्थान प्राप्त करोगे।

ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करो। मुझे इस बात का अफ़सोस है कि इस समय मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर पा रहा हूँ। परीक्षाएँ चल रही हैं। परीक्षा के बाद मैं अवश्य तुमसे मिलने आऊँगा। तुम हिम्मत बनाए रखना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

विनीत राणा

14. **मित्र/सखी के पिता जी के आकस्मिक निधन पर उसे सांत्वना पत्र लिखिए। (आप 124, किशनगंज, इंदौर के अमित/अमिता हैं।)**

124, किशनगंज,

इंदौर।

3 जुलाई, 20XX

प्रिय कावेरी,

सस्नेह नमस्ते।

अभी-अभी तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। पूज्य चाचा जी के आकस्मिक निधन का समाचार पढ़कर मन बहुत दुःखी हुआ। स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि ऐसा कुछ हो जाएगा। मुझे तो अभी भी विश्वास नहीं हो रहा है कि चाचा जी अब हमारे बीच नहीं हैं।

पिछले सप्ताह ही तो मैं उनसे मिलकर आई थी। हम देर रात तक पढ़ाई और भावी योजनाओं के बारे में ढेरों बातें कर रहे थे। वे मुझसे बहुत स्नेह करते थे। उनका हँसमुख चेहरा आज भी मेरी आँखों के सामने है। मेरे मन में उनके लिए असीम श्रद्धा है। इस समय तुम पर और तुम्हारे परिवार पर क्या बीत रही होगी, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती, किंतु ईश्वर की लीला भी विचित्र है। उसके आगे सबको सिर झुकाना पड़ता है। कावेरी, तुम्हें भी हिम्मत से काम लेना होगा। इस दुःख और शोक की घड़ी में चाची जी और विपिन को सँभालना भी तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।

मैं समझती हूँ कि पिता की कमी को कोई पूरा नहीं कर सकता, किंतु तुम स्वयं को अकेला मत समझना। मैं माँ और पिता जी के साथ शीघ्र ही पहुँच रही हूँ।

इस समय धैर्य और संतोष से ही काम लेना होगा। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह तुम्हें और तुम्हारे परिवार को इस असीम दुःख को सहन करने का धैर्य व सामर्थ्य प्रदान करे तथा चाचा जी की दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

तुम्हारे दुःख में दुःखी

तुम्हारी सखी

अमिता

15. **आप 281, राधा गार्डन, मथुरा के निवासी डेविड हैं, आपकी किसी टिप्पणी से आपका मित्र आहत है। उसके लिए खेद व्यक्त करते हुए एक पत्र लिखिए।**

281, राधा गार्डन,

मथुरा।

दिनांक : 25 अगस्त, 20XX

प्रिय मित्र सलमान,

सादर नमस्ते।

अभी कुछ दिन पूर्व सम्पन्न हुई मासिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर मैंने तुम्हें आलसी, लापरवाह और गैरज़िम्मेदार आदि कहकर तुम्हारा दिल दुःखाया था। मुझे ज्ञात है कि तुम मेरी उस टिप्पणी से मुझसे नाराज़ हो। मैंने अत्यधिक स्नेह और तुम्हें मन लगाकर पढ़ाई करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से वह टिप्पणी की थी। मगर मेरा कहने का तरीका गलत था। मैं अपनी उस बात के लिए खेद व्यक्त करते हुए तुमसे वादा करता हूँ कि भविष्य में बोलते समय स्वयं पर संयम रखूँगा। आशा है अब तुम्हारी नाराज़गी दूर हो गई होगी।

शेष बातें मिलने पर होंगी। चाचा जी और चाची जी को चरणस्पर्श।

तुम्हारा दोस्त

डेविड।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

16. आप टैगोर छात्रावास, भोपाल में रहने वाले रोहित हैं। अपनी गलती का एहसास होने पर क्षमायाचना करते हुए अपने पिता जी को पत्र लिखिए।

टैगोर छात्रावास,
भोपाल।

दिनांक : 28 नवम्बर, 20XX

पूज्य पिता जी,
सादर चरणस्पर्श।

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि आप सब भी कुशलतापूर्वक होंगे। कल शाम ही आपका पत्र मिला। मुझे पता है कि आप मुझसे बहुत नाराज़ हैं। मैंने काम ही ऐसा किया था। आपको मेरी वजह से बहुत पीड़ा हुई है। अब मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया है। मैं आपको आश्वस्त करता हूँ कि भविष्य में फिर कभी परीक्षा में नकल नहीं करूँगा। बहुत अच्छा हुआ कि मैं परीक्षा में नकल करते हुए पकड़ा गया, नहीं तो मैं यूँ ही बिना परिश्रम के उत्तीर्ण होता जाता और अपने भविष्य को खुद अपने ही हाथों बर्बाद कर लेता। अब मेरी दिनचर्या बिलकुल बदल गई है। मैं सुबह 6 बजे उठकर टहलने जाता हूँ और योग करता हूँ, समय पर खाना खाकर पढ़ाई करता हूँ। पहले जो अध्यापक मुझसे नाराज़ हो गए थे, अब वे प्रसन्न रहते हैं तथा मेरे सहपाठी भी तारीफ़ करते हैं। मैं बहुत मन लगाकर पढ़ाई कर रहा हूँ, मुझे उम्मीद है कि मैं अगली परीक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करूँगा। आशा है कि आप मुझे क्षमा करेंगे।
माता जी को चरणस्पर्श और शुभी को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
रोहित

17. आप 15, माल रोड, मसूरी की रहने वाली गरिमा हैं। आपकी सहेली गीता का जन्मदिन था। उसने जन्मदिन की पार्टी में अन्य दोस्तों के साथ आपको भी बुलाया था, पर अचानक आपके अस्वस्थ हो जाने के कारण आप नहीं जा सकीं। अपनी सहेली से क्षमा-याचना करते हुए एक पत्र लिखिए।

15, माल रोड,
मसूरी।

दिनांक : 1 सितंबर, 20XX

प्रिय सखी गीता,
सस्नेह नमस्कार।

मैं जानती हूँ कि तुम मुझसे नाराज़ होंगी। नाराज़ होने की तुम्हारे पास वजह भी है। कल तुम्हारा जन्मदिन था। जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। मुझे बहुत दुःख है कि मैं तुम्हारे जन्मदिन की पार्टी में नहीं आ सकी। मैंने दादी के साथ तुम्हारे घर आने का कार्यक्रम बना लिया था, परंतु ईश्वर को शायद यह मंज़ूर नहीं था। दो दिन पूर्व ही घर के बाहर एक मोटर-साइकिल से टकराकर मेरे पैर की हड्डी टूट गई। मैं जानती हूँ कि तुम मेरी स्थिति को समझ गई होंगी, फिर भी मैं तुम्हारे जन्मदिन की पार्टी में शामिल न होने के लिए क्षमा माँगती हूँ। जैसे ही मैं ठीक होती हूँ, तुमसे मिलने अवश्य आऊँगी।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में,

तुम्हारी अभिन्न सखी
गरिमा

18. आप 15/3, क्वींस रोड, अमृतसर के दविंदर सिंह हैं। अपने छोटे भाई सुखविंदर को नियमित व्यायाम करने की प्रेरणा देते हुए एक पत्र लिखिए।

15/3, क्वींस रोड,
अमृतसर।

दिनांक : 10 फरवरी, 20XX

प्रिय सुखविंदर,
खुश रहो।

कल पिता जी का पत्र मिला। पढ़कर ज्ञात हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। तुम हर समय पुस्तकों में डूबे रहते हो। न अपने खाने-पीने का ध्यान रखते हो, न सेहत का। पता है पिता जी को तुम्हारी कितनी चिंता हो रही है। लगता है कि तुमने व्यायाम करना छोड़ दिया है।

मेरे भाई, पढ़ना-लिखना जितना आवश्यक है, उतना ही खेल-कूद और व्यायाम करना भी। खेल-कूद और व्यायाम से शरीर में चुस्ती-फुरती आती है, मांसपेशियाँ मज़बूत होती हैं, पाचनशक्ति बढ़ती है, भूख लगती है। स्वास्थ्य है तो सबकुछ है। तुमने तो सुना-पढ़ा ही होगा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। तुम प्रातः खुली हवा में आधा घंटा सैर किया करो। सुबह के शांत वातावरण में शुद्ध ताज़ी हवा में सैर करने से मन प्रसन्न होता है, पढ़ाई में भी खूब मन लगता है। शरीर में रक्त-संचार भली प्रकार होता है। तुम देखना कि पंद्रह-बीस दिनों में ही तुम्हें अपने स्वास्थ्य में सुधार नज़र आएगा। शाम को अपने मित्रों के साथ फुटबॉल, हॉकी या कोई और खेल खेला करो। योगासन और प्राणायाम भी एक प्रकार का व्यायाम ही है। इनसे ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ती है। तुम प्रातः उठकर प्राणायाम या योगासन भी कर सकते हो।

मुझे पूरा विश्वास है कि तुम मेरी सलाह मानकर नियमित व्यायाम करना प्रारंभ कर दोगे। अगले पत्र में पिता जी प्रसन्नतापूर्वक तुम्हारे स्वस्थ होने की खबर देंगे।

तुम्हारा अग्रज
दविंदर सिंह

19. आप शिवाजी छात्रावास, टैगोर पब्लिक स्कूल, कोलकाता के हरप्रीत हैं। आपका स्कूल छह दिन के ऐतिहासिक भ्रमण के लिए राजस्थान जा रहा है। उस भ्रमण के लिए जाने की अनुमति हेतु अपने पिता जी को एक पत्र लिखिए।

शिवाजी छात्रावास,
टैगोर पब्लिक स्कूल,
कोलकाता।

दिनांक : 15 दिसंबर, 20XX

पूजनीय पिता जी,
सादर चरणस्पर्श।

मैं यहाँ बिलकुल ठीक हूँ। आशा है घर पर भी सब स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। मेरी पढ़ाई बिलकुल ठीक चल रही है और मैं स्कूल की गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लेता हूँ।

पिता जी, मेरे स्कूल ने क्रिसमस अवकाश में राजस्थान के ऐतिहासिक भ्रमण का आयोजन किया है, जिसमें मेरी कक्षा के दस छात्र जा रहे हैं। मैं भी इस भ्रमण के लिए जाना चाहता हूँ। आपको तो पता ही है कि शैक्षिक भ्रमण विद्यालयीय पाठ्यक्रम के महत्त्वपूर्ण अंग बन चुके हैं। पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त आज छात्रों का परिचय व्यावहारिक ज्ञान और जीवन से भी कराया जाता है। ये भ्रमण हमें अपने देश को जानने-समझने का पर्याप्त अवसर देते हैं। राजस्थान के ऐतिहासिक

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

स्थलों को देखने, वहाँ के जन-जीवन को जानने का यह बहुत सुंदर अवसर है। अपने देश की संस्कृति से परिचित होने का यह अवसर मैं खोना नहीं चाहता; अतः आपसे अनुरोध है कि आप मुझे इस भ्रमण पर जाने की अनुमति दें।

आप हमारी सुरक्षा, खाने-पीने तथा रहने के बारे में चिंता न करें। हम साठ छात्रों के साथ हमारे चार अध्यापक भी जाएँगे। विभिन्न स्थानों पर ठहरने और आने-जाने की व्यवस्था कर ली गई है। जयपुर, अजमेर, उदयपुर, जोधपुर, मेवाड़-जिनके बारे में हम केवल पुस्तकों में ही पढ़ते थे, वहाँ प्रत्यक्ष जाने के विचार से ही मैं रोमांचित हो रहा हूँ। पिता जी, आप मना मत कीजिएगा। कृपया अगले पत्र से शीघ्र ही अनुमति भेज दीजिए, ताकि मैं अपना नाम समय रहते लिखवा सकूँ। माता जी और दीदी को मेरा सादर प्रणाम। आपकी अनुमति की प्रतीक्षा में।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
हरप्रीत

20. विद्यालय के वार्षिकोत्सव में माता-पिता को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

आज़ाद छात्रावास,
ऋषिकुल विद्यापीठ,
सोनीपत।

दिनांक : 20 नवंबर, 20XX

पूज्य पिता जी एवं माता जी,
सादर चरणस्पर्श।

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी कुशलतापूर्वक होंगे। 10 दिसंबर, 20XX को हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव का आयोजन होने जा रहा है। हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि होंगे। इस अवसर पर वे विद्यालय के मेधावी छात्रों को पुरस्कृत करेंगे।

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि पुरस्कृत किए जाने वाले छात्रों की सूची में मेरा नाम सबसे ऊपर है। वार्षिकोत्सव के सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी मैं मुख्य भूमिका निभा रहा हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस अवसर पर आप दोनों अवश्य उपस्थित रहें; क्योंकि आपके सामने पुरस्कार प्राप्त करते हुए मुझे अत्यंत गर्व का अनुभव होगा।

मुझे विश्वास है कि आप मेरी यह इच्छा अवश्य पूरी करेंगे। प्रिय रमन को भी अपने साथ अवश्य लाना। मुझे आपकी प्रतीक्षा रहेगी।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
सुधीर

21. पुस्तकें खरीदने के लिए कुछ धनराशि भेजने का आग्रह करते हुए बड़े भाई को पत्र लिखिए।

432 बी, काकानगर,
शामली।

दिनांक : 20 अक्टूबर, 20XX

आदरणीय भाई साहब,
सादर प्रणाम।

मैं यहाँ माता-पितासहित सकुशल हूँ, आशा करता हूँ कि आप भी कुशलतापूर्वक होंगे। मैं आपके निर्देशानुसार मन लगाकर पढ़ाई कर रहा हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि आपके आशीर्वाद से मेरा सेना-अधिकारी बनने का सपना अवश्य पूरा होगा।

मेरी दो आवधिक परीक्षाएँ समाप्त हो चुकी हैं। आपको यह जानकर बहुत प्रसन्नता होगी कि मैंने इन परीक्षाओं में पूरे अंक प्राप्त करके अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अब मुझे तृतीय आवधिक परीक्षा की तैयारी करनी है, जो एक प्रकार से संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगी। वास्तव में यह परीक्षा वार्षिक परीक्षा का पूर्वाभ्यास होगी। इस परीक्षा की तैयारी के लिए मुझे कुछ पुस्तकें खरीदनी हैं; अतः आप 500 रुपये की धनराशि मनीऑर्डर द्वारा भेज दें। इस दीपावली को मैं आपके साथ मनाना चाहता हूँ, इसलिए आप दीपावली पर छुट्टी लेकर अवश्य आएँ। माता-पिता जी आपको आशीर्वाद भेज रहे हैं।

आपका अनुज
क०ख०ग०

22. मनाली यात्रा के दौरान एक स्थानीय छात्र द्वारा की गई सहायता के लिए धन्यवाद-पत्र लिखिए।

125, देवनगर,
कानपुर।

दिनांक : 25 जून, 20XX

प्रिय सोहन रावत,
सप्रेम नमस्ते।

मैं सकुशल अपने घर पहुँच गया हूँ। एक छात्र होते हुए भी मनाली में आपने जो मेरी सहायता की, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मुझे याद है कि मनाली में मेरा पर्स खो गया था। उसमें मेरा ए०टी०एम० कार्ड भी था। उस समय मेरे पास एक पैसा भी नहीं था। मैं बिलकुल असहाय-सा हो गया था। उसी समय आप मेरे पास आए और मेरी परेशानी पूछी। फिर आप अपने घर गए और पाँच हज़ार रुपये लाकर मुझे दिए। मैं नहीं जानता कि आपने मुझ अनजान पर इतना विश्वास क्यों किया।

मैंने वे पाँच हज़ार रुपये आपके खाते में जमा करा दिए हैं, लेकिन यह उस सहायता का प्रतिकार नहीं है। आपकी उस उदारता के लिए तो मैं केवल आपको धन्यवाद ही दे सकता हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप एक बार कानपुर अवश्य आएँ और मेरा आतिथ्य ग्रहणकर मुझे उपकृत करें। आप पर सदैव ईश्वर की कृपा बनी रहे।

आपका उपकृत
क०ख०ग०

23. विदेश में रहने वाले मित्र को भारत की संस्कृति के विषय में बताते हुए पत्र लिखिए।

बी-574, शरद विहार,
गाजियाबाद।

दिनांक : 13 अप्रैल, 20XX

प्रिय रॉबर्ट,
सप्रेम नमस्ते।

तुमने अपने पहले पत्र में भारतीय संस्कृति के विषय में जिज्ञासा व्यक्त की थी। तुम्हारी उसी जिज्ञासा को शांत करने के लिए मैं इस पत्र में भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त परिचय दे रहा हूँ।

भारतीय संस्कृति संसार की प्राचीनतम संस्कृति है। सत्य और अहिंसा इसके मूलतत्त्व हैं। 'वसुधैव कुटुंबकम्' इसका आदर्श है। यह संसार की सबसे अधिक सहिष्णु संस्कृति है। यहाँ अनेक धर्मों और जातियों के लोग रहते हैं, जिनकी भाषाएँ, वेशभूषाएँ, खान-पान, परंपराएँ और रहन-सहन सभी कुछ भिन्न हैं, लेकिन सभी लोग स्वयं को भारतीय मानते हैं और प्रेम से रहते हैं। अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है। इस संस्कृति ने राम, कृष्ण, गौतम, महावीर और गांधी जैसी विभूतियों को जन्म दिया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भारतीय संस्कृति इतनी महान है कि एक पत्र में उसका वर्णन करना असंभव है। यदि तुम्हें इस संस्कृति को जानना है तो समय निकालकर भारत आओ और कुछ दिन हमारे साथ रहो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत-दर्शन की इच्छा तुम्हें एक दिन भारत अवश्य खींच लाएगी; क्योंकि यह एक गीत की पंक्तिभर नहीं है, बल्कि भारत की वास्तविकता है–"सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा।"

अंकल-आंटी को चरणस्पर्श।

तुम्हारा मित्र

क॰ख॰ग॰

24. मित्र के पिता जी की दुकान में आग लगने से हुए नुकसान के लिए सांत्वना-पत्र लिखिए।

63, शिव कॉलोनी,

ऋषिकेश।

दिनांक : 22 जनवरी, 20XX

प्रिय मित्र मयंक,

सस्नेह नमस्ते।

कल मेरे पास रमन आया था, उससे पता चला कि तुम्हारी दुकान में आग लग गई, जिसमें लाखों का सामान जलकर राख हो गया। यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। मुझे पता है कि तुम्हारे पिता जी कितनी मेहनत से इस दुकान को चला रहे थे। आजीविका की हानि असहनीय होती है। लेकिन मित्र, तुम्हें धैर्य से काम लेना है। तुलसीदास जी ने कहा है–"लाभ-हानि, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ"। भगवान की इतनी कृपा ही बहुत है कि इस घटना में कोई जन-हानि नहीं हुई।

मेरी भगवान से प्रार्थना है कि वह शीघ्र ही आपको पुनः सुखी और समृद्ध करें। इस घटना को बुरा सपना समझकर भूल जाओ। चाचा जी को सहारा दो, ताकि वे पुनः अपने कार्य में जुट जाएँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि दुकान पहले से भी अच्छी चलेगी। मेरी ओर से चाचा जी और चाची जी को चरणस्पर्श कहना। परीक्षा समाप्त होते ही मिलने आऊँगा।

आपका मित्र

क॰ ख॰ ग॰

25. बड़े भाई की ओर से कुमित्रों से सावधान रहने की सीख देते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए।

बी-31, कल्याणपुरी,

लखनऊ।

दिनांक : 07-04-20XX

प्रिय दिनेश,

शुभाषीश।

कल दोपहर तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि प्रथम आवधिक परीक्षा में तुमने कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए हैं। छात्रावास में अब तक तुम्हारे कई मित्र बन गए होंगे। मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि जीवन में मित्र का बहुत महत्त्व है, लेकिन मित्र का चुनाव बहुत सोच-समझकर करना चाहिए; क्योंकि एक सन्मित्र जितना लाभदायक होता है, कुमित्र उतना ही हानिकारक भी होता है।

मैं तुम्हें सावधान करना चाहता हूँ कि मित्रों का चुनाव करते समय उसके आचार, व्यवहार और आदतों को अच्छी प्रकार परख लेना चाहिए। तुम्हें सदैव कुमित्रों से बचना चाहिए। एक लेखक ने कहा है–"कुसंगति पैरों में बँधी चक्की के समान होती है, जो मनुष्य को दिनोदिन अवनति के गर्त में गिराती जाती है।"

आशा है तुम मेरी बातों पर ध्यान दोगे और कुमित्रों से सावधान रहोगे। माता-पिता की ओर से तुम्हें आशीर्वाद।

अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना।

तुम्हारा बड़ा भाई

क॰ख॰ग॰

26. ग्रीष्मावकाश का कुछ समय अपने साथ बिताने का निमंत्रण देते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

ए-72, न्यू कॉलोनी,

रूड़की।

दिनांक : 5 जून, 20XX

प्रिय हार्दिक,

सप्रेम नमस्ते।

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी अपने परिवारसहित कुशलतापूर्वक होंगे। इस समय ग्रीष्मावकाश चल रहा है। मैं चाहता हूँ कि तुम इस अवकाश का कुछ समय हमारे घर आकर मेरे साथ बिताओ। इस समय भीषण गर्मी पड़ रही है। हमारा घर गंगनहर के किनारे पर है। हम दोनों प्रतिदिन नहर में नहाएँगे और तैरेंगे। शाम के समय यहाँ का मौसम बहुत सुहावना हो जाता है। यहाँ की लस्सी और चाट बहुत प्रसिद्ध है। लोग दूर-दूर से इनका स्वाद लेने आते हैं। हम भी प्रतिदिन इनका आनंद लेंगे। यहाँ से हरिद्वार बहुत समीप है, वहाँ भी घूमने जाएँगे। इस प्रकार कुछ दिन साथ रहकर हम ग्रीष्मावकाश का पूरा आनंद उठाएँगे।

मुझे आशा है कि तुम मेरा अनुरोध अवश्य स्वीकार करोगे। आने से पहले मुझे फोन द्वारा सूचित अवश्य कर देना, मैं तुम्हें लेने के लिए बस-अड्डे आ जाऊँगा। मेरी ओर से चाचा जी एवं चाची जी को चरणस्पर्श कहना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।

तुम्हारा मित्र

क॰ ख॰ ग॰

27. अपने विदेशी मित्र को होली के उत्सव पर अपने यहाँ आने का निमंत्रण देते हुए पत्र लिखिए।

सी-95, सेक्टर-6,

चण्डीगढ़।

दिनांक : 15 फरवरी, 20XX

प्रिय मित्र डेविड,

सप्रेम नमस्ते।

आप जानते हैं कि भारत एक उत्सवप्रधान देश है। यहाँ प्रतिदिन कोई-न-कोई उत्सव होता रहता है। वैसे तो हर उत्सव का अपना अलग रंग और मनाने का ढंग है, लेकिन होली के उत्सव की बात ही निराली है। इस उत्सव की धूम और मस्ती को देखने विदेशों से भी लोग आते हैं। आप मेरे प्रिय मित्र हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस बार आप होली के उत्सव पर भारत आएँ और हमारे साथ यह उत्सव मनाएँ। इससे आपको भारतीय संस्कृति और परंपराओं को व्यावहारिक रूप से समझने का अवसर मिलेगा और साथ ही भारत-भ्रमण भी हो जाएगा। मुझे आशा है कि आप मेरा यह निमंत्रण अवश्य स्वीकार करेंगे। आने से पूर्व मुझे सूचित अवश्य कर दें। मेरी ओर से अंकल-आंटी को प्रणाम कहना। मुझे आपके उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका मित्र

क॰ख॰ग॰

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

28. गृह-प्रवेश के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मित्र को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

सी-425, फेज-II,
पल्लवपुरम्, मेरठ।

दिनांक : 11 जनवरी, 20XX

प्रिय राजीव,
सप्रेम नमस्ते।

आपको यह जानकर अत्यंत हर्ष होगा कि ईश्वर ने हमारा एक नया मकान बनाने का सपना पूरा कर दिया है। गृह-प्रवेश का शुभ मुहूर्त 25 जनवरी, 20XX को है। इस शुभ अवसर पर आप सपरिवार आमंत्रित हैं। पधारकर अनुगृहीत करें।

कार्यक्रम इस प्रकार है–

हवन	–	8.00 बजे प्रातः
प्रीतिभोज	–	12.00 बजे दोपहर
जागरण	–	9.00 बजे रात्रि

तुम्हारा दर्शनाभिलाषी
क०ख०ग०

29. अपने चचेरे भाई को आई0आई0टी0 प्रवेश परीक्षा में सफलता पर शुभकामना-पत्र लिखिए।

342, रतनगढ़,
पानीपत।

दिनांक : 26 अगस्त, 20XX

प्रिय देव,
सप्रेम नमस्ते।

आज ही चाचा जी का पत्र मिला। यह जानकर मैं फूला नहीं समाया कि तुमने आई॰आई॰टी॰ की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। यह तुम्हारे अथक परिश्रम का ही फल है। तुम पढ़ाई में बचपन से ही अच्छे रहे हो। इस बड़ी सफलता की तुम्हें मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। चाचा जी ने तुम्हें इंजीनियर बनाने का जो सपना देखा था, तुमने उसे साकार कर दिया है। यही एक सुपुत्र की पहचान है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम परिवार का नाम अवश्य रोशन करोगे।

मेरी ओर से चाचा जी और चाची जी को चरणस्पर्श। समय मिलते ही तुमसे मिलने आऊँगा।

तुम्हारा भाई
क०ख०ग०

30. बोर्ड की परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने पर बुआ द्वारा भेजे उपहार के लिए धन्यवाद-पत्र लिखिए।

1423, गंगानगर,
राजस्थान।

दिनांक : 10 जुलाई, 20XX

आदरणीया बुआ जी,
सादर चरणस्पर्श।

आपके द्वारा भेजा गया उपहार मुझे प्राप्त हो गया है। आपने मेरे लिए जो सुंदर घड़ी भेजी है, उसे देखकर मैं फूला नहीं समाया। मुझे आश्चर्य है कि आपने मेरे मन की इच्छा को कैसे जान लिया? वास्तव में मुझे घड़ी की बहुत आवश्यकता थी। इसके अभाव में पढ़ाई करते समय मैं प्रत्येक विषय को तैयारी के लिए बराबर समय नहीं दे पाता था। परीक्षा के समय तो मुझे घड़ी की कमी बहुत खटकती थी। बोर्ड की परीक्षा में अच्छे अंक लाने पर आपने मुझे जो उपहार दिया है, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। ग्रीष्मावकाश होते ही मैं आपके हाथ का बना हलुवा खाने अवश्य आऊँगा। मेरी ओर से फूफा जी को चरणस्पर्श और नीतू को प्यार।

आपका भतीजा
क०ख०ग०

31. अस्पताल में भर्ती हुए अपने दुर्घटनाग्रस्त मित्र को सांत्वना-पत्र लिखिए।

24/46, संजय कॉलोनी,
अजमेर।

दिनांक : 10 मार्च, 20XX

प्रिय मित्र दिनेश,
सस्नेह नमस्ते।

आज सुबह सुरेश का संदेश आया। उससे पता चला कि तुम्हारे साथ कोई सड़क-दुर्घटना हो गई है और तुम अस्पताल में भर्ती हो। यह जानकर बहुत दुःख हुआ। मुझे तो अब तक भी विश्वास नहीं हो रहा है कि हमेशा यातायात के नियमों का पालन करने वाला और सड़क पर सावधान होकर चलने वाला दिनेश सड़क-दुर्घटना का शिकार हो गया है। सुरेश ने बताया कि तुम्हें किसी कार ने पीछे से टक्कर मार दी। तुम्हारे एक हाथ और पैर में गंभीर चोटें आई हैं। ईश्वर की बहुत बड़ी कृपा है कि तुम्हारी जान बच गई। तुम धैर्य रखो; क्योंकि चोटों का तो उपचार हो जाएगा और तुम शीघ्र ही स्वस्थ हो जाओगे।

मेरे माता-पिता तुम्हारे शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ की कामना करते हुए तुम्हें आशीर्वाद भेज रहे हैं। इस समय परीक्षा चल रही है। परीक्षा समाप्त होते ही मैं तुमसे मिलने आऊँगा।

तुम्हारा मित्र
क०ख०ग०

32. मित्रों के साथ केरल घूमने जाने के लिए अपने पिता जी को अनुमति-पत्र लिखिए।

छात्रावास,
ऋषिकुल विद्यापीठ,
हरिद्वार।

दिनांक : 5 अक्टूबर, 20XX

पूज्या पिता जी,
सादर चरणस्पर्श।

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा करता हूँ कि घर पर भी सब स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। मेरी पढ़ाई बिलकुल ठीक चल रही है। हमारे विद्यालय ने केरल के ऐतिहासिक भ्रमण का आयोजन किया है। सी॰बी॰एस॰ई॰ ने शैक्षिक भ्रमण को पाठ्यक्रम का अंग बना दिया है। मेरी कक्षा के दस छात्र इस भ्रमण पर जा रहे हैं। मैं भी इस भ्रमण पर जाना चाहता हूँ। इसके लिए मुझे आपकी अनुमति चाहिए।

आप मेरी सुरक्षा, खान-पान और ठहरने की चिंता न करें; क्योंकि हमारे चार अध्यापक भी साथ जा रहे हैं। इस भ्रमण से मुझे दक्षिण भारत की सभ्यता और संस्कृति को नज़दीक से जानने-समझने का अवसर मिलेगा। आशा है आप इस भ्रमण के लिए मुझे मना नहीं करेंगे। मेरी ओर से माता जी को चरणस्पर्श और सोनू को प्यार। मैं आपके अनुमति-पत्र की प्रतीक्षा करूँगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
क० ख० ग०

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

33. राज्य की क्रिकेट टीम में चयन होने पर ममेरे भाई को बधाई और शुभकामना-पत्र लिखिए।

डी-14, दीप कॉलोनी
भोपाल।

दिनांक : 10 नवंबर, 20XX

प्रिय राहुल,
सप्रेम नमस्ते।

मुझे आज मामा जी ने टेलीफ़ोन पर बताया कि राज्य स्तर की क्रिकेट टीम के लिए तुम्हारा चयन हो गया है। यह सुनकर मैं खुशी से नाचने लगा। मेरी ओर से तुम्हें बहुत-बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे तो पहले से ही विश्वास था कि एक दिन तुम्हारी मेहनत अवश्य रंग लाएगी। पिछले कई वर्षों से तुम जिस मेहनत और लगन से खेल का अभ्यास कर रहे थे और प्रतियोगिताएँ जीत रहे थे, यह उसी का सुफल है।

माता-पिता जी भी तुम्हें आशीर्वाद और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ भेज रहे हैं। हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि तुम एक दिन इस खेल में सितारा बनकर चमको! एक बार पुनः बधाई!

तुम्हारा भाई
क० ख० ग०

34. वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर मित्र को बधाई-पत्र लिखिए।

741, भरत विहार,
फैज़ाबाद।

दिनांक : 7 सितंबर, 20XX

प्रिय मित्र मुकुल,
सप्रेम नमस्ते।

मुझे आज ही तुम्हारे मित्र नवीन का संदेश मिला। यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि तुम अपने जनपद के समस्त विद्यालयों की वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहे हो। मेरी ओर से तुम्हें हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ। तुम बचपन से ही वाक्-कला में निपुण रहे हो। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि माँ सरस्वती की तुम पर असीम कृपा बनी रहे और तुम्हारी इस कला में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि हो।

मेरे माता-पिता भी तुम्हें आशीर्वाद और शुभकामनाएँ भेज रहे हैं। इस शानदार सफलता के लिए मैं शीघ्र ही मिठाई खाने आ रहा हूँ। एक बार पुनः बधाई!

तुम्हारा मित्र
क० ख० ग०

35. समय के सदुप्रयोग और परिश्रम का महत्त्व बताते हुए छोटे भाई को प्रेरणादायी-पत्र लिखिए।

1375, सेक्टर-23,
पानीपत।

दिनांक : 25 सितंबर, 20XX

प्रिय सोमेश,
शुभाशीष।

आज ही तुम्हारे कक्षा-अध्यापक का पत्र मिला। उससे पता चला कि तुम्हारा कार्य समय पर पूरा नहीं होता है। मेरे विचार से इसका कारण यह है कि तुम समय का सदुप्रयोग नहीं करते।

प्यारे भाई, समय बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। जो समय को नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है। संसार में जितने भी सफल व्यक्ति हुए हैं, वे सब समय का सदुप्रयोग करने के कारण ही सफल रहे। तुम आज का कार्य कल पर टालते रहते हो। यही कारण है कि तुम्हारा कार्य पिछड़ जाता है।

तुम्हें अपने जीवन में 'काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब' का सिद्धांत अपनाना चाहिए। तुम समय-नियोजन करके उसका सदुप्रयोग करना सीखो। ऐसा करने से तुम्हारा सब कार्य समय पर पूरा होने लगेगा। तुम्हें पढ़ाई में आनंद आएगा और तुम्हारे अध्यापक भी तुमसे खुश रहेंगे। आशा है तुम आज से ही इन बातों पर ध्यान दोगे।

तुम्हारा बड़ा भाई
क० ख० ग०

36. छोटे भाई को वार्षिक परीक्षा की तैयारी के लिए कुछ सुझाव देते हुए पत्र लिखिए।

सी-75, नारायणा,
इलाहाबाद।

दिनांक : 12 फरवरी, 20XX

प्रिय विद्यांश,
खुश रहो।

तुम्हारा पत्र मिला, जिससे पता चला कि तुम्हारी परीक्षा होने वाली है। परीक्षा की तैयारी हमेशा गंभीरतापूर्वक करनी चाहिए। मैं तुम्हें कुछ सुझाव दे रहा हूँ, जिससे तुम परीक्षा की अच्छी तैयारी कर सकोगे। तुम्हें परीक्षा के नाम से उत्तेजित नहीं होना चाहिए, बल्कि मन को शांत रखना चाहिए। समय-नियोजन के अनुसार प्रत्येक विषय की तैयारी के लिए समान समय देना चाहिए। अध्ययन का समय थोड़ा-सा बढ़ा देना चाहिए। अध्यापकों से मिलकर विषयों से संबंधित सभी शंकाओं का समाधान कर लेना चाहिए। कठिन प्रश्नों का लिखकर अभ्यास करना चाहिए। परीक्षा की अभ्यास-सामग्री स्वयं तैयार रखनी चाहिए। आशा है तुम मेरे इन सुझावों को अवश्य मानोगे और इनके अनुसार परीक्षा की तैयारी करोगे। यदि तुमने ऐसा किया तो निश्चित रूप से तुम्हें परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होंगे। तुम्हारी परीक्षा समाप्त होते ही मैं तुमसे मिलने आऊँगा। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना।

तुम्हारा बड़ा भाई
क० ख० ग०

37. राखी के त्योहार पर राखी भेजते हुए छोटे भाई को शुभकामना-पत्र लिखिए।

37-ए, नवीननगर,
पटना।

दिनांक : 10 अगस्त, 20XX

प्रिय मनोज,
शुभाशीर्वाद।

मैं यहाँ परिवारसहित कुशल हूँ और ईश्वर से तुम्हारी मंगलकामना करती रहती हूँ। रक्षाबंधन का पावन पर्व आने वाला है। परीक्षा के कारण तुम आने में असमर्थ हो और मैं भी यहाँ व्यस्त हूँ इसलिए भाई-बहन के प्रेम के प्रतीक स्वरूप ये राखी के धागे डाक से भेज रही हूँ। रक्षाबंधन के दिन इन्हें अपनी कलाई पर बाँध लेना। राखी प्राप्त होने की सूचना अवश्य देना। परीक्षा समाप्त होते ही मिलने आना।

मेरी ओर से माता-पिता को प्रणाम और तुम्हारे लिए दीर्घायु का आशीर्वाद।

तुम्हारी बड़ी बहन
क० ख० ग०

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

38. साक्षरता अभियान में अपनी सक्रिय भागीदारी के विषय में बताते हुए पिता जी को पत्र लिखिए।

छात्रावास,
ऋषिकुल विद्यापीठ,
वाराणसी।

दिनांक : 20 अगस्त, 20XX

पूज्य पिता जी,
सादर चरणस्पर्श।

मैं छात्रावास में सकुशल हूँ। आशा करता हूँ आप भी परिवारसहित कुशलतापूर्वक होंगे। आपको तो पता ही है कि भारत की साक्षरता दर बहुत नीचे है। यहाँ आज भी करोड़ों लोग निरक्षर हैं। सरकार ने लोगों को साक्षर करने के लिए साक्षरता-अभियान चलाया हुआ है। हमारा विद्यालय इस अभियान में पूरा सहयोग कर रहा है।

मैं छात्रावास के अन्य बच्चों के साथ इस अभियान में सक्रिय रूप से सहयोग कर रहा हूँ। प्रत्येक रविवार को हम आस-पास के गाँवों में जाते हैं और वहाँ गरीब बच्चों एवं अनपढ़ प्रौढ़ों को लिखना-पढ़ना सिखाते हैं। इन सबको किताबें और कापियाँ हमारा विद्यालय ही देता है। हमारे प्रयास से बहुत-से प्रौढ़ और बच्चे लिखना-पढ़ना सीख चुके हैं। इस कार्य को करके मुझे बहुत आत्मसंतुष्टि मिल रही है। ऐसा लगता है, जैसे मैं किसी महान यज्ञ में भागीदारी कर रहा हूँ। इस विषय में बाकी बातें मैं घर आने पर बताऊँगा। मेरी ओर से माता जी और दादी जी को चरणस्पर्श।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
क०ख०ग०

39. अपने नए विद्यालय के विषय में अपनी दादी जी को बताते हुए पत्र लिखिए।

छात्रावास,
विवेकानंद विद्यापीठ,
मिर्जापुर।

दिनांक : 28 अप्रैल, 20XX

आदरणीया दादी जी,
सादर चरणस्पर्श।

आपको मेरे विषय में यह चिंता हो रही होगी कि मेरा नए विद्यालय में मन लगा या नहीं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मेरा नया विद्यालय बहुत अच्छा है। मेरा यहाँ खूब मन लग रहा है। इस विद्यालय का भवन बहुत सुंदर और साफ-स्वच्छ है। यहाँ शिक्षण के सभी आधुनिक साधन उपलब्ध हैं। मेरे सहपाठियों का व्यवहार बहुत सहयोगपूर्ण है। सभी शिक्षक बहुत प्यार से बच्चों को पढ़ाते हैं। यहाँ सभी खेलों की सुविधाएँ हैं। मैंने बॉस्केट बॉल खेलना प्रारंभ कर दिया है। छात्रावास का वातावरण बिलकुल घर जैसा ही है। आप मेरी बिलकुल भी चिंता न करें। मैं यहाँ बहुत खुश हूँ। अगले महीने अभिभावक-शिक्षक मीटिंग (पी०टी०एम०) होगी। आप माता जी और पिता जी के साथ अवश्य आना। मुझे पूरा विश्वास है कि आप इस विद्यालय को देखकर अवश्य संतुष्ट होंगी। मेरी ओर से माता जी व पिता जी को चरणस्पर्श और चिंटू को बहुत-बहुत प्यार।

आपका पौत्र
क० ख० ग०

चित्र-वर्णन

किसी चित्र को देखकर उसका सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए जो वर्णन किया जाता है, उसे '**चित्र-वर्णन**' कहते हैं। चित्र-वर्णन एक कला है, जिसमें मन के भावों को दिए गए चित्र के अनुरूप व्यक्त करना होता है। वर्णन के लिए दिया गया चित्र किसी वस्तु, दृश्य, घटना, समारोह, उत्सव, मेले या प्रकृति से संबंधित हो सकता है।

चित्र-वर्णन से छात्रों का भावाभिव्यक्ति तथा लेखन-कौशल पुष्ट होता है। जो विद्यार्थी जितना अधिक कुशाग्रबुद्धि, भावुक, कल्पनाशील तथा सूक्ष्म-निरीक्षक होता है, वह उतनी ही कुशलता से दिए गए चित्र का प्रभावशाली वर्णन कर पाता है।

चित्र-वर्णन में ध्यान रखने योग्य मुख्य बातें:

चित्र-वर्णन की कला को विकसित करने हेतु निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है–

1. चित्र को अत्यंत सूक्ष्मता से देखकर सबसे पहले उसके उद्देश्य और मूलभाव को समझने का प्रयास करना चाहिए।
2. चित्र में दिखाई देने वाली मुख्य वस्तुओं या व्यक्तियों के चेहरे के भावों तथा क्रियाओं का चित्र के साथ संबंध समझने का प्रयास करना चाहिए।
3. चित्र-वर्णन करते समय उसे अत्यंत सजग एवं जागरूक रहते हुए उसकी प्रासंगिकता अर्थात् वर्तमान में उसके औचित्य को समझना चाहिए।
4. प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन में अपनी कल्पना के रंग भरने का समुचित प्रयत्न करना चाहिए।
5. चित्र के संबंध में विचारों की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से चित्र से ही संबद्ध होनी चाहिए। चित्र-वर्णन में व्यर्थ की अनावश्यक बातें लिखने से उसके प्रभाव में शिथिलता आ जाती है।
6. चित्र-वर्णन निर्धारित शब्द-सीमा को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए।
7. चित्र-वर्णन की भाषा सरल, स्पष्ट, प्रभावपूर्ण, रोचक, संक्षिप्त तथा सारगर्भित होनी चाहिए।
8. उचित विराम-चिह्नों का समुचित प्रयोग आवश्यकता के अनुसार किया जाना चाहिए।
9. चित्र-वर्णन करते समय भाषा आलंकारिक तथा अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होनी चाहिए। सहजता तथा सरलता चित्र-वर्णन का नैसर्गिक गुण है।
10. चित्र-वर्णन करते समय प्रथम वाक्य ऐसा होना चाहिए, जो पाठकों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करे तथा अंतिम वाक्य प्रभावोत्पादक होना चाहिए।
11. चित्र-वर्णन करते समय सबसे महत्त्वपूर्ण है उसके अंदर निहित संदेश अथवा शिक्षा का निरूपण। चित्र के माध्यम से जो भी संदेश या शिक्षा प्रकारांतर से दी जा रही हो, उसका स्पष्ट उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए।
12. भाषा में क्लिष्टता और अशिष्टता आदि से बचना चाहिए। वाक्य छोटे-छोटे, एक-दूसरे से जुड़े हुए तथा व्याकरणसम्मत होने चाहिए।
13. चित्र में दिखाई दे रहे व्यक्तियों के हाव-भाव, सुख-दुःख या दिखाई दे रही चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख अपनी कल्पना के अनुसार करना चाहिए।
14. महापुरुषों से संबंधित चित्रों के वर्णन में उनसे संबंधित अपनी धारणाओं, भावनाओं और ज्ञात तथ्यों का उल्लेख भी आप कर सकते हैं।
15. भाषा में यथावश्यक मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग अवश्य करना चाहिए; क्योंकि उससे विचाराभिव्यक्ति प्रभावशाली होती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निर्देश–निम्नलिखित प्रत्येक चित्र को ध्यान से देखकर लगभग 100 शब्दों में वर्णन कीजिए–

चित्र-1

वर्णन–यह मनोरम तथा विहंगम दृश्य राजपथ पर गणतंत्र दिवस समारोह की परेड का है। गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है। यह हमें उन वीरों की याद दिलाता है, जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया और हँसते-हँसते फाँसी के फंदे पर झूल गए। इस चित्र में भारतीय सशस्त्र सेना की टुकड़ियाँ तथा सैन्य-बैंड राष्ट्रपति को सलामी देते हुए गर्वोन्नत-चाल में आगे बढ़ रहे हैं। दर्शकों का विशाल समूह उनके हौसले को बढ़ावा दे रहा है। यह चित्र हमारे भीतर देशभक्ति तथा राष्ट्रप्रेम की भावना जगाकर स्वयं को देश के लिए समर्पित करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

चित्र-2

वर्णन–'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के महान उद्देश्य को प्रकट करता यह चित्र राष्ट्रीय सेवा योजना की स्कूली छात्राओं का है, ये छात्राएँ कन्या-भ्रूणहत्या रोकने के मन से संकल्प लेने के लिए लोगों को जाग्रत करने के उद्देश्य से जागरूकता जुलूस निकाल रही हैं। छात्राओं ने लोगों की भावनाओं को झकझोरने वाले और इस विषय पर गंभीरता से सोचने के लिए विवश करने वाले नारे लिखी तख्तियाँ भी ले रखी हैं। इनका यह कार्य सब प्रकार से सराहनीय है। हम सबको भी इसमें अपना यथावश्यक सहयोग करना चाहिए।

चित्र-3

वर्णन–यह चित्र बाल-टीकाकरण से संबंधित है, जिसमें दो महिला स्वास्थ्यकर्मी एक महिला के बच्चे को पोलियो की दवा पिला रही हैं। यह चित्र प्रकारांतर से पोलियो-उन्मूलन, बच्चों के टीकाकरण तथा स्वास्थ्य कार्यक्रमों के प्रति जनचेतना को प्रकट कर रहा है। साथ ही यह चित्र यह भी बता रहा है कि बाल-टीकाकरण कार्यक्रम अब ग्रामीण क्षेत्रों तक भी पहुँच चुका है। चित्र में शिशु की माता उसे बहुत स्नेह से निहार रही है। वह यह सोचकर प्रफुल्लित है कि अब उसकी आँखों का तारा एक भयानक बीमारी से सुरक्षित हो गया है।

चित्र-4

वर्णन–यह चित्र भारतीय महिला हॉकी टीम का है। पूरी टीम विजय-प्राप्ति के पश्चात् ग्रुप फ़ोटो करा रही है। इस चित्र में महिला खिलाड़ियों का आत्मविश्वास, उनकी उमंग तथा खेल-भावना झलक रही है। आपसी तालमेल, एकता तथा टीम के साथ मिल-जुलकर कुछ कर गुजरने की तीव्र इच्छा इसमें परिलक्षित है। यह चित्र सिद्ध करता है कि महिलाएँ अब हर क्षेत्र में भारत का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। चित्र में दिखाई दे रही खिलाड़ियों का आत्मविश्वास बता रहा है कि एक दिन भारत की यह हॉकी टीम विश्व में अपना परचम अवश्य लहराएगी।

चित्र-5

वर्णन–भारतीय वायु सेना के विमानों की पृष्ठभूमि वाला यह चित्र भारत की तीन महिला पायलटों का है। तीनों के मुख पर झलकता विश्वास और गौरव-युक्त मुसकान उनके दृढ़-संकल्प को प्रकट कर रही है। यह चित्र वायु-सेना में महिलाओं की महत्ती भूमिका को भी प्रकट कर रहा है। यह चित्र यह भी दर्शाता है कि भारतीय महिलाएँ अब हर चुनौती को स्वीकार करके पुरुषों के वर्चस्व को तोड़ना चाहती हैं।

चित्र-6

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वर्णन–यह चित्र भारतीय सीमाओं की सुरक्षा करती सशस्त्र महिला सैनिकों का है। अब भारतीय सेना में महिलाएँ भी सम्मिलित हो गईं हैं। कँटीली तारों से युक्त सीमा पर फौजी वर्दी में गर्वोन्नत चाल में चलती ये आत्मविश्वासी महिला सैनिक भारतीय सेना की छवि को उज्ज्वल कर रही हैं। इनके साहस और दृढ़-संकल्प पर हर भारतवासी को गर्व है। इन महिला सैनिकों के मुख मंडल पर झलक रहा आत्मविश्वास हमें कह रहा है कि जब तक ये वीरांगनाएँ हैं, तब तक देश की सीमाओं को कोई शत्रु छू भी नहीं सकता।

चित्र-7

वर्णन–यह चित्र 'दिव्यांग' नृत्य कलाकारों का है। भरतनाट्यम की पोशाक धारण किए ये तीन दिव्यांग कलाकार व्हील-चेयर (पहिया कुर्सी) पर हस्त-मुद्राएँ बनाकर भावपूर्ण नृत्य प्रस्तुत कर रहे हैं। यह चित्र सिद्ध करता है कि दिव्यांग भी किसी से कमतर नहीं होते। वे अपनी चाह व लगन से कुछ भी कर सकते हैं। इन्होंने अपने बुलंद हौसलों से अपनी दिव्यांगता को नकारकर स्वयं को एक सफल कलाकार प्रमाणित किया है।

चित्र-8

वर्णन–यह चित्र एवरेस्ट के शिखर पर सफल पर्वतारोहण के उपरांत राष्ट्रीय ध्वज फहराती एक भारतीय महिला पर्वतारोही का है। यह चित्र यह दर्शाता है कि एवरेस्ट की बुलंद चोटी को भी पद-दलित करके अब महिलाओं ने अपनी सामर्थ्य को प्रमाणित किया है। अब सफलता का ऐसा कोई शिखर नहीं है, जिसे भारतीय महिलाएँ फतह नहीं कर सकतीं। एवरेस्ट शिखर पर लहराता हुआ तिरंगा और इस भारतीय महिला पर्वतारोही के चेहरे पर चमकता विजय का गर्व मानो विश्व को कह रहा है–"सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्ताँ हमारा।"

चित्र-9

वर्णन–यह चित्र अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम का परिचायक है। चित्र में श्री हरिकोटा स्थित अंतरिक्ष प्रक्षेपण केंद्र में प्रक्षेपण को तैयार खड़े भारत में विकसित प्रक्षेपण यान को दिखाया गया है। यह चित्र अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत की प्रगति का सूचक है। इसरो ने अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त करके इस क्षेत्र में विकसित देशों के वर्चस्व को तोड़कर भारत को विश्व में गौरवान्वित किया है।

चित्र-10

वर्णन–यह चित्र धरती से सोना उगाते भारत के कर्मनिष्ठ महिला-पुरुष कृषकों की जी-तोड़ मेहनत को दर्शाता है। ये अपने धान के जलमग्न खेतों की कटाई में व्यस्त दिखाई देते हैं। चित्र की पृष्ठभूमि में भी लहलहाते खेतों का मनोरम दृश्य दिखाई दे रहा है। विपरीत परिस्थितियों में भी ये किस प्रकार देश के लिए अन्न उगाते हैं, यह चित्र इसका जीता-जागता उदाहरण है। यह चित्र भारतीय कृषक के परिश्रमी जीवन को दर्शाता है, जो सरदी, गरमी और बरसात की चिंता न करता हुआ रात-दिन खेतों में अपना पसीना बहाता है।

चित्र-11

वर्णन–यह चित्र यमुना-तट पर बने सौंदर्य व प्रेम के पावन प्रतीक ताजमहल का है। एक तरफ ताजमहल का अनुपम सौंदर्य हमें अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। वहीं दूसरी तरफ यमुना की अपार गंदगी हमारा सिर शर्म से झुका रही है। यमुना में व्याप्त यह गंदगी नदियों के प्रदूषण के प्रति हमारे गैर-ज़िम्मेदाराना रवैये को प्रदर्शित करते हुए हमें नदियों की पवित्रता और स्वच्छता बनाए रखने का संदेश दे रही है।

चित्र-12

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वर्णन–यह चित्र लालकिले पर स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण के उपरांत सैनिकों द्वारा की जा रही भव्य परेड का है। कदम-से-कदम तथा हाथ-से-हाथ मिलाते गर्वोन्नत सैनिक तथा पृष्ठभूमि में लालकिले की प्राचीर पर लहराता राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' हमारी आज़ादी की गौरव-गाथा का गान कर रहा है। यह चित्र हमारे भीतर अपनी आज़ादी की रक्षा और देश के गौरव को बनाए रखने का संकल्प लेने के लिए प्रेरित कर रहा है।

चित्र-13

वर्णन–यह चित्र भारत की राजधानी दिल्ली के विकास की गाथा कह रही मेट्रो ट्रेन का है। गगन चूमती ऊँची इमारतों की पृष्ठभूमि वाले इस चित्र में ऐलीवेटेड ट्रैक पर द्रुतगति से चलती मेट्रो तथा नीचे साफ़-सुथरी सड़कों पर निर्बाध रूप से चलता सड़क यातायात उज्ज्वल भारत की समृद्ध छवि को प्रदर्शित कर रहा है। निश्चय ही मेट्रो ट्रेन हमारी तकनीकी उन्नति का प्रतीक है। मेट्रो ट्रेन यातायात का सुखद और आधुनिक साधन है। इससे शहर की सड़कों पर भीड़ कम हुई है और पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण हुआ है। मेट्रो आधुनिक जीवन का सपना है।

चित्र-14

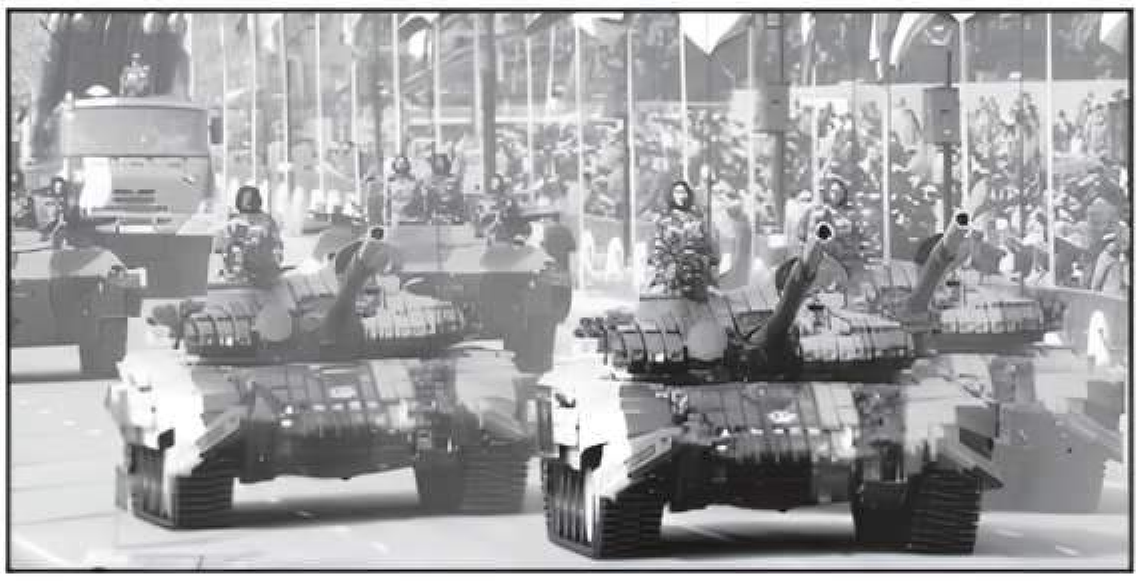

वर्णन–यह चित्र हमारी बढ़ती सैन्य व सामरिक शक्ति का प्रतीक है। गणतंत्र दिवस समारोह में राजपथ पर भारतीय टैंक तथा उन पर सवार हमारे जाँबाज सैनिक भारत की युद्ध-क्षमता का बखान कर रहे हैं। हमारी युद्ध-क्षमता का प्रदर्शन करता युद्धक टैंकों का यह दस्ता निश्चय ही शत्रु-राष्ट्रों के मन में एक भय ज़रूर पैदा करता है। चित्र की पृष्ठभूमि में लहराते तिरंगे तथा अपार जनसमूह सैनिकों का हौसला बढ़ा रहे हैं।

चित्र-15

वर्णन–यह चित्र 'वन-महोत्सव' के अवसर पर वृक्षारोपण करते स्कूली छात्रों का है। चित्र में जहाँ एक ओर स्कूली छात्राएँ बड़े उत्साह से वृक्षारोपण के इस पुनीत कार्य में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करती हुई गर्व का अनुभव कर रही हैं, वहीं दूसरे लोग भी बड़ी तन्मयता से वृक्षारोपण के इस कार्यक्रम में अपनी महती भूमिका निभाते दिखाई दे रहे हैं। एन०सी०सी० के छात्र भी इस कार्य में अपना योगदान कर रहे हैं। वृक्ष लगाते ये बच्चे प्रकृति और मानव के मध्य समन्वय स्थापित करने का संदेश देते हुए मनुष्य को प्रकृति की ओर लौट चलने की प्रेरणा दे रहे हैं।

चित्र-16

वर्णन–यह चित्र संपूर्ण भारत में बड़े ज़ोर-शोर से चलाए जा रहे साक्षरता अभियान का है। एक ग्रामीण पाठशाला में दो महिला शिक्षिकाएँ और एक पुरुष शिक्षक कुछ प्रौढ़ महिलाओं को साक्षरता का पाठ पढ़ा रहे हैं। महिलाओं के चेहरों पर कुछ करने का आत्मविश्वास स्पष्ट झलक रहा है, जो यह परिलक्षित करता है कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती, जब जागो, तभी सवेरा।

चित्र-17

वर्णन–यह चित्र स्वच्छ भारत अभियान के तहत सड़कों की सफ़ाई करके अपने देश को स्वच्छ बनाने का संकल्प धारण किए स्कूली छात्रों का है। ऐसे युवा-किशोरों का श्रम-दान और दृढ़-निश्चय देश की प्रगति व विकास में सहायक है। पृष्ठभूमि का हरा-भरा दृश्य यह बताने के लिए पर्याप्त है कि स्वच्छता के अभाव में इसकी उपयोगिता निरर्थक ही है। चित्र में प्रत्येक छात्र झाड़ू लेकर सफ़ाई के कार्य में व्यस्त दिखाई दे रहा है। ऐसा कार्यक्रम बच्चों में जीवन-मूल्यों का विकास करने में सहायक होता है।

चित्र-18

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वर्णन–यह चित्र तीन नेत्रहीन दिव्यांग छात्रों का है, जो मुसकराते हुए कंप्यूटर पर बेहद सुगमता व कुशलता से कार्य कर रहे हैं। चित्र में एक छात्रा तथा दो छात्र दिख रहे हैं। चित्र में दिख रहे छात्र यह सिद्ध कर रहे हैं कि दिव्यांगों को यदि उचित अवसर मिले तो वह भी देश के विकास में उतना ही योगदान दे सकते हैं, जितना कि सामान्य लोग। व्यक्ति के यदि इरादे बुलंद हों तो शारीरिक अक्षमता उसके मार्ग की बाधा नहीं बन सकती।

चित्र-19

वर्णन–यह चित्र वर्षा ऋतु में होने वाले जलभराव का है, जिसमें कार, स्कूटर और मोटर साइकिल सहित अनेक वाहनचालक जलभराव के कारण असमंजस की स्थिति में हैं कि आगे जाएँ भी या नहीं। एक कार और कुछ मोटर साइकिल सवारों ने उस पार जाने का निश्चय करके अपने वाहन आगे बढ़ा दिए हैं। यह चित्र हमें यह संदेश देता है कि यदि हम वर्षा-पूर्व नालियों को अतिक्रमण से मुक्तकर उन्हें साफ़ रखने में सहयोग दें तो जलभराव की इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

चित्र-20

वर्णन–यह चित्र ट्रैफ़िक जाम की आए दिन होने वाली समस्या से हमारा परिचय करा रहा है; इसमें फँसी एंबुलेंस यह बताने के लिए पर्याप्त है कि आज हमारी संवेदनाएँ कितनी मर गई हैं कि लोग किसी की जान बचाने के लिए सड़क पर उतरी एंबुलेंस को रास्ता देने को भी तैयार नहीं हैं। चित्र में अनेक वाहन इस सर्वाधिक आवश्यक सेवा का रास्ता रोककर खड़े हैं। यह चित्र भारतीय सड़कों पर चलते लोगों की संवेदनहीनता को प्रकट करता हुआ हमें यह संदेश देता है कि एंबुलेंस जैसी अत्यावश्यक सेवाओं को तुरंत मार्ग दिया जाना चाहिए। कल इस एंबुलेंस में हम या हमारा कोई प्रियजन भी हो सकता है।

संवाद-लेखन

संवाद-लेखन से आशय

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है; अतः समाज में परस्पर संबंध स्थापित करने के लिए उसे बातों का सहारा लेना पड़ता है। इस प्रकार दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली पारस्परिक बातचीत संवाद ही है। इन अभिव्यक्त भावों एवं विचारों को लेखनीबद्ध करना ही संवाद-लेखन है।

नाटक, एकांकी, फ़िल्म, धारावाहिक, एकल अभिनय इत्यादि सभी स्थानों पर संवाद की आवश्यकता पड़ती है। किसी भी प्रसंग, घटना, संस्मरण, विषय अथवा कहानी को लेकर 'संवाद' लिखे जा सकते हैं। संवाद-लेखन के माध्यम से औपचारिक वार्तालाप की कुशलता विकसित होती है। आज संवाद-लेखन एक व्यावसायिक साहित्यिक विधा के रूप में विकसित हो रहा है। यह एक कला है, जिसे अभ्यास द्वारा और अधिक विकसित किया जा सकता है।

संवाद-लेखन में ध्यान रखने योग्य मुख्य बातें

संवाद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–

1. संवाद लिखते समय सरल, प्रभावशाली तथा रोचक भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।
2. संवाद की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि वह श्रोता के मन पर सीधा प्रभाव डाल सके तथा उसमें जिज्ञासा उत्पन्न करे।
3. जहाँ तक हो सके, संवाद छोटे-छोटे तथा मनोरंजक होने चाहिए। संक्षिप्तता संवादों का एक नैसर्गिक गुण है। इसके अभाव में संवाद बोझिल हो जाते हैं।
4. संवाद द्विअर्थी नहीं होने चाहिए। वे बिना किसी दुराव-छिपाव के सीधे अंदाज़ में अपनी बात प्रकट करने वाले होने चाहिए।
5. संवादों में विचार तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत किए जाने चाहिए।
6. संवाद की भाषा पात्र, समय, स्थान तथा अवसरानुकूल गंभीर, विनोदपूर्ण या चुटीली होनी चाहिए।
7. संवादों में स्वाभाविक प्रवाह होना चाहिए।
8. संवाद ऐसे होने चाहिए, जो संबंधित घटना अथवा कहानी को आगे बढ़ाते हों।
9. संवाद पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को प्रकट करने वाले होने चाहिए।
10. संवादों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाना चाहिए; क्योंकि इनके द्वारा ही संवादों में सही भावात्मकता उतार-चढ़ाव तथा नाटकीयता आती है।
11. संवादों में यथावश्यक मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया जाना चाहिए।
12. शालीनता संवाद का एक नैसर्गिक गुण है। संवादों में अप्रचलित और अशिष्ट शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।
13. संवाद शिक्षाप्रद और सकारात्मक होने चाहिए।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रत्येक विषय पर लगभग 100 शब्दों में संवाद-लेखन कीजिए।*

1. यातायात के नियमों की सीख देते हुए अध्यापिका तथा छात्रा के मध्य संवाद।

अध्यापिका : आरुषि! आज तुम स्कूटी लेकर विद्यालय आई हो?
छात्रा : जी मैडम!
अध्यापिका : बेटी, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यह उम्र वाहन चलाने की नहीं है।
छात्रा : मेरी स्कूल बस छूट गई थी, मैडम।
अध्यापिका : स्कूल बस छूटने का अर्थ यह नहीं कि तुम अपनी सुरक्षा दाँव पर लगा दोगी।
छात्रा : मैं आगे से ध्यान रखूँगी, मैडम।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अध्यापिका : मैंने देखा था कि तुमने हैलमेट भी नहीं लगाया था और तुम बेहद तेज़गति से स्कूटी चला रही थीं।
छात्रा : मुझे लेट होने का डर था, मैडम।
अध्यापिका : मगर दुर्घटना से तो देर भली। वादा करो कि जब तक तुम्हें लाइसेंस न मिल जाए, तुम वाहन को हाथ भी नहीं लगाओगी।
छात्रा : जी मैडम!
अध्यापिका : और हाँ, भले ही पीछे बैठना हो, हैलमेट अवश्य पहनना और किसी को भी गाड़ी तेज़ मत चलाने देना।

2. **बदलती हुई शिक्षण-पद्धति पर विचार व्यक्त करने हेतु दो अध्यापकों के मध्य संवाद।**

वर्मा जी : अरे शर्मा जी! अब पढ़ाना तो बड़ा कठिन काम हो गया है; क्योंकि शिक्षण-पद्धति में रोज़ नए-नए बदलाव हो रहे हैं।
शर्मा जी : हाँ वर्मा जी, इन बदलावों से तो मैं भी परेशान हूँ।
वर्मा जी : पहले अच्छा था, पाठ पढ़ाया, प्रश्न लिखवाए और काम समाप्त।
शर्मा जी : हाँ, अब तो हर विषय में न जाने कितनी गतिविधियाँ आ गई हैं।
वर्मा जी : इसीलिए तो अब शिक्षक के लिए कंप्यूटर का ज्ञान भी आवश्यक हो गया है।
शर्मा जी : आश्चर्य की बात तो यह है कि बच्चे और अभिभावक इस बदलाव से बहुत खुश हैं।
वर्मा जी : इसे देखकर तो यही लगता है कि यह बदलाव आज की आवश्यकता है और इसे थोड़ा पहले होना चाहिए था।
शर्मा जी : हाँ, तुम बिलकुल ठीक कहते हो।

3. **'कन्या-भ्रूणहत्या' रोकने के विषय पर आधुनिक सास-बहू के मध्य संवाद।**

सास : बहू, एक बेटी को तो जन्म दे चुकी हो, अब अगली बार चुपके से अल्ट्रासाउंड करवा लेना.....
बहू : नहीं, माँ जी! यह कानूनी ज़ुर्म है।
सास : अरी चुपकर, कानून क्या सबकुछ देख रहा है?
बहू : पर माँ जी, हमारी अंतरात्मा तो देख रही है। ईश्वर ने लड़के-लड़की के मध्य कोई भेद नहीं किया तो हम क्यों करें। कन्या-भ्रूणहत्या ज़ुर्म और पाप है।
सास : मगर वंश चलाने वाला भी तो होना चाहिए।
बहू : माँ जी, यह पुरानी सोच है। आज लड़कियाँ हर क्षेत्र में आगे हैं। प्रधानमंत्री जी ने तो 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा दिया है।
सास : काश! हमारे ज़माने में भी बेटियों को पढ़ाया गया होता तो शायद आज मेरी यह सोच न होती।
बहू : सोचिए माँ जी, यदि आपको और मुझे भी जन्म से पहले ही मार दिया गया होता तो क्या आज हमारा अस्तित्व होता?
सास : ठीक कह रही हो बहू, तुमने मेरी आँखें खोल दीं।

4. **'ऊर्जा-संरक्षण' विषय पर दो छात्रों के मध्य संवाद।**

आशीष : अमित, जल्दी करो पी० टी० के लिए देर हो रही है।
अमित : पहले सारी लाइटें और पंखे बंद कर दें, फिर चलते हैं।
आशीष : अरे तुम लाइट-पंखों की क्यों इतनी फ़िक्र करते हो? बिल तो विद्यालय को देना है।
अमित : बिल तो विद्यालय को देना है, मगर बिजली की बर्बादी से हमें क्या लाभ है?
आशीष : 4 पंखे और 4 ट्यूबलाइट बुझाकर तू कितनी बिजली बचाएगा?
अमित : यदि 1 अरब से अधिक जनसंख्या वाले देश का प्रत्येक नागरिक व्यर्थ जलता हुआ एक बल्ब भी बुझा दे तो इससे इतनी बिजली बचेगी कि बिजली का संकट ही समाप्त हो जाएगा।
आशीष : तो क्या 4-4 घंटे की बिजली की कटौती से हमें छुटकारा मिल जाएगा?
अमित : हाँ, बिलकुल मिल जाएगा।
आशीष : तब तो अपने देश को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए हम सभी को अपना फ़र्ज़ निभाना होगा।
अमित : चलो, तुमने मेरी बात मानकर समझदारी का काम किया, मगर अब तुम्हें इसे अपनी आदत बनाना होगा कि जाने से पहले लाइट, पंखे सब बंद करोगे।
आशीष : ठीक है यार, मानी तेरी ये बात भी मानी।

5. **सरकार की प्रौढ़-शिक्षा नीति से साक्षर बने दो वृद्धों के मध्य संवाद।**

पहला वृद्ध : भैया! भला हो सरकार का, जो इसने प्रौढ़ शिक्षा अभियान चलाकर हम जैसे ठेठ अनपढ़ों को भी पढ़ना सिखा दिया।
दूसरा वृद्ध : ठीक कहते हो भैया! अगर सरकार ने यह अभियान न चलाया होता तो हम जीवनभर अनपढ़ ही बने रहते।
पहला वृद्ध : और हमारे लिए काला अक्षर भैंस बराबर ही बना रहता।
दूसरा वृद्ध : मैं तो अब अखबार भी पढ़ लेता हूँ और अब मुझे बैंक में भी अँगूठा नहीं लगाना पड़ता।
पहला वृद्ध : हाँ, अखबार तो मैं भी पढ़ लेता हूँ। मैंने तो अपने लिए अखबार मँगवाना भी शुरू कर दिया है।
दूसरा वृद्ध : वैसे पढ़ने-लिखने का एक तो फ़ायदा हुआ है कि अब साहूकार हिसाब में कोई हेरा-फ़ेरी नहीं करता है।
पहला वृद्ध : सो तो है। पढ़े-लिखों के साथ साहूकार बात भी ठीक से करता है।

6. **'जंक फ़ूड' पर जागरूकता उत्पन्न करने हेतु माँ तथा पुत्र में संवाद।**

पुत्र : माँ, आज मैं टिफ़िन में केवल पिज़्ज़ा, बर्गर और कोला ले जाऊँगा।
माँ : बेटा, तुम्हें इस उम्र में जंक फ़ूड नहीं खाने चाहिए, बल्कि पौष्टिक आहार लेना चाहिए।
पुत्र : मगर माँ, मेरे सारे मित्र ऐसा ही कुछ लाते हैं।
माँ : यदि वे लाते हैं तो उन्हें भी समझाओ।
पुत्र : क्या समझाऊँ, माँ?
माँ : यही कि जंक फ़ूड उन्हें केवल मोटा बनाएगा, स्वस्थ नहीं। जो पौष्टिकता अंकुरित दालों, दलिये, सोयाबीन आदि में है, वह मैदे से बने पदार्थों में नहीं है।
पुत्र : क्या यही कारण है कि मेरे सारे मित्र मोटे हैं और खेलते हुए हाँफ जाते हैं?
माँ : हाँ बेटा, जंक फ़ूड पौष्टिकता से रहित होते हैं। यह पेट तो भरता है, मगर तंदुरुस्त नहीं करता।
पुत्र : समझ गया माँ, आज से जंक फ़ूड की छुट्टी।

7. **'जन-धन योजना' में बचत को बढ़ावा देने के लिए बैंककर्मी तथा ग्रामीण के मध्य संवाद।**

बैंककर्मी : काका! सरकार ने एक नई योजना शुरू की है जन-धन योजना।
ग्रामीण : अरे योजनाएँ तो शहरवालों के लिए होती हैं। गाँव वालों को इससे क्या लाभ?
बैंककर्मी : नहीं काका! यह योजना उन लोगों के लिए है, जिनकी छोटी-छोटी बचत बैंक तक नहीं पहुँच पाती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ग्रामीण : बचत को बैंक में पहुँचाना ही क्यों है?
बैंककर्मी : काका! बैंक में धन सुरक्षित रहता है, उस पर ब्याज़ भी मिलता है तथा वह देश के काम भी आता है।
ग्रामीण : अरे हमारे 200-500 रुपयों से देश का क्या भला होगा?
बैंककर्मी : काका! इस योजना में पहले ही दिन 1 करोड़ खाते खुले हैं। सब 500 रुपये भी बैंक में डालें तो कितना धन इकट्ठा होगा।
ग्रामीण : 500 करोड़! अरे इतनी भारी रकम से तो गाँवों का बड़ा भला होगा।
बैंककर्मी : तो क्या सोचा है, काका?
ग्रामीण : अरे सोचना क्या है? खोल दो हमारा भी खाता।

8. 'मेक इन इंडिया योजना' पर दो बेरोज़गार युवाओं के मध्य संवाद।

युवा 1 : मैंने सुना है प्रधानमंत्री जी ने कोई नई योजना घोषित की है?
युवा 2 : हाँ, मेक इन इंडिया योजना।
युवा 1 : क्या है यह योजना? इससे हम बेरोज़गारों को क्या लाभ होगा?
युवा 2 : इससे भारत में देशी और विदेशी पूँजी-निवेश को बढ़ावा मिलेगा। नए उद्योग लगेंगे, जिनसे रोज़गार के नए अवसर पैदा होंगे।
युवा 1 : ऐसा तो न जाने हम कब से सुनते आ रहे हैं।
युवा 2 : मित्र! अब ऐसा नहीं है। अब भारत की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो रही है और भारत विश्व-व्यापार का नया केंद्र बन रहा है।
युवा 1 : तो हमें क्या करना चाहिए?
युवा 2 : तुम भी मेरी तरह पास के रोज़गार केंद्र में पंजीकरण करवाओ।
युवा 1 : तुम ठीक कहते हो, मैं अभी जाता हूँ।

9. 'स्वच्छ भारत अभियान' पर दो नागरिकों के मध्य संवाद।

नागरिक 1 : लो सरकार ने फिर एक अभियान शुरू किया है— 'स्वच्छ भारत अभियान'।
नागरिक 2 : हाँ, यह तो बहुत अच्छी पहल है।
नागरिक 1 : ऐसे तो न जाने कितनी योजनाएँ आती हैं और चली जाती हैं।
नागरिक 2 : मगर हर योजना की सफलता का एक ही मापदंड है और वह है—'नागरिकों की भागीदारी'।
नागरिक 1 : परंतु एक मेरे करने से क्या भारत स्वच्छ हो जाएगा?
नागरिक 2 : नहीं! मगर तुम्हारी तरह भारत का प्रत्येक नागरिक यही सोचे तो कुछ नहीं होगा। यदि भारत के सभी नागरिक रोज़ाना दो चीज़ें साफ़ करें, तब क्या कहीं गंदगी रह पाएगी?
नागरिक 1 : यह तो मैंने सोचा ही नहीं था कि बूँद-बूँद से ही सागर भरता है।
नागरिक 2 : हाँ, यदि यह अभियान सफल हुआ तो भारत रोगमुक्त, शोकमुक्त, स्वच्छ तथा सफल होगा और निवेश एवं पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

10. 'साक्षरता मिशन' पर जागरूकता फैलाने हेतु दो मित्रों के मध्य संवाद।

मित्र 1 : रोहन तुम गरमी की छुट्टियों में भी रोज़ बस्ता लेकर कहाँ जाते हो?
मित्र 2 : मैं पास की झुग्गी-झोपड़ी में जाकर गरीब लोगों को पढ़ाता हूँ।
मित्र 1 : अरे वाह! समाज-सेवा का बुखार तुम्हें भी चढ़ गया।
मित्र 2 : बुखार नहीं मित्र, संकल्प।
मित्र 1 : संकल्प से तुम्हारा क्या मतलब है?
मित्र 2 : मतलब यह कि मैंने इन 45 दिनों में कम-से-कम 45 लोगों को साक्षर बनाने का प्रण लिया है।
मित्र 1 : इस प्रण से तुम्हें क्या मिलेगा?
मित्र 2 : आत्मसंतुष्टि और शांति! पढ़-लिखकर यदि हमारी पढ़ाई किसी के काम न आ सके तो ऐसी पढ़ाई का क्या लाभ।
मित्र 1 : कह तो तुम ठीक रहे हो।
मित्र 2 : साक्षरता फैलने से समाज में शोषण रुकेगा और अपराध भी कम होंगे।
मित्र 1 : आज से मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।
मित्र 2 : यह हुई न बात। एक और एक ग्यारह होते हैं।

11. आई०पी०एल० क्रिकेट मैचों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए दो मित्रों के मध्य संवाद।

रमेश : अरे महेश! अब तुम कहाँ रहते हो? दिखाई भी नहीं देते।
महेश : अरे! आजकल आई०पी०एल० क्रिकेट मैच चल रहे हैं, उन्हें ही देखता रहता हूँ।
रमेश : मेरी तो इन मैचों में कोई रुचि नहीं है।
महेश : मगर वन डे मैचों का स्कोर जानने में तो तुम खूब रुचि दिखाते हो?
रमेश : वन डे मैच अलग बात है। आई०पी०एल० के मैचों को तो मैं व्यापार मानता हूँ।
महेश : रमेश, मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा।
रमेश : अरे भाई! सीधी-सी बात है, जिन खिलाड़ियों के प्रति हम इतनी श्रद्धा रखते हैं, वे स्वयं को पैसे के लिए अपनी बोली लगवाकर बेचते हैं।
महेश : हाँ, यह बात तो मुझे भी अनुचित लगती है।
रमेश : इसके अलावा, इस खेल से सट्टेबाज़ी को बढ़ावा मिल रहा है, जो क्रिकेट जैसे प्रतिष्ठित खेल का अपमान है।
महेश : हाँ, मैं तुम्हारी इस बात से पूर्णतः सहमत हूँ।

12. समय का सदुप्रयोग समझाते हुए दादा तथा पोते के मध्य संवाद।

दादा : बेटा! क्या तुमने ग्रीष्मावकाश का कार्य करना प्रारंभ कर दिया है?
पोता : दादा जी! अभी तो छुट्टियों के पाँच दिन ही बीते हैं।
दादा : बेटा, मगर समय बहुत मूल्यवान् है, इसलिए उसका सदुपयोग करना चाहिए।
पोता : दादा जी, समय के सदुप्रयोग से आपका क्या मतलब है?
दादा : यही कि हमें समय का एक पल भी व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए।
पोता : मगर मैं खेलकर समय का सदुप्रयोग ही तो कर रहा हूँ।
दादा : बेटा, यह समय का सदुप्रयोग नहीं है। अगर तुम खेलने के साथ-साथ थोड़ा-थोड़ा समय अपने सभी विषयों के अध्ययन में लगाओ, तभी वह समय का सदुप्रयोग कहलाएगा।
पोता : ठीक है, दादा जी! मैं आज से ही समय के एक-एक पल का सदुप्रयोग करूँगा।

13. पोलियो टीकाकरण पर जागरूकता फैलाने आई स्वास्थ्य सेविका तथा गाँव के मुखिया के मध्य संवाद।

स्वास्थ्य सेविका : मुखिया जी! नमस्कार!
मुखिया : नमस्कार बहन जी! आइए, बैठिए।
स्वा० सेविका : मुखिया जी, आगामी रविवार को आपके गाँव में पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम है, जिसमें आपका सहयोग चाहिए।
मुखिया : मुझे क्या करना होगा?
स्वा० सेविका : कल आप गाँव के सभी स्त्री-पुरुषों को गाँव की चौपाल पर बुला लें, ताकि मैं उन्हें इस कार्यक्रम की जानकारी दे सकूँ।
मुखिया : ठीक है बहन जी, मैं आपको इस कार्य में पूरा सहयोग दूँगा।
स्वा० सेविका : मुखिया जी! सब लोगों के सहयोग से ही भारत पोलियोमुक्त हो सका है।

14. शाकाहार के लाभ बताते हुए दो मित्रों के मध्य संवाद।

राम : अरे श्याम! तुम शाकाहार को लाभदायक मानते हो या मांसाहार को?
श्याम : इसमें मानने की कौन-सी बात है, शाकाहार ही सर्वोत्तम होता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

राम : वह कैसे?
श्याम : क्योंकि शाकाहार से ही शरीर के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्त्व एकसाथ प्राप्त हो जाते हैं।
राम : मगर सब्ज़ियों में तो सारे पोषक तत्त्व नहीं होते।
श्याम : अरे भाई, शाकाहार का मतलब केवल सब्ज़ियाँ खाना नहीं होता। सभी फल, मेवे, अनाज, दूध, दही और दालें भी शाकाहार ही हैं, जिनमें विभिन्न पोषक तत्त्व होते हैं।
राम : वैसे तो शाकाहार सस्ता और सर्वसुलभ भी होता है।
श्याम : शाकाहार से बर्ड फ्लू जैसे संक्रमण रोगों का खतरा भी नहीं होता।
राम : हाँ, ऐसे तो शाकाहार से जीव-हत्या का पाप भी नहीं लगता।

15. बढ़ती महँगाई पर चिंतित दो महिलाओं के मध्य संवाद।

पहली महिला : अरे बहन! कहाँ गई थीं?
दूसरी महिला : बाज़ार गई थी, राशन लेने के लिए।
पहली महिला : लेकिन सामान तो थोड़ा ही लाई हो।
दूसरी महिला : क्या करें बहन, महँगाई इतनी बढ़ गई है कि कुछ भी खरीदने की हिम्मत नहीं होती।
पहली महिला : तुम कहती तो ठीक हो। मगर यह समझ नहीं आता कि यह महँगाई बढ़ क्यों रही है?
दूसरी महिला : इसमें समझना ही क्या है, इसका कारण जमाख़ोरी है।
पहली महिला : मगर जमाख़ोरी से महँगाई का क्या संबंध है?
दूसरी महिला : संबंध है, बड़े व्यापारी आवश्यक वस्तुओं को बड़ी मात्रा में अपने गोदामों में जमा कर लेते हैं, जिससे उनकी कमी हो जाती है और महँगाई बढ़ जाती है।
पहली महिला : सरकार इन पर अंकुश क्यों नहीं लगाती?
दूसरी महिला : लगाती तो है, लेकिन कोई इनकी शिकायत तो नहीं करता।
पहली महिला : हाँ, ये बात तो है। महँगाई से बचने के लिए पब्लिक को आवाज़ तो उठानी पड़ेगी।

16. ग्रामीणों को कुपोषण की जानकारी प्रदान करने आए डॉक्टर तथा ग्रामीण महिला के मध्य संवाद।

डॉक्टर : बहन जी! आपका बच्चा तो बहुत कमज़ोर है। इसके भोजन-पानी पर ध्यान देने की ज़रूरत है।
महिला : डॉक्टर साहब! जो हम खाते हैं, वही यह भी खाता है। महँगे काजू-बादाम तो हम खिला नहीं सकते।
डॉक्टर : बहन जी! इसे काजू-बादाम की नहीं, पौष्टिक भोजन की ज़रूरत है: जो महँगा नहीं, बल्कि बहुत सस्ता होता है।
महिला : पौष्टिक भोजन कैसा होता है?
डॉक्टर : सब जगह उपलब्ध दलिया, दाल, चावल, मक्का, चना, सोयाबीन, हरी सब्ज़ियाँ, मौसमी फल, अंडा आदि पौष्टिक भोजन की चीज़ें हैं।
महिला : डॉक्टर साहब! क्या इन सब चीज़ों को खिलाने से मेरा बच्चा स्वस्थ हो जाएगा?
डॉक्टर : हाँ, बहन जी! यह कुपोषण का शिकार हो गया है और इन सब चीज़ों के सेवन से यह हृष्ट-पुष्ट हो जाएगा।
महिला : ठीक है डॉक्टर साहब! मैं आज से ही इसे ये सब चीज़ें खिलाऊँगी।

17. अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम विषय पर विज्ञान के दो छात्रों के मध्य संवाद।

रामन : शिवम, आज़ादी के बाद हमारे देश ने सभी क्षेत्रों में बहुत उन्नति की है।
शिवम : सबसे अधिक प्रगति तो अंतरिक्ष के क्षेत्र में की है।
रामन : हाँ, तुम बिलकुल ठीक कहते हो। पहले हमारे मौसम वैज्ञानिक और दूरसंचार विभाग विदेशी उपग्रहों पर निर्भर थे, लेकिन आज हम आत्मनिर्भर हैं।
शिवम : आज हम न केवल आत्मनिर्भर हैं, बल्कि दूसरे देशों के उपग्रह भी अंतरिक्ष में स्थापित कर रहे हैं। फरवरी, 2017 में तो हमारे वैज्ञानिकों ने एक साथ 104 उपग्रह अंतरिक्ष में भेजकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है।
रामन : हाँ, तुम ठीक कहते हो। इनमें 3 उपग्रह भारत के और 101 उपग्रह विदेशी थे।
शिवम : निश्चय ही इसके लिए हमारे अंतरिक्ष वैज्ञानिक बधाई के पात्र हैं।

18. आपस में कार पूल करने के इच्छुक दो पड़ोसियों के मध्य संवाद।

शर्मा जी : अरे वर्मा जी! क्या बात, कुछ परेशान लग रहे हो?
वर्मा जी : हाँ शर्मा जी! पेट्रोल की कीमत बढ़ने से परेशान हूँ। ऑफ़िस आने-जाने का खर्च बहुत बढ़ गया है।
शर्मा जी : इसका तो एक सरल उपाय है–कार पूलिंग।
वर्मा जी : मैं कुछ समझा नहीं।
शर्मा जी : अरे भाई! मेरा और तुम्हारा कार्यालय पास-पास है और हम दोनों अपनी-अपनी कार से कार्यालय जाते हैं।
वर्मा जी : तो इससे क्या होता है?
शर्मा जी : यदि तीन दिन मेरी कार चले और तीन दिन तुम्हारी तो एक कार का पेट्रोल खर्च बच जाएगा।
वर्मा जी : यह तो बहुत अच्छी योजना है।
शर्मा जी : इसे ही तो कार पूलिंग कहते हैं। इससे प्रदूषण में भी कमी होती है।
वर्मा जी : तो ठीक है शर्मा जी! सोमवार से ही कार पूलिंग शुरू करते हैं।

19. योगाभ्यास के लाभ तथा विश्व योग दिवस के विषय पर योग-शिक्षक तथा विद्यार्थी के मध्य संवाद।

विद्यार्थी : गुरु जी! योग करने से क्या लाभ हैं?
योग-शिक्षक : योग करने से तन और मन दोनों स्वस्थ और स्फूर्तिवान् रहते हैं।
विद्यार्थी : हमें कौन-कौन-से योग-आसन करने चाहिए?
योग-शिक्षक : बच्चों को सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, कपालभाति, भुजंगासन आदि सरल आसन करने चाहिए।
विद्यार्थी : योगाभ्यास कब करना चाहिए?
योग-शिक्षक : योगाभ्यास प्रायः खाली पेट और योग-शिक्षक की देख-रेख में ही करना चाहिए।
विद्यार्थी : गुरु जी! क्या योग का प्रचलन हमारे देश में ही है?
योग-शिक्षक : नहीं, आज योग पूरे विश्व में किया जा रहा है। संसार को योग का महत्त्व समझाने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने 'विश्व योग दिवस' मनाना प्रारंभ किया है।
विद्यार्थी : गुरु जी! विश्व योग दिवस का श्रेय तो हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को जाता है।
योग-शिक्षक : हाँ, तुम ठीक कह रहे हो।

20. जीवन में स्वच्छता का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए अध्यापिका तथा छात्र के मध्य संवाद।

अध्यापिका : रोहन! क्या तुम्हें पता है कि 'स्वच्छ भारत अभियान' किसने चलाया है?
छात्र : मैडम, यह अभियान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने चलाया है।
अध्यापिका : उन्होंने यह अभियान क्यों चलाया?
छात्र : ताकि हमारा देश साफ़-स्वच्छ रहे और लोग रोगमुक्त तथा हृष्ट-पुष्ट रहें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अध्यापिका : इससे पता चलता है कि जीवन में स्वच्छता का बहुत महत्त्व है।
छात्र : मैडम, हमें सफ़ाई के लिए क्या-क्या करना चाहिए?
अध्यापिका : हमें प्रतिदिन स्नान करना चाहिए, नाखूनों तथा दाँतों की नियमित सफ़ाई करनी चाहिए।
छात्र : इसके अलावा और किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।
अध्यापिका : भोजन करने से पूर्व हाथों को अच्छी प्रकार साबुन से साफ़ करना चाहिए। यह भोजन स्वच्छतापूर्वक तैयार किया हुआ तथा साफ़ बरतनों में एवं साफ़ स्थान पर बैठकर करना चाहिए।
छात्र : मैडम! हम आपके द्वारा बताई गई सभी बातों का ध्यान रखेंगे।

21. घर में शौचालय के निर्माण हेतु जागरूकता लाने वाली बहू तथा सास के मध्य संवाद।

बहू : माँ जी, घर में शौचालय कहाँ है?
सास : बहू! हमारे घर में शौचालय नहीं है।
बहू : फिर घर के लोग शौच के लिए कहाँ जाते हैं?
सास : सब खुले में ही जाते हैं।
बहू : क्या स्त्रियाँ भी खुले में ही जाती हैं?
सास : हाँ बहू, वे भी खुले में ही जाती हैं।
बहू : यह तो बड़े शर्म की बात है और स्त्रियों के स्वाभिमान से जुड़ी है।
सास : ऐसे तो कभी सोचा ही नहीं था।
बहू : तो अब सोचिए माँ जी! और घर में शौचालय बनवाइए।
सास : तुम ठीक कहती हो बहू! मैं आज ही शौचालय का निर्माण शुरू करवाती हूँ।

22. छात्रों द्वारा मोबाइल फोन के दुरुपयोग पर दो अभिभावकों के मध्य संवाद।

अभिभावक 1 : आपका बच्चा इसी विद्यालय में पढ़ता है?
अभिभावक 2 : हाँ भाईसाहब! इसी विद्यालय में पढ़ता है।
अभिभावक 1 : आपका बच्चा पढ़ाई में कैसा है?
अभिभावक 2 : अच्छा था, लेकिन मोबाइल फोन के कारण पिछड़ गया।
अभिभावक 1 : आप ठीक कह रहे हैं, मोबाइल के कारण बच्चों का पढ़ाई से मन हट रहा है।
अभिभावक 2 : ध्यान हट नहीं रहा, बल्कि भटक रहा है। इसीलिए उनके चरित्र में गिरावट आ रही है।
अभिभावक 1 : मगर इसका कोई उपाय भी तो नहीं है।
अभिभावक 2 : उपाय तो है। बच्चों को एंड्रोइड फोन दिए ही न जाएँ और अगर उनका प्रयोग बच्चों के लिए ज़रूरी ही हो तो उस पर अभिभावकों को कड़ी नज़र रखनी चाहिए।
अभिभावक 1 : हाँ भाईसाहब! अब तो यही करना पड़ेगा। इसी में बच्चों की भलाई है।

23. नारी-असुरक्षा के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए दो मित्रों के मध्य संवाद।

राम : अरे श्याम! क्या बात है, बहुत उत्तेजित लग रहे हो?
श्याम : हाँ, मेरा खून खौल रहा है।
राम : क्यों, ऐसा क्या हुआ?
श्याम : अभी-अभी टी०वी० पर एक खबर देखकर आ रहा हूँ कि दो बदमाशों ने एक लड़की पर तेज़ाब फेंक दिया और आश्चर्य की बात तो यह है कि पुलिस वाले खड़े यह सब चुपचाप देखते रहे।
राम : इसके लिए पुलिस वाले क्या, हम सब भी दोषी हैं; क्योंकि नारी-उत्पीड़न की घटनाओं में हम सभी मूकदर्शक बने रहते हैं।
श्याम : हाँ, यह बात तो है, नारी-सुरक्षा का दायित्व हम सबका है। हमें प्राण देकर भी अपने इस कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

24. वृद्धाश्रम की यात्रा के दौरान छात्र व वृद्ध के मध्य संवाद।

छात्र : बाबा जी नमस्ते!
वृद्ध : नमस्ते बेटा! खुश रहो!
छात्र : बाबा जी, क्या आपका कोई बेटा नहीं है?
वृद्ध : बेटा, मेरे बेटा भी है और तुम्हारे जैसा एक पोता भी है।
छात्र : फिर आप उनके साथ क्यों नहीं रहते?
वृद्ध : वे सब विदेश में रहते हैं।
छात्र : वे आपको इस अवस्था में अकेला छोड़कर क्यों चले गए?
वृद्ध : बेटा, उन्हें बहुत सारा पैसा कमाना था।
छात्र : लेकिन माता-पिता की सेवा से बढ़कर तो कोई कमाई नहीं होती।
वृद्ध : बेटा, तुम्हारे विचार बहुत अच्छे हैं। हर बेटे के माता-पिता के प्रति ऐसे ही विचार होने चाहिए।
छात्र : बाबा जी, क्या आपको अपने बेटे पर गुस्सा नहीं आता?
वृद्ध : नहीं बेटा! मैं तो चाहता हूँ कि वह जहाँ रहे, खुश रहे।
छात्र : बाबा जी, आप बहुत अच्छे हैं। मैं आपसे फिर मिलने आऊँगा।
वृद्ध : ठीक है बेटा! तुम जीते रहो! खुश रहो!

25. बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के दौर में कक्षा में छात्रों के मध्य होने वाले संवाद।

पहला छात्र : कल तो गणित के सर इसी बात का पता करने में लगे रहे कि उन पर कागज़ की बॉल किसने फेंकी थी। मगर वे इसका पता नहीं लगा सके।
दूसरा छात्र : तो क्या तुम इस विषय में कुछ जानते हो?
पहला छात्र : हाँ, बिलकुल जानता हूँ। वह बॉल मैंने ही फेंकी थी।
दूसरा छात्र : मगर वर्मा सर ने तो पूरी कक्षा ही खड़ी कर दी थी, फिर भी किसी ने तुम्हारा नाम नहीं बताया!
पहला छात्र : अरे दोस्त! इसी को तो संगठन कहते हैं।
तीसरा छात्र : नहीं भाई! इसे अनुशासनहीनता कहते हैं।
पहला छात्र : भले ही इसे अनुशासनहीनता कहते हैं, मगर मज़ा करने और अपनी जान बचाने का तो यही एक तरीका है।
दूसरा छात्र : मगर इससे पढ़ाई का नुकसान तो हम सभी का होता है। सर का क्या है, वे पढ़ाना बंद कर देंगे।
पहला छात्र : लेकिन पढ़ाई तो बंद नहीं होनी चाहिए।
दूसरा छात्र : इसके लिए तो पूरी कक्षा को अनुशासन में रहना पड़ेगा।
पहला छात्र : बिलकुल ठीक, आज से यह सब बंद।

26. दिल्ली में बढ़ते ट्रैफ़िक जाम की समस्या पर चिंता व्यक्त करते हुए दो व्यक्तियों के मध्य संवाद।

पहला व्यक्ति : अरे भाई! दिल्ली में तो ट्रैफ़िक जाम ने जीना मुहाल कर दिया है।
दूसरा व्यक्ति : तुम ठीक कहते हो भाई, अचानक कहीं भी जाम लग जाता है और लोग कई-कई घंटे जाम में फँसे रहते हैं।
पहला व्यक्ति : इतने फ्लाई ओवर बन गए हैं, मैट्रो रेल भी चल रही है, फिर भी जाम में कोई कमी नहीं आई है।
दूसरा व्यक्ति : अरे भाई! इस समस्या का मुख्य कारण दिल्ली की आबादी और वाहनों की संख्या में हो रही वृद्धि है।
पहला व्यक्ति : हाँ, तुम ठीक कहते हो। जब तक इन दोनों पर नियंत्रण नहीं होगा, तब तक यह समस्या बनी ही रहेगी।
दूसरा व्यक्ति : पता नहीं, दिल्ली को इस समस्या से कब मुक्ति मिलेगी?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

27. हिंदी पत्रिकाएँ पढ़नी चाहिए। इस विषय पर दो मित्रों के मध्य संवाद।

कमल : अरे विमल! तुम्हारे हाथ में यह क्या है?
विमल : पढ़ने के लिए एक पत्रिका लाया हूँ।
कमल : मगर यह तो हिंदी-पत्रिका है।
विमल : हाँ, तो क्या हुआ, हिंदी हमारी राजभाषा है। यदि हम इसका प्रयोग नहीं करेंगे तो इसका प्रसार कैसे होगा?
कमल : लेकिन मेरे माता-पिता तो मुझे अंग्रेज़ी पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए कहते हैं।
विमल : क्या इसका कोई विशेष कारण है?
कमल : उनके विचार से हिंदी पढ़ना पिछड़ेपन की निशानी है।
विमल : अपनी भाषा का प्रयोग तो पिछड़ापन नहीं है, बल्कि यह तो गर्व की बात है। अपनी भाषा की उन्नति तो सब उन्नतियों का मूल है। अमेरिका, रूस, जापान, चीन आदि सभी विकसित देशों की उन्नति का कारण यही है कि वहाँ के लोग अपनी भाषा ही प्रयोग में लाते हैं।
कमल : यह बात तो तुम सत्य कह रहे हो।
विमल : अपनी भाषा का सम्मान करना तो हमारा कर्तव्य है।
कमल : ठीक है, मैं भी आज से अपनी भाषा का ही प्रयोग करूँगा।

28. युवावर्ग का जीवन-मंत्र–'ये दिल माँगे मोर' विषय पर दो मित्रों के मध्य संवाद।

मोहन : अरे सोहन! पुलिस सब-इंस्पेक्टर बनने की बधाई!
सोहन : धन्यवाद! मगर इस सफलता में आपकी शुभकामनाएँ भी मेरे साथ थीं।
मोहन : चलो, अब आराम से नौकरी करो।
सोहन : अभी आराम कैसा दोस्त! युवावर्ग का तो जीवन-मंत्र है– 'ये दिल माँगे मोर।'
मोहन : मैं कुछ समझा नहीं।
सोहन : अरे भाई! मेरा लक्ष्य तो आई०पी०एस० बनना है। यह तो उसकी पहली सीढ़ी है।
मोहन : ठीक है भाई! मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। तुम अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करोगे।
सोहन : धन्यवाद!

29. बस की दयनीय हालत पर यात्री एवं कंडक्टर के मध्य संवाद।

यात्री : भैया! आपकी बस में शीशे भी नहीं है, ठंडी हवा आ रही है।
कंडक्टर : आप किसी दूसरी सीट पर बैठ जाइए।
यात्री : सीटें भी सब टूटी और कटी-फटी हैं। आप ऐसी बस क्यों चलाते हैं?
कंडक्टर : भाई साहब, सरकारी बस हैं, हमारी निजी बस नहीं है।
यात्री : ऐसी बस में यात्रियों को जो परेशानियाँ होती है, क्या आपको उनका अनुमान नहीं है?
कंडक्टर : मुझे सब पता है, लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ?
यात्री : मैं इस विषय में परिवहन मंत्री को पत्र लिखूँगा और साथ ही अख़बार के संपादक को भी, ताकि अधिकारियों की आँख खुल सकें।
कंडक्टर : आप जैसे सजग नागरिक ही देश में परिवर्तन ला सकते हैं।

30. दादा और पोते के मध्य प्रातः भ्रमण पर संवाद।

पोता : दादाजी, आप सुबह इतनी जल्दी क्यों उठते हैं?
दादा : बेटा! मैं प्रातः भ्रमण के लिए जाता हूँ।
पोता : दादाजी! प्रातः भ्रमण का क्या लाभ है?
दादा : प्रातः भ्रमण से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है?
पोता : प्रातः भ्रमण से शरीर स्वस्थ कैसे रहता है?
दादा : सुबह के समय वातावरण प्रदूषण रहित होता है और वायु भी शुद्ध होती है।
पोता : शुद्ध वायु का क्या लाभ है, दादाजी?
दादा : बेटा! शुद्ध वायु में ऑक्सीजन की मात्रा अधिक होती है, जो हमारे फेफड़ों को स्वस्थ करके हमारी आयु बढ़ाती है।
पोता : तो दादाजी! कल से मैं भी आपके साथ प्रातः भ्रमण पर चलूँगा।
दादा : बेटा! तुम्हारा यह संकल्प बहुत अच्छा है।

31. सड़क पर फैली गंदगी के विषय में दो राहगीरों को संवाद।

पहला : अरे भाई! देखकर चलो सड़क पर बहुत गंदगी है।
दूसरा : हाँ भाई, जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं।
पहला : नालियों का पानी सड़क पर फैल गया है, उफ! कितनी बदबू आ रही है।
दूसरा : इस गंदगी का कारण नगर निगम का निकम्मापन है। कोई सफ़ाई कर्मचारी इधर आता ही नहीं।
पहला : भाई साहब! इसका एक कारण लोगों का सफ़ाई के प्रति जागरूक न होना भी है।
दूसरा : हाँ, आप ठीक कहते हैं। लोग कूड़ा कूड़ेदान में न डालकर सड़क पर फेंक देते हैं।
पहला : ठीक कहते हैं, हमें अपने-आस-पड़ोस, गली-मुहल्ले की सफ़ाई स्वयं भी करनी चाहिए।

32. विद्यालय की ओर से पिकनिक पर गए दो छात्रों के मध्य संवाद।

अमित : सुमित! पिकनिक पर आकर कैसा लग रहा है?
सुमित : बहुत आनंद आ रहा है ऐसा लग रहा है, जैसे कोई पंछी पिंजरे से आज़ाद हो गया हो।
अमित : हाँ, तुम ठीक कहते हो। यद्यपि शिक्षक हमारे साथ हैं, लेकिन स्कूल जैसी कोई टोका-टाकी नहीं है।
सुमित : सब बच्चे मस्ती में अपनी इच्छा से खेल-खा रहे हैं।
अमित : स्कूल ने पिकनिक की जगह भी अच्छी चुनी है–हस्तिनापुर।
सुमित : हाँ, पिकनिक भी मनेगी और पौराणिक किले के अवशेष भी देखेंगे, यानी एक पंथ दो काज।
अमित : सुमित! चलो पेड़ की छाया में बैठकर भोजन कर लेते हैं। मैं पनीर के पकौड़े और चटनी लाया हूँ।
सुमित : और मैं मूँग की दाल का हलवा लाया हूँ।
अमित : भाई वाह! नमकीन भी है, और स्वीट डिश भी।
सुमित : तो चलो, लेते हैं पिकनिक का असली मज़ा।

33. पिता और पुत्र के मध्य 'समय के महत्त्व' को लेकर हुई चर्चा संवाद के रूप में लिखिए।

पिता : बेटा! तुमने अपना ग्रीष्मावकाश का कार्य कर लिया?
पुत्र : कर लूँगा पिताजी, अभी तो छुट्टियाँ बाकी हैं।
पिता : अरे बेटा! आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।
पुत्र : इससे क्या होता है, पिताजी?
पिता : इससे समय नष्ट होता है, जबकि समय बहुत मूल्यवान होता है।
पुत्र : पिताजी, समय तो अपना ही है, उसका नष्ट क्या होना?
पिता : नहीं बेटा! बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता, इसलिए हमें सदैव समय का सदुपयोग करना चाहिए।
पुत्र : समय के सदुपयोग का क्या लाभ है? पिताजी!
पिता : समय का सदुपयोग करने वाला जीवन में सफल, सुखी और समृद्ध बनता है, इसलिए समय का महत्त्व समझना चाहिए।
पुत्र : ठीक है, पिताजी! मैं समय का महत्त्व समझ गया हूँ और अभी से अपना कार्य पूरा करना प्रारंभ करता हूँ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

34. **अध्यापक और छात्र के मध्य विषयों के चुनाव को लेकर संवाद।**

अध्यापक : गौरव, क्या तुमने ग्यारहवीं के लिए विषयों का चुनाव कर लिया है?

छात्र : सर! चुनाव क्या करना, जो विषय मेरा मित्र लेगा, वहीं मैं भी ले लूँगा

अध्यापक : अरे बेटा! विषयों का चुनाव तो जीवन-लक्ष्य के अनुसार होता है।

छात्र : मेरे जीवन का लक्ष्य तो डॉक्टर बनना है, सर!

अध्यापक : तो तुम्हें रसायन और भौतिक विज्ञान के साथ जीव-विज्ञान विषय चुनना होंगे।

छात्र : सर! मेरा मित्र इंजीनियर बनना चाहता है, उसे कौन-से विषय चुनने होंगें?

अध्यापक : उसे भौतिक और रसायन विज्ञान के साथ गणित विषय लेने होंगे।

छात्र : विषयों का चुनाव तो बहुत महत्त्वपूर्ण है, सर।

अध्यापक : हाँ बेटा! विषयों का चुनाव बहुत सोच-समझकर करना चाहिए।

छात्र : सर! इस मार्गदर्शन के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

35. **'नारी को सम्मान' देने के विषय पर माता और पुत्र के मध्य संवाद।**

पुत्र : माँ! बस, ट्रेन आदि में महिलाओं के लिए सीटें सुरक्षित क्यों होती हैं?

माँ : यह सब नारी को सम्मान देने के लिए है।

पुत्र : माँ! नारी का सम्मान क्यों आवश्यक है?

माँ : बेटा! जिस समाज में नारी का सम्मान होता है, वह सदैव सुखी और समृद्ध होता है।

पुत्र : नारी को सम्मान देने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

माँ : नारी के साथ शिष्टता एवं सभ्यतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

पुत्र : माँ! पुरुषों का नारी के प्रति क्या दायित्व है?

माँ : नारी के मान-सम्मान की रक्षा करना प्रत्येक पुरुष का दायित्व है।

पुत्र : माँ! मैं आपको वचन देता हूँ कि नारी के प्रति इस दायित्व का सदा निर्वहन करूँगा।

36. **सीमा पर तैनात दो सैनिकों के मध्य संवाद।**

पहला : सीमा के पार कुछ संदिग्ध गतिविधियाँ दिखाई दे रही हैं।

दूसरा : हमें सावधान हो जाना चाहिए।

पहला : हाँ, और अपने साथियों को भी सावधान कर देना चाहिए।

दूसरा : लगता है कुछ आतंकवादी हमारी सीमा में घुसपैठ करना चाहते हैं।

पहला : दो दिन से पाकिस्तान की ओर से गोलीबारी हो रही है।

दूसरा : वह गोलीबारी की आड़ में आतंकवादियों की घुसपैठ कराना चाहता है।

पहला : हाँ, लेकिन हम उसकी इस नापाक कोशिश को पूरा नहीं होने देंगें।

दूसरा : चलो, हम मोर्चा सँभालते हैं।

37. **देश के गौरवशाली अतीत पर प्रकाश डालते हुए दादा तथा पोते के मध्य संवाद लिखिए।**

पोता : दादा जी! हमारे देश को 'जगद्गुरु' क्यों कहा जाता है?

दादा : बेटा! अतीत में हमारे देश ने ही संसार को ज्ञान-विज्ञान दिया था।

पोता : और सोने की चिड़िया' क्यों कहा जाता है?

दादा : प्राचीनकाल में हमारा देश बहुत समृद्ध था। सारी दुनिया के लोग यहाँ व्यापार करने आते थे।

पोता : हमारे गौरवशाली अतीत के और कौन-कौन-से उदाहरण हैं?

दादा : हमारे ऋषि-मुनि और उनके द्वारा लिखे गए ग्रंथ भी हमारे अतीत का गौरव हैं।

पोता : हमारे देश को किन महापुरुषों ने गौरव प्रदान किया?

दादा : राम, कृष्ण, गौतम, महावीर, गांधी आदि महापुरुषों ने हमारे देश को गौरवशाली बनाया है।

38. **'जल-संरक्षण' पिता तथा पुत्र के मध्य संवाद।**

पुत्र : पिताजी! 'जल-संरक्षण' क्या है?

पिता : बेटा! 'जल-संरक्षण' का अर्थ है–जल को बचाकर रखना।

पुत्र : जल का संरक्षण क्यों आवश्यक है?

पिता : बेटा! जल ही जीवन है।

पुत्र : पिताजी! जल को जीवन क्यों कहा गया है?

पिता : बेटा! हम भोजन के बिना तो कुछ दिन रह सकते हैं, लेकिन जल के बिना एक दिन भी नहीं रह सकते।

पुत्र : पिताजी! जल-संरक्षण कैसे किया जा सकता है?

पिता : इसका सबसे अच्छा तरीका है–अधिक-से-अधिक तालाब बनाना, जिनमें वर्षा का जल-संचय किया जाए।

पुत्र : और दूसरे उपाय क्या हैं, पिताजी?

पिता : नदियों के जल को दूषित न करना, रेन वाटर हारवेस्टिंग अपनाना, जल का अपव्यय रोकना आदि जल-संरक्षण के अन्य उपाय हैं।

पुत्र : ठीक है पिताजी, मैं आज से ही जल-संरक्षण का संकल्प लेता हूँ।

39. **वेतन-वृद्धि को लेकर नौकरानी और मालकिन के मध्य संवाद।**

मालकिन : अरी तारा! यह मिठाई का डिब्बा ले जाना।

नौकरानी : मालकिन! यह मिठाई किस खुशी में बाँट रही हो?

मालकिन : अरी! बाबू जी की कंपनी में सातवाँ वेतन आयोग लागू हो गया है।

नौकरानी : मालकिन! मेरा वेतन आयोग कब लागू होगा?

मालकिन : क्या कह रही है? अभी दो महीने पले ही तो तेरे सौ रुपये बढ़ाए थे।

नौकरानी : मालकिन, सौ रुपये में क्या होता है! बाबू जी के तो हज़ारों रुपये बढ़े होंगे।

मालकिन : अरी! बाबू जी को तो इसके लिए संघर्ष करना पड़ा, भूख-हड़ताल करनी पड़ी, तब कंपनी ने वेतन बढ़ाया है।

नौकरानी : तो ठीक है, आज से मैं भी भूख-हड़ताल पर रहूँगी। न खाना बनाऊँगी और न खाऊँगी।

मालकिन : अरी! क्या कह रही है? खाना नहीं बनाएगी! तो क्या हम सब भूखे रहेंगे?

नौकरानी : वेतन नहीं बढ़ेगा तो हड़ताल भी नहीं टूटेगी।

मालकिन : अच्छा, चल खाना बना। तेरी माँग पर विचार किया जाएगा।

40. **कक्षा में अनुपस्थित रहने वाले छात्र तथा अध्यापक के मध्य संवाद।**

अध्यापक : मोहन! तुम कल क्यों नहीं आए थे?

छात्र : सर! मैं कल एक विवाहोत्सव में गया था।

अध्यापक : लेकिन तुम पहले भी कई बार अनुपस्थित रहे हो।

छात्र : सर! मेरे माता-पिता मुझे अपने साथ ले जाते रहते हैं।

अध्यापक : क्या तुम जानते हो विद्यालय से अनुपस्थित रहने का कितना नुकसान है? इससे छात्र पढ़ाई में पिछड़ जाता है और अधिक अनुपस्थित रहने पर परीक्षा में बैठने से रोका जा सकता है।

छात्र : इन सब बातों का तो सर मुझे पता नहीं था। अब मैं कभी अनुपस्थिति नहीं रहूँगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

41. **फ़ैशन से बचने की सलाह देते हुए अग्रजा तथा अनुजा के मध्य संवाद।**

अग्रजा : सौम्या! मैं देख रही हूँ तुम आजकल सजने-सँवरने में ही लगी रहती हो।
अनुजा : दीदी! क्या अपने आपको ठीक-ठाक रखना गलत है?
अग्रजा : नहीं, लेकिन फ़ैशन का उन्माद गलत है।
अनुजा : दीदी! क्या मुझे फ़ैशन का उन्माद है?
अग्रजा : हाँ, तुम पढ़ाई से अधिक समय फ़ैशन में लगाती हो। क्या ऐसे तुम अपना आई०पी०एस० बनने का सपना पूरा कर सकती हो।
अनुजा : तो मुझे क्या करना चाहिए?
अग्रजा : तुम एक छात्रा हो, तुम्हें 'सादा जीवन उच्च विचार' के आदर्श को अपनाना चाहिए।
अनुजा : दीदी! क्या इस बार परीक्षा में मेरे कम अंक आने का कारण यही है?
अग्रजा : हाँ अनुजा, इतना ही नहीं, इस फ़ैशन के कारण तुम्हारा दैनिक खर्च भी बढ़ गया है।
अनुजा : दीदी! मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि आज से ही फ़ैशन छोड़कर अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर लगाऊँगी।

42. **यातायात के नियमों का पालन करने की सीख देते हुए सिपाही तथा वाहन चालक के मध्य संवाद।**

सिपाही : रुकिए, आप लाल बत्ती को अनदेखा कर चले आ रहे हैं।
वाहनचालक : सॉरी भाई साहब! मैंने लाल बत्ती पर ध्यान नहीं दिया।
सिपाही : आपने हैलमेट भी नहीं लगाया है।
वाहनचालक : जी, मैं जल्दी में हैलमेट लगाना ही भूल गया।
सिपाही : लगता है यातायात के नियमों के पालन में आपकी रुचि नहीं है।
वाहनचालक : भाई साहब! ऐसे बात नहीं है, कभी-कभी लापरवाही हो जाती है।
सिपाही : यातायात के नियमों के प्रति छोटी-सी भी लापरवाही जानलेवा हो सकती है।
वाहनचालक : क्षमा चाहता हूँ भाई साहब! भविष्य में ध्यान रखूँगा।
सिपाही : यातायात के नियमानुसार तो आपका चालान कटना चाहिए, लेकिन मैं आपको चेतावनी देकर छोड़ रहा हूँ।
वाहनचालक : धन्यवाद, भाई साहब!

43. **कक्षा में आए नए छात्र से मित्रता करने हेतु संवाद।**

पहला छात्र : लगता है तुम इस कक्षा में नए आए हो?
दूसरा छात्र : हाँ, मेरा प्रवेश आज ही हुआ है।
पहला छात्र : तुम्हारा क्या नाम है?
दूसरा छात्र : मेरा नाम गौरव सैनी है।
पहला छात्र : इससे पहले तुम किस स्कूल में पढ़ते थे?
दूसरा छात्र : इससे पहले मैं क० ख० ग० विद्यालय में पढ़ता था।
पहला छात्र : कक्षा में आपका कोई मित्र बना है?
दूसरा छात्र : नहीं, अभी यहाँ कोई मेरा मित्र नहीं है।
पहला छात्र : तो आज से मैं तुम्हारा मित्र हूँ। तुम्हें यदि किसी चीज़ की आवश्यकता हो तो मुझे बताना। मेरा नाम मयंक है।
दूसरा छात्र : धन्यवाद, आप जैसा मित्र पाकर मुझे बहुत खुशी हुई।
पहला छात्र : हमारी यह मित्रता हमेशा बनी रहेगी।

44. **दिल्ली में लागू चार पहिया वाहनों की सम-विषम योजना पर दो पड़ोसियों के मध्य संवाद।**

पहला : अरे भाई, क्या आपने सुना है कि दिल्ली में चारपहिया वाहनों के लिए सम-विषम योजना लागू हो गई है?
दूसरा : हाँ, मैंने भी सुना तो है।
पहला : इसका क्या फायदा होगा?
दूसरा : इसका एक लाभ तो यह होगा कि सड़कों पर वाहनों की संख्या कम होने से ट्रैफिक जाम से राहत मिलेगी।
पहला : इसके अलावा और क्या फ़ायदा होगा?
दूसरा : इससे दूसरा लाभ यह है कि प्रदूषण कम हो जाएगा।
पहला : लेकिन इससे लोगों को जो परेशानी होगी, उसका क्या होगा?
दूसरा : परेशानी का कुछ समाधान तो लोग अपनी समझदारी से कर सकते हैं।
पहला : कैसी समझदारी?
दूसरा : दोपहिया वाहन का प्रयोग करके, मैट्रो का प्रयोग करके और कार पूलिंग करके।
पहला : हम दोनों पड़ोसियों की समस्या का समाधान तो बस हो गया समझो क्योंकि मेरी गाड़ी का नंबर सम है और तुम्हारी गाड़ी का विषम।
दूसरा : यानी कल से हमारी कार पूलिंग प्रारंभ।

45. **कम सामान तौलने वाले दुकानदार तथा ग्राहक के मध्य संवाद।**

ग्राहक : भाई! दो किलो चावल देना।
दुकानदार : लीजिए, भाई साहब और बताइए, क्या दूँ?
ग्राहक : अरे भाई चावल दो किलो से कुछ कम-से लग रहे हैं।
दुकानदार : भाई साहब! आपके सामने ही तो तौले हैं।
ग्राहक : मैं आपकी तराजू चैक करना चाहता हूँ।
दुकानदार : भाई साहब! आपको सामान नहीं लेना तो कोई बात नहीं । आप मेरा समय बरबाद मत करो।
ग्राहक : अब मुझे विश्वास हो गया कि आप कम सामान तौल रहे हैं। मैं अभी उपभोक्ता फोरम में आपकी शिकायत करता हूँ।
दुकानदार : भाई साहब! मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ ऐसा मत करो।
ग्राहक : तो आप मानते हैं कि आप कम तौल रहे थे।
दुकानदार : हाँ, मैं अपने इस कृत्य के लिए शर्मिंदा हूँ और आपसे क्षमा माँगता हूँ। मैं भविष्य में ऐसा नहीं करूँगा।
ग्राहक : ठीक है, आगे यह भ्रष्टाचार न करना। चलो, चावल पूरे तौलकर दो।

46. **साक्षात्कार देने आए दो युवकों के मध्य संवाद।**

पहला : आप यहाँ साक्षात्कार देने आए हैं?
दूसरा : हाँ, मैं लिपिक पद के लिए साक्षात्कार देने आया हूँ।
पहला : पदों की संख्या पाँच है, लेकिन अभ्यार्थी लगभग दो सौ हैं।
दूसरा : यही तो हमारे देश में फैली बेरोज़गारी का हाल है।
पहला : आपको देखकर लगता है आपको इस कार्य का काफी अनुभव है।
दूसरा : हाँ, मुझे लिपिक पद पर कार्य करने का पाँच वर्ष का अनुभव है।
पहला : फिर तो आपका चयन निश्चित है। मैं तो पहली बार साक्षात्कार देने आया हूँ, डर-सा लग रहा है।
दूसरा : इसमें घबराने की कोई बात नहीं। आप आत्मविश्वास रखो। मुझे आप बहुत योग्य लग रहे हैं।
पहला : सुना है, यहाँ निष्पक्ष चयन होता है।
दूसरा : हाँ, आपने सही सुना है। अगला नंबर आपका है, मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं!
पहला : धन्यवाद भाई साहब!

47. **रेल यात्रा कर रहे दो यात्रियों के मध्य संवाद।**

पहला यात्री : आप कहाँ तक जा रहे हैं?
दूसरा यात्री : मैं मुंबई जा रहा हूँ।
पहला यात्री : मैं भी मुंबई जा रहा हूँ।
दूसरा यात्री : अरे वाह! फिर तो हम दोनों हमसफ़र हैं।
पहला यात्री : क्या आप पहली बार मुंबई जा रहे हैं?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दूसरा यात्री : नहीं, मैं व्यापार के सिलसिले में मुंबई आता-जाता रहता हूँ।
पहला यात्री : भाई साहब! फिर तो आप मुझे मार्गदर्शक के रूप में मिल गए हैं।
दूसरा यात्री : हाँ-हाँ, आपको मुंबई के विषय में जो पूछना है, पूछ लेना।
पहला यात्री : मुझे तो रेल का सफ़र हवाई जहाज़ के सफ़र से भी अच्छा लगता है।
दूसरा यात्री : हाँ! मेरा भी यही मानना है और यदि कोई अच्छा हमसफ़र मिल जाए तो फिर कहना ही क्या है।

48. संतुलित आहार के महत्त्व पर माँ-बेटे के मध्य संवाद।

माँ : बेटा कपिल! खाना खा लो, मैंने तुम्हारे लिए बहुत-सी चीज़ें बनाई हैं।
बेटा : माँ, मुझे तो केवल आलू की मसालेदार सब्ज़ी और परौंठे पसंद हैं।
माँ : बेटा, हमें संतुलित आहार लेना चाहिए अन्यथा स्वास्थ्य खराब हो जाता है।
बेटा : माँ, संतुलित आहार कैसा होता है?
माँ : बेटा, संतुलित आहार में सभी पोषक तत्त्व होते हैं; जैसे– कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिंस आदि।
बेटा : उसके लिए हमें भोजन में क्या-क्या चीज़ें लेनी चाहिए?
माँ : इसके लिए हमारे भोजन में अनाज, चावल, दालें, हरी सब्ज़ियाँ, सलाद, दूध, दही, घी, अंडा आदि चीज़ें सम्मिलित होनी चाहिए।
बेटा : माँ, क्या फल खाने भी आवश्यक हैं?
माँ : हाँ बेटा, प्रतिदिन फल भी खाना आवश्यक है।
बेटा : माँ, संतुलित आहार न लेने से क्या हानि होती है?
माँ : संतुलित आहार न लेने से हमारे शरीर में अनेक तत्त्वों की कमी हो जाती है और हम अनेक रोगों के शिकार हो जाते हैं।
बेटा : यदि ऐसा है तो अब से मैं प्रतिदिन संतुलित आहार ही लूँगा।

49. स्टार्ट अप इंडिया योजना से प्रभावित दो युवक के मध्य संवाद।

कमल : अरे विमल! यह स्टार्ट अप इंडिया योजना किसने चलाई है?
विमल : यह हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की योजना है।
कमल : यह योजना किसके लिए है?
विमल : यह योजना देश में बेरोज़गार युवकों के लिए है।
कमल : इसमें बेरोज़गार युवकों की भलाई के लिए क्या है?
विमल : कमल, तुम तो जानते ही हो कि भारतीय युवकों के पास प्रतिभा और नए-नए आइडिया हैं।
कमल : हाँ, इसीलिए तो पश्चिमी देश भारतीय युवकों को अपने यहाँ रोज़गार देने के लिए लालायित रहते हैं।
विमल : इस योजना के अंतर्गत सरकार युवकों से अपना उद्योग लगाने की योजनाएँ आमंत्रित करती हैं।
कमल : इससे युवकों को क्या लाभ है?
विमल : जिन युवकों की योजनाएँ सरकार को पसंद आ जाती हैं, उनको साकार करने के लिए सरकार आर्थिक सहायता देती है।
कमल : यह तो बहुत अच्छी योजना है
विमल : हाँ, यानी योजना हमारी और साकार करे सरकार।

50. 'अतुल्य भारत' पर दो मित्रों के मध्य संवाद।

कार्तिक : अरे अतुल यह अतुल्य भारत क्या है?
अतुल : यह भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन विभाग की एक योजना है।
कार्तिक : इसका नाम अतुल्य भारत क्यों रखा?
अतुल : संसार में भारत एक ऐसा देश है, जहाँ की सभ्यता, संस्कृति, प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक विरासत अद्भुत हैं। विदेशियों के लिए अतुलनीय हैं। इसलिए विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने वाली इस योजना का नाम अतुल्य भारत रखा है।
कार्तिक : तो पर्यटकों को इन सबकी जानकारी देने के लिए यह योजना चलाई गई है।
अतुल : हाँ, भारत के भव्य मंदिर, पर्वतीय स्थल, ऐतिहासिक भवन और प्राकृतिक दृश्य अतुल्य हैं।
कार्तिक : हमारे देश की और क्या-क्या चीज़ें पर्यटकों को लुभाती हैं।
अतुल : यहाँ के स्वादिष्ट व्यंजन, वेशभूषाएँ, संगीत, नृत्य और कलाएँ विदेशियों को आकर्षित करती हैं।
कार्तिक : अतुल, मैंने देखा है कि विदेशी पर्यटक हमारे आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान में भी बहुत रुचि रखते हैं।
अतुल : हाँ, यह सत्य है। हमारा भारत वास्तव में दुनिया में अतुल्य है, जो यहाँ है, वह कहीं नहीं है।

51. जीवन में हार न मानने का संकल्प लेते हुए दो नेत्रहीन छात्रों के मध्य संवाद।

केशव : राघव, ईश्वर ने हमारे साथ बहुत अन्याय किया है।
राघव : मगर, तुम ईश्वर को दोष क्यों दे रहे हो?
केशव : ईश्वर ने ही तो नेत्रहीन बनाकर हमारे जीवन को अंधकार से भर दिया है।
राघव : अंधकारमय तो उनका जीवन होता है, जो आत्मविश्वास खो देते हैं।
केशव : लेकिन हम नेत्रहीन जीवन में कर भी क्या सकते हैं?
राघव : केशव, संसार में हज़ारों ऐसे दिव्यांग व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने ऐसे कार्य किए हैं, जिन्हें एक पूर्ण स्वस्थ व्यक्ति भी नहीं कर सकता।
केशव : यह तुम कह रहे हो?
राघव : मैं ठीक कह रहा हूँ। स्टीफिन हॉकिंग–वैज्ञानिक, हेलिन कैलर–दार्शनिक, रवींद्र जैन–संगीतकार, अरुणिमा सिंह – पर्वतारोही, इरा सिंघल–आई०ए०एस० ये सब दिव्यांग हैं।
केशव : तुम्हारी बातों से तो मेरा आत्मविश्वास बढ़ रहा है।
राघव : हम नेत्रहीनों के लिए ब्रेल लिपि का आविष्कार करने वाले लुइस ब्रेल भी तो नेत्रहीन ही थे।
केशव : राघव, तुम्हारी बातों से मेरा आत्मविश्वास इतना बढ़ गया है कि अब मैं जीवन में कभी हार नहीं मानूँगा।

52. लड़का-लड़की एक समान विषय पर दो महिलाओं के मध्य संवाद।

कमला : विमला बहन! लड़की के जन्म की बहुत-बहुत बधाई।
विमला : कैसी बधाई बहन! लड़का थोड़े ही हुआ है, लड़की हुई है।
कमला : ऐसा क्यों सोचती हो, बहन? आज तो लड़का-लड़की एक समान हैं।
विमला : भला, लड़का-लड़की एकसमान कैसे हो सकते हैं?
कमला : क्यों नहीं हो सकते! लड़कियाँ आज किसी भी काम में लड़कों से पीछे हैं?
विमला : पीछे तो नहीं हैं, मगर वंश का नाम तो बेटे से ही चलता है।
कमला : क्या आज इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, किरण बेदी, कल्पना चावला, बछेंद्री पाल आदि के नाम से उनका वंश नहीं चल रहा?
विमला : ये सब बड़े घर की बेटियाँ हैं?
कमला : सानिया नेहवाल, गीता, बबीता, साक्षी मलिक, पी०वी० सिंधु, मेरी कॉम आदि साधारण घरों की ही बेटियाँ हैं। क्या उन्होंने अपने वंश का नाम रोशन नहीं किया?
विमला : हाँ, तुम कहती तो ठीक हो बहन!

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कमला : तुम्हारी बेटी भी एक दिन तुम्हारा नाम रोशन करेगी इसलिए इसके जन्म की खुशी मनाओ।

विमला : सच तो आज! तुमने मेरी आँखें खोल दीं। मैं अपनी बेटी को आज से बेटा ही मानूँगी।

53. **भारतीय सैनिकों की वीरता पर दो युवकों के मध्य संवाद।**

मोहन : मित्र, हमारे भारतीय सैनिक अपनी वीरता के लिए दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

रवि : इसका कारण हमारे सैनिकों की कर्तव्यनिष्ठा और देशप्रेम है।

मोहन : हाँ, हमारे सैनिक देश के लिए प्राण न्योछावर करने में एक पल की भी देरी नहीं लगाते।

रवि : वे न केवल सीमाओं की रक्षा करते हैं, वरन् आँधी, तूफ़ान, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं में भी देश के नागरिकों की रक्षा करते हैं।

मोहन : हमारे वीर सैनिकों ने कई युद्धों में अपने पराक्रम को दिखाया है।

रवि : भारतीय सैनिकों की वीरगाथाओं से इतिहास भरा पड़ा है।

मोहन : हमें अपने भारतीय सैनिकों पर बहुत गर्व है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद-लेखन कीजिए–*

1. **देशप्रेम**

   संकेत-बिंदु– • जन्मभूमि की महिमा • जन्मभूमि का परोपकारी रूप • देशप्रेम और त्याग की भावना • देश के प्रति कर्तव्य।

2. **सफलता का मूलमंत्र : परिश्रम**

   संकेत-बिंदु– • मानव-जीवन में श्रम का महत्त्व • सारी सृष्टि कर्मरत •ईश्वर की सच्ची उपासना • कर्म बिना कुछ नहीं।

3. **स्वच्छ भारत अभियान**

   संकेत-बिंदु– • अभियान की अवधारणा • अभियान की शुरुआत •अभियान के कार्य • अभियान की प्रक्रिया और उद्देश्य।

निर्देश–*दिए गए विषयों पर लगभग 100 शब्दों में पत्र-लेखन कीजिए।*

4. **विद्यालय के वार्षिकोत्सव में माता-पिता को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।**
5. **साक्षरता अभियान में अपनी सक्रिय भागीदारी के विषय में बताते हुए पिता जी को पत्र लिखिए।**

निर्देश–*दिए गए चित्रों को ध्यान से देखकर लगभग 100 शब्दों में वर्णन कीजिए–*

6. **चित्र-1**

7. **चित्र-2**

निर्देश–*दिए गए विषयों पर लगभग 100 शब्दों में संवाद-लेखन कीजिए।*

8. बदलती हुई शिक्षण-पद्धति पर विचार व्यक्त करने हेतु दो अध्यापकों के मध्य संवाद।
9. 'साक्षरता मिशन' पर जागरूकता फैलाने हेतु दो मित्रों के मध्य संवाद।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in